राष्ट्रीय संस्करण
CopyRight - Jagran.com

चीन पर अंकुश के लिए एशिया में तैनात होंगी अमेरिकी मिसाइलें : एस्पर

>> 11

दैनिक जागरण

वर्ष 3 अंक 55

मूल्य ₹6.00, नई दिल्ली, रविवार, 4 अगस्त 2019

www.jagran.com

पृष्ठ 14

सरोकार

मुफलिसी की दीवार तोड़ बनाया समृद्धि का रास्ता

हरदोई : उत्तर प्रदेश में हरदोई के एक गांव के भूमिहीन और कम जोत वाले परिवार की महिलाओं ने मुफलिसी की दीवारों को तोड़कर समृद्धि का रास्ता बना डाला।

आज ये महिलाएं ट्रैक्टर-ट्रॉली, रोटावेटर कल्टीवेटर, हैरो, स्प्रेयर, थ्रेशर, पंपसेट आदि की मालकिन हैं। (पेज-13)

रविवार विशेष

अब हवा की नमी से भी पैदा हो सकेगा पानी

अल्मोड़ा : राष्ट्रीय हिमालयी अध्ययन मिशन की परियोजना के तहत आइआइटी मंडी के वैज्ञानिकों ने हवा से पानी तैयार करने की तकनीक विकसित की है।

इससे आठ से दस घंटों में करीब छह लीटर पानी एकत्र किया जा सकेगा। (पेज-13)

न्यूज गैलरी

राज-नीति ▶ पृष्ठ 3

विचारधारा के बल पर यहां तक पहुंची है भाजपा : मोदी

नई दिल्ली : भाजपा सांसदों को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने साफ किया कि पार्टी किसी परिवार के बल पर नहीं, बल्कि विचारधारा के बल पर इस मुकाम तक पहुंची है। सांसदों को कार्यकर्ताओं के लगातार संपर्क में रहने की सलाह देते हुए उन्होंने कहा कि उनकी बदौलत ही वे यहां तक पहुंच पाए हैं। अभ्यास वर्ग में मोदी, पार्टी अध्यक्ष व गृहमंत्री अमित शाह, कार्यकारी अध्यक्ष जेपी नड्डा समेत भाजपा के सभी वरिष्ठ नेता मौजूद थे।

नेशनल न्यूज ▶ पृष्ठ 5

अगस्त में चौतरफा अच्छी बारिश के आसार

नई दिल्ली : मानसून पूरे देश पर छा गया है, लेकिन कहीं भारी तो कहीं हल्की बारिश हो रही है। हालांकि देश का कुछ हिस्सा अभी भी सूखे जैसी स्थिति से जूझ रहा है, जिससे कुछ चिंताएं बढ़ी हैं। बारिश में कमी के चलते खरीफ सीजन की फसलों की बोआई प्रभावित हुई है। इससे खेती की रफ्तार पिछले साल के मुकाबले पीछे चल रही है। भारतीय मौसम विभाग के वैज्ञानिकों ने अगस्त माह में अच्छी बारिश का अनुमान लगाया है।

बिजनेस ▶ पृष्ठ 10

अर्थव्यवस्था में मंदी के खिलाफ हथियार बनेगा सस्ता कर्ज

नई दिल्ली : दुनियाभर के देश सुस्ती से लड़ने के लिए सस्ते कर्ज का हथियार आजमाते हैं। भारत भी इस हथियार को आजमाने में ज्यादा चुस्ती दिखाने जा रहा है। अगले हफ्ते सोमवार को वित्त मंत्री निर्मला सीमारमण की बैंक प्रमुखों के साथ होने वाली बैठक और उसके बाद बुधवार को भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआइ) की तरफ से मौद्रिक नीति समीक्षा की बैठक में ब्याज दर को घटाना एक अहम मुद्दा रहेगा। उम्मीद है कि सरकार इसके जरिये राहत देने की कोशिश करेगी।

कैरिबियाई चुनौती

टी-20 सीरीज

वेस्टइंडीज vs भारत

रात 8:00 बजे से

स्थान : लॉडरहिल, अमेरिका

प्रसारण : सोनी नेटवर्क

पूरे देश में एनआरसी की तैयारी, डाटाबेस के लिए हर बाशिंदे की होगी पहचान

नई दिल्ली, प्रेट्र : सरकार ने राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (एनआरसी) को देशभर में लागू करने से पहले उसका आधार तैयार करने के लिए सितंबर, 2020 तक राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर (एनपीआर) तैयार करने का फैसला किया है। भारत के प्रत्येक निवासी को एनपीआर में पंजीकरण कराना अनिवार्य होगा। इस कवायद का मकसद देश में रहने वाले हर सामान्य निवासी की पहचान का व्यापक डाटाबेस तैयार करना है। इस डाटाबेस में जनसांख्यिकी के साथ-साथ बायोमीट्रिक जानकारियां भी होंगी।

एक अधिकारी ने बताया कि एनपीआर देश के सामान्य निवासियों की एक सूची होगी। एक बार जब एनपीआर तैयार होकर प्रकाशित हो जाएगा तो संभावना है कि यह असम एनआरसी के देशव्यापी संस्करण 'नेशनल रजिस्टर ऑफ इंडियन सिटिजंस' (एनआरआइसी) को तैयार करने का आधार बनेगा।

ये होंगे एनपीआर में शामिल : एनपीआर के लिए एक सामान्य निवासी उसे माना जाएगा जो उस स्थानीय इलाके में पिछले छह महीने या उससे अधिक समय से रह रहा हो अथवा जो उस इलाके में छह महीने या इससे अधिक समय तक रहने का इरादा रखता हो।

घर-घर जाकर जुटाई जाएंगी जानकारियां : महापंजीयक एवं जनगणना आयुक्त विवेक जोशी की ओर से जारी एक अधिसूचना के मुताबिक, 'नागरिकता (नागरिकों के पंजीयन एवं राष्ट्रीय पहचान पत्र जारी करने संबंधी) नियमावली, 2003 के नियम तीन के उपनियम चार के तहत केंद्र सरकार ने जनसंख्या रजिस्टर तैयार करने और उसे अपडेट करने का फैसला किया है।' साथ ही इसमें कहा गया है कि असम को छोड़कर देशभर में घर-घर जाकर गणना करने और सभी लोगों की जानकारियां एकत्र करने के लिए फील्ड वर्क एक अप्रैल, 2020 से 30 सितंबर 2020 तक किया जाएगा। एनपीआर को स्थानीय (ग्राम/कस्बा), अनुमंडल, जिला, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर तैयार किया जाएगा।

- सितंबर 2020 तक राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर तैयार करेगी सरकार
- प्रत्येक निवासी के लिए पंजीकरण कराना होगा अनिवार्य
- डाटाबेस में जनसांख्यिकी के साथ बायोमीट्रिक जानकारियां भी होंगी

एक अप्रैल, 2020 से शुरू होगा काम। फाइल

अभिभाषण में राष्ट्रपति ने किया था एलान : नई लोकसभा (17वीं) के गठन के बाद 20 जून को राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद के अभिभाषण में नरेंद्र मोदी सरकार के दूसरे कार्यकाल की प्राथमिकताओं का उल्लेख किए जाने के करीब महीनेभर बाद यह कदम उठाया गया है। कोविंद ने कहा था, 'मेरी सरकार ने घुसपैठ प्रभावित इलाकों में प्राथमिकता के आधार पर एनआरसी की प्रक्रिया को लागू करने का फैसला किया है।'

असम में प्रक्रिया जारी इसलिए शामिल नहीं : असम को इसमें शामिल नहीं किए जाने की वजह यह है कि वहां एनआरसी की प्रक्रिया पहले से चल रही है। मालूम हो कि असम में पिछले साल 30 जुलाई को जब एनआरसी का मसौदा प्रकाशित किया गया था तब 40.7 लाख लोगों को इससे बाहर किए जाने पर काफी विवाद हो गया था। इसके बाद इस सूची की पुष्टि करने की प्रक्रिया चल रही है।

तलाशे जा रहे 35ए में बदलाव के विकल्प

चर्चाओं के बीच ▶ अनुच्छेद 370 को भी समाप्त किए बिना हो सकता है अहम संशोधन

सोच यह कि निजी निवेश आकर्षित कर विकास की गति तेज करना होगा संभव

नीलू रंजन, नई दिल्ली

जम्मू-कश्मीर में अतिरिक्त सुरक्षा बलों की तैनाती के साथ-साथ अमरनाथ यात्रियों, पर्यटकों और बाहर के छात्रों को घाटी से निकालने की कोशिशों के बीच कई तरह की अफवाहों का बाजार गर्म है। इनमें अनुच्छेद 370 और 35ए को खत्म करने से लेकर राज्य को तीन भागों में विभाजित करने तक की बातें की जा रही हैं। कश्मीर मामलों से जुड़े वरिष्ठ अधिकारियों और विशेषज्ञों की मानें तो सरकार अनुच्छेद 370 और 35ए को निरस्त करने के बजाय उनमें जरूरी संशोधनों के साथ भी आगे बढ़ सकती है। इससे जहां कश्मीर के भीतर इन अनुच्छेदों को हटाने को लेकर हो रहे विरोध के स्वर कमजोर होंगे, वहीं इनके कारण विभिन्न वर्गों के साथ हो रहे पक्षपात को समाप्त करने और निजी निवेश को आकर्षित कर विकास की गति को तेज करने का रास्ता भी साफ हो जाएगा।

एक वरिष्ठ अधिकारी ने कश्मीर को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पिछले कुछ महीनों के भाषणों को ध्यान से देखने की सलाह देते हुए कहा कि उन्होंने 370 और 35ए की आलोचना सिर्फ इस आधार पर की है कि इसके कारण पिछले 70 साल में कश्मीर का विकास नहीं हो सका। पिछले हफ्ते अपने 'मन की बात' कार्यक्रम में भी प्रधानमंत्री ने बताया था कि किस तरह कश्मीर की आम जनता विकास और अमन चाहती है। उन्होंने कहा था, 'जो लोग विकास की राह में नफरत फैलाना चाहते हैं, वे कभी अपने नापाक इरादों में कामयाब नहीं हो सकते।'

कश्मीर पर नीति निर्धारण से जुड़े एक वरिष्ठ अधिकारी ने साफ कहा कि अनुच्छेद 370 और 35ए राजनीतिक मुद्दा तो हो सकता है, लेकिन इन्हें पूरी तरह निरस्त किए बिना भी जरूरी लक्ष्यों को हासिल किया जा सकता है। अनुच्छेद 370 निजी निवेश के रास्ते में सबसे बड़ी बाधा है। यदि इसमें संशोधन कर निवेश की इच्छुक कंपनियों और व्यक्तियों को लंबी लीज पर जमीन उपलब्ध कराने का प्रावधान कर दिया जाए तो राह आसान हो जाएगी। इसी तरह, 35ए में संशोधनों के साथ राज्य से बाहर के किसी व्यक्ति से शादी करने वाली महिला को पैतृक संपत्ति में अधिकार और पाकिस्तान से आए शरणार्थियों को नागरिकता से रोकने जैसे प्रावधानों को आसानी से बदला जा सकता है। विशेषज्ञों का भी मानना है कि अनुच्छेद 370 और 35ए को पूरी तरह निरस्त करने के बजाय इसमें संशोधनों के साथ आगे बढ़ना ज्यादा बेहतर विकल्प हो सकता है। अनुच्छेद 370 के लिए सरकार को संवैधानिक संशोधन का रास्ता चुनना होगा। जबकि 35ए में संशोधन के लिए ऐसी कोई मजबूरी नहीं होगी। यहां सुप्रीम कोर्ट में लंबित होने के बावजूद सरकार 35ए में संशोधनों के साथ आगे बढ़ सकती है और बाद में सुप्रीम कोर्ट को इन संशोधनों की जानकारी दे सकती है। 35ए की संवैधानिकता को चुनौती देने वाली जनहित याचिका सुप्रीम कोर्ट में लंबित है और अब तक इस पर सुनवाई शुरू नहीं हो पाई है।

एक वरिष्ठ अधिकारी के अनुसार, इन अनुच्छेदों को हटाने का विरोध करने वाले कश्मीरी नेता भी अब इनमें संशोधनों की बात करने लगे हैं। उन्होंने पिछले दिनों जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री फारूक अब्दुल्ला के साक्षात्कार हवाला दिया। इसमें फारूक साफ-साफ 35ए में संशोधन की जरूरत स्वीकार रहे हैं। उनकी शर्त सिर्फ इतनी है कि यह संशोधन जम्मू-कश्मीर विधानसभा से कराया जाए और उसके लिए पहले विधानसभा चुनाव हों।

जम्मू-कश्मीर में अतिरिक्त बलों की तैनाती के साथ अफवाहों के बीच अमरनाथ यात्री, पर्यटक और बाहरी छात्र घाटी छोड़ने लगे हैं। शनिवार को नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी श्रीनगर को भी अगले आदेश तक के लिए बंद कर दिया। बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं बसों से वापस लौटने लगे। एएनआइ

50 हजार पर्यटक, श्रद्धालु और कामगारों को घाटी से बाहर भेजा गया पेज>>4

कश्मीर में एलओसी पर बैट का बड़ा हमला नाकाम, सात ढेर

राज्य ब्यूरो, श्रीनगर

पाकिस्तानी सेना और आतंकियों के बैट (बॉर्डर एक्शन टीम) दस्ते ने शनिवार को उत्तरी कश्मीर के केरन (कुपवाड़ा) सेक्टर में नियंत्रण रेखा पर एक भारतीय सैन्य चौकी पर हमले का प्रयास किया, जिसे सेना ने नाकाम बना दिया। बताया जा रहा है कि भारत की जवाबी कार्रवाई में बैट के पांच से सात सदस्य मारे गए हैं। पिछले दस दिनों में इस क्षेत्र में बैट दस्ते का यह दूसरा हमला नाकाम किया गया है।

सैन्य अधिकारियों के अनुसार, केरन सेक्टर में केल कुल्लियां इलाके से पाकिस्तानी सेना के बैट दस्ते ने भारत की एक अग्रिम निगरानी चौकी पर बड़ा हमला करने के लिए नियंत्रण रेखा पार की। भारत की निगरानी चौकी में तैनात सतर्क जवानों ने बैट दस्ते को देख लिया। जैसे ही बैट दस्ता एलओसी से आगे पहुंचा, जवानों ने उसे ललकारते हुए फायरिंग शुरू कर दी। जान बचाकर भागते हुए बैट दस्ते के सदस्यों को एलओसी के पास गिरते देखा गया है। सूत्रों ने बताया कि बैट दस्ते में करीब सात सदस्य शामिल थे। शायद ही कोई सदस्य जिंदा बचा हो। दो शव एलओसी पर पाकिस्तानी सेना की सीधी फायरिंग रेंज में पड़े हैं और चार से पांच शव पाकिस्तानी इलाके में ही हैं। उन्होंने बताया कि एलओसी पर पड़े दोनों शवों को कब्जे में लेने का प्रयास किया जा रहा है। उधर, पाकिस्तानी सेना ने शनिवार देर शाम पुंछ के मेंढर व बालाकोट सेक्टर में भारी गोलाबारी की। भारतीय सेना ने इसका मुंहतोड़ जवाब दिया। शाम करीब सवा आठ बजे पाकिस्तानी सेना ने दोनों सेक्टरों में एकाएक भारी गोलाबारी शुरू कर दी। अग्रिम चौकियों के साथ रिहायशी क्षेत्रों को निशाना बनाकर मोर्टार दागना शुरू कर दिए। इससे सीमांत क्षेत्रों में दहशत फैल गई।

केरन सेक्टर में शनिवार को सेना ने पाकिस्तानी बैट के कई सदस्यों को ढेर कर दिया। नियंत्रण रेखा पर पड़े बैट सदस्यों के शव। एएनआइ

शोपियां और सोपोर में जैश के तीन आतंकी मार गिराए

श्रीनगर : आतंकवाद के खिलाफ अभियान को तेज करते हुए सुरक्षा बलों ने कश्मीर के शोपियां में शुक्रवार से जारी मुठभेड़ में जिंदा बचे दूसरे आतंकी को मार गिराया तो सोपोर में जैश-ए-मुहम्मद के दो आतंकियों को ढेर कर दिया।

छत्तीसगढ़ में पांच महिलाओं समेत सात नक्सली मारे गए

राजनांदगांव, नईदुनिया

- मारे गए नक्सलियों पर था 32 लाख रुपये का इनाम, सुरक्षा बलों ने सभी नक्सलियों के शव किए बरामद

छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव जिले में महाराष्ट्र की सीमा से सटी दो पहाड़ियों के बीच शनिवार को हुई मुठभेड़ में सात नक्सली मारे गए। इनमें पांच महिलाएं भी शामिल हैं। इन नक्सलियों पर कुल 32 लाख रुपये का इनाम घोषित था। पुलिस ने इस इलाके में सक्रिय दर्रेकसा एरिया कमेटी के शीर्ष लड़ाकों को खत्म कर देने का दावा किया है। मुठभेड़ में गातापार थाने में तैनात जवान आशाराम क्रती को भी गोली लगी है, जिन्हें डॉक्टरों ने खतरे से बाहर बताया है। उन्हें रायपुर रेफर किया गया है।

पुलिस अधिकारियों के मुताबिक शेरपार और सीतागोटा पहाड़ियों पर नक्सलियों की मौजूदगी की सूचना मिली थी। इसी के आधार पर शुक्रवार को जिला पुलिस बल, डीआरजी और सीएएफ की संयुक्त फोर्स को चार टीम में बांटकर रवाना किया गया।

निरीक्षक लक्ष्मण केंवट थाना प्रभारी गातापार के नेतृत्व में निकली चौथी टीम शनिवार सुबह आठ बजे जैसे ही सीतागोटा और शेरपार के बीच की पहाड़ियों पर पहुंची, घात लगाए नक्सलियों ने अत्याधुनिक हथियारों से जवानों पर फायरिंग शुरू कर दी। जवानों ने भी मुंहतोड़ जवाब दिया। करीब एक घंटे की फायरिंग के बाद नक्सली भाग खड़े हुए। घटनास्थल की तलाशी लेने पर सात नक्सलियों के शव और हथियार बरामद हुए हैं। आइजी हिमांशु गुप्ता ने मुठभेड़ में शामिल जवानों को 50 लाख रुपये इनाम देने की घोषणा कर बधाई दी है। मारे गए नक्सलियों के पास से पुलिस ने भारी मात्रा में हथियार बरामद किए हैं।

बड़ी वारदात को अंजाम देने की कर रहे थे तैयारी

28 जुलाई से नक्सलियों का शहीदी सप्ताह चल रहा है। इसमें उन्हें काफी नुकसान उठाना पड़ा है। इसलिए करीब दस नक्सली घटनास्थल पर बड़ी वारदात को अंजाम देने के लिए टेंट लगाकर बैठक ले रहे थे। यह वही इलाका है, जिसे नक्सलियों ने ग्रीन कॉरिडोर बना रखा है। यहीं से गोंदिया, महाराष्ट्र, कवर्धा और राजनांदगांव जिले में नक्सलियों की आवाजाही होती है।

आरोपित विधायक सेंगर और उसके भाई से घंटों पूछताछ

राज्य ब्यूरो, लखनऊ : उत्तर प्रदेश के उन्नाव (माखी) दुष्कर्म कांड की पीड़िता के साथ हुई सड़क दुर्घटना के मामले की जांच सीबीआइ की टीम ने शनिवार को और तेज कर दी। जांच एजेंसी ने चार जिलों में दिनभर छानबीन की। सीतापुर जेल में बंद भाजपा विधायक कुलदीप सिंह सेंगर से टीम ने छह घंटे तक पूछताछ की। सीबीआइ के कई सवालों पर सेंगर चुप्पी साधे रहे। लखनऊ जेल में बंद सेंगर के भाई अतुल सिंह से भी लंबी पूछताछ हुई। एक टीम ट्रामा सेंटर भी गई। उधर, फोरेंसिक टीम ने घटनास्थल पर पहुंचकर फिर साक्ष्य जुटाए।

सीबीआइ की एक टीम दोपहर करीब 1:50 बजे सीतापुर जेल पहुंची और विधायक सेंगर से छह घंटे तक पूछताछ की। विधायक से सवाल-जवाब के दौरान सीबीआइ ने यह जानने का प्रयास किया कि उससे मिलने जेल में कौन-कौन लोग आते रहे हैं। उन्नाव पुलिस के निरीक्षक सुभाष चंद्र मिश्रा, माखी थाने के ड्यूटी मुंशी इरशाद खान, पीड़िता की सुरक्षा में लापरवाही के मामले में निलंबित गनर सुदेश कुमार, महिला सिपाही रूबी व सुनीता देवी समेत छह पुलिसकर्मियों से पूछताछ की गई। अब तक सामने आए तथ्यों का सीबीआइ सिलसिलेवार परीक्षण कर रही है। (पेज-5 भी देखें)

पंजाब में परिवार के पांच लोगों की हत्या के बाद की खुदकशी

जागरण संवाददाता, मोगा

- शादी के दबाव और शाप के डर से दिया वारदात को अंजाम

पंजाब के मोगा जिले के गांव नत्थूवाला गरबी में शुक्रवार रात 25 वर्षीय युवक ने शादी के दबाव और शाप के डर से परिवार के छह सदस्यों को सोते हुए गोलियों से भून डाला और खुद को गोली मार ली। दहला देने वाली इस घटना में युवक संदीप सिंह के माता, पिता, बहन और तीन वर्ष की भांजी समेत पांच की मौके पर मौत हो गई। 80 वर्षीय दादा गुरचरन सिंह की हालत गंभीर है। परिवार में अब वही अकेले सदस्य बचे हैं।

एसपी इनवेस्टिगेशन परमार ने बताया कि वारदात में प्रयुक्त .32 बोर की रिवॉल्वर और सुसाइड नोट वाली डायरी पुलिस ने कब्जे में ले ली है। सुसाइड नोट में संदीप ने लिखा है कि वह मामा के घर (फरीदकोट के अराइयां वाला) से रिवॉल्वर चोरी करके लाया था। पुलिस के मुताबिक संदीप ने सबसे पहले अपनी मां बिंदर कौर (58), पिता मंजीत सिंह (60), दादी गुरदीप कौर (80) व दादा गुरचरन सिंह पर गोलियां चलाईं। इसके बाद उसने 30 वर्षीय बहन अमनजोत कौर और फिर तीन साल की भांजी मनजीत कौर की हत्या की। आखिर में संदीप ने खुद को भी गोली मार ली।

नहीं करना चाहता शादी : पुलिस को मिले 19 पेज के सुसाइड नोट में संदीप ने लिखा है- 'मैं तनाव का शिकार है। दारू पीता हूं, विवाह नहीं करना चाहता। हमारे खेतों में पीर बाबा की जगह थी। हमें उसका शाप लगा है। यह जगह उसने किसी को बेच दी थी। शाप के अनुसार हमारे परिवार का वंश आगे नहीं बढ़ेगा। मैं परिवार का अकेला बेटा हूं। ऐसे में पूरा परिवार इस बोझ को सहन नहीं कर पाता।' संदीप ने होने वाली पत्नी राजदीप कौर से भी माफी भी मांगी है। लिखा है- राजदीप मैंनू माफ करीं.. मैं तेरा सबतों बड्डा गुनहगार हां, पर मैं मजबूर हां, तेरी जिंदगी, खराब नहीं कर सकदा सी।

परिवार कर रहा था शादी की तैयारी : संदीप का परिवार आर्थिक रूप से काफी मजबूत था। 12 सितंबर को उसकी शादी होने वाली थी। रविवार को संधारा (सावन के महीने में बहू को दिए जाने वाला शगुन का सामान) लेकर जाना था। इसके लिए वह एक दिन पहले ही बहन अमनजोत कौर व तीन साल की भांजी को लेकर आया था।

मालदीव पहुंचते ही गिरफ्तार हुए गफूर

तूतीकोरिन, प्रेट्र : मालदीव के पूर्व उपराष्ट्रपति अहमद अदीब अब्दुल गफूर आखिरकार वापस चले गए। वह शुक्रवार रात अपनी बोट से भारत की जल सीमा से बाहर चले गए। शनिवार को मालदीव पहुंचते ही उन्हें वहां की पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। इससे पहले भारत सरकार ने राजनीतिक शरण की गफूर की मांग ठुकरा दी। वह वैध दस्तावेज के बगैर गुरुवार को भारतीय सीमा में दाखिल हुए थे और देश में आने की कोशिश कर रहे थे।

गंभीर आरोपों के बीच मालदीव छोड़ने वाले गफूर को भारत सरकार ने अपनी धरती पर नहीं उतरने दिया। वह समुद्र के बीच अपनी बोट पर बने रहे, भारतीय एजेंसियों के अधिकारियों ने वहीं जाकर उनसे पूछताछ की। इसी दौरान पता चला कि उनके पास यात्रा संबंधी कोई दस्तावेज नहीं था और वह बिना सूचना के भारत आए थे। इसके बाद नई दिल्ली में विदेश मंत्रालय में विचार-विमर्श के बाद उन्हें वापस लौटाने का फैसला किया गया। इस दौरान गफूर ने मालदीव में अपनी जान का खतरा बताते हुए राजनीतिक शरण की भी मांग की, लेकिन भारत सरकार ने उसे अस्वीकार कर दिया। नई दिल्ली में विदेश मंत्रालय के सूत्रों ने साफ किया है कि भारत ने गफूर के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की है। न उन्हें हिरासत में लिया और न ही उनके साथ कोई जबर्दस्ती की गई।

बनी बात

सहारनपुर की नसीमा को उसके पति ने धमकी देकर घर से निकाल दिया था, लेकिन नया कानून बन जाने के बाद उसे जेल जाने का भय सताया तो कर लिया समझौता

तत्काल तलाक कानून के असर से फिर बसा नसीमा का घर

जागरण संवाददाता, सहारनपुर

तत्काल तीन तलाक कानून (मुस्लिम महिला विवाह अधिकार संरक्षण कानून) लागू होने के बाद संभवतः यह पहला मामला है जब इसके असर से एक टूटा हुआ परिवार फिर से एक हो गया। इस कानून का ही प्रभाव रहा कि आठ माह से मायके में रह रही और ससुरालियों की सताई नसीमा का घर एक बार फिर बस गया। पति और ससुर ने लिखकर दिया कि कानूनी कार्रवाई और तीन साल की जेल से बचने के लिए वे समझौता करने के लिए राजी हैं। नसीमा को करीब आठ माह पहले मारपीट कर तलाक की धमकी देते हुए घर से निकाल दिया गया था।

उत्तर प्रदेश के सहारनपुर की रहने वाली नसीमा की शादी 22 अप्रैल 2015 को उत्तराखंड के निवासी मोहम्मद अली के साथ हुई थी। शादी के कुछ महीने बाद से ही दहेज के लिए उसे परेशान किया जाने लगा। एक दिन पति ने मारपीट कर उसे तलाक देने की धमकी देते हुए घर से निकाल दिया था। 12 जुलाई को नसीमा ने पति, सास, ससुर समेत छह लोगों को नामजद करते हुए एसएसपी सहारनपुर के यहां प्रार्थना पत्र दिया गया था। इसी बीच उसकी मुलाकात सुप्रीम कोर्ट की अधिवक्ता फरहा फैज से हुई। फरहा का साथ मिलने और तत्काल तीन तलाक बिल पास होने के बाद नसीमा को बल मिला कि वह अपनी लड़ाई जीत सकती है। अंततः शनिवार को ससुराल पक्ष के लोग सहारनपुर आए और लिखित रूप से समझौता करने के बाद नसीमा को अपने साथ ले जाने पर राजी हो गए। समझौते में मांग के मुताबिक उसके ससुर ने नसीमा के नाम पर 750 वर्गफीट के प्लॉट का बैनामा करने की बात मान ली है। नसीमा के तीन साल के जुड़वां बच्चे हैं। पति और पत्नी के बीच हुए समझौते के दौरान अधिवक्ता फरहा फैज भी मौजूद थीं।

सहारनपुर में अधिवक्ता फरहा फैज और अपनी पत्नी के साथ मोहम्मद अली। जागरण

शौहरों ने दिया तलाक पीड़िताएं पहुंचीं थाने

लखनऊ : रायबरेली में एक शौहर ने बीवी को विदेश से फोन करके तीन तलाक कह दिया, जबकि लखीमपुर में शौहर पहले पत्नी को पीटते हुए घर के बाहर लाया और फिर सभी के सामने तलाक, तलाक, तलाक बोल दिया। इसे कानून का असर कह सकते हैं कि पीड़िताएं भी खामोश नहीं बैठीं। इंसाफ मांगने पुलिस के पास पहुंच गईं। रायबरेली वाले मामले में पुलिस ने अभी केस नहीं दर्ज किया है। पुलिस के मुताबिक तलाक और उत्पीड़न के सिलसिले में शिकायत मिली है और पति को अपना पक्ष रखने के लिए समय दिया गया है। इसके बाद ही पुलिस की ओर से कार्रवाई की जाएगी। इसी तरह लखीमपुर के मामले में भी पुलिस ने कहा, मामले की जांच की जा रही है। थाना दिवस पर पीड़िता ने उत्पीड़न की शिकायत की है। पति पर पिटाई का भी आरोप है।

हड़ताल का कहर, चंडीगढ़ पीजीआइ में 34 की मौत

जागरण संवाददाता, चंडीगढ़

चंडीगढ़ पीजीआइ के आइसीयू में भर्ती लुधियाना के 46 वर्षीय किडनी ट्रांसप्लांट के मरीज राजकुमार की शनिवार सुबह मौत हो गई। इसके बाद तो जैसे मरीजों की मौत का सिलसिला शुरू हो गया। परिजनों की रोने बिलखने की आवाज से ट्रामा और इमरजेंसी यूनिट में कोहराम मच गया। शाम सात बजे तक 34 मरीजों की मौत हो चुकी थी। इनमें पांच दुर्घटना और 29 बीमारियों से ग्रस्त मरीज थे। इस बीच, रेजिडेंट डाक्टरों ने सोमवार से आंदोलन और तेज करने की धमकी दी है।

सामान्य दिनों में पीजीआइ में मरीजों की मौत का आंकड़ा औसतन 10 से 12 तक रहता है। आइसीयू, इमरजेंसी और ट्रामा के पैरामेडिकल स्टाफ का कहना है कि पीजीआइ के ट्रामा, इमरजेंसी और लगभग सभी ऐसी इमरजेंसी यूनिट के मरीज सीनियर रेजिडेंट की देखरेख में होते हैं, लेकिन हड़ताल के कारण सभी रेजिडेंट डॉक्टरों ने काम ठप कर दिया था। इसलिए मौत की संख्या अचानक इतनी ज्यादा हो गई।

पीजीआइ में रेजिडेंट डॉक्टरों की हड़ताल के कारण शनिवार को ओपीडी सेवा ठप रही। एक भी नए मरीज का रजिस्ट्रेशन नहीं हुआ जबकि सामान्य दिनों में आठ से यहां दस हजार मरीजों का इलाज होता है। यहां चंडीगढ़ के अलावा पंजाब, हरियाणा, उत्तराखंड, हिमाचल और दिल्ली के मरीज इलाज कराने आते हैं। हालांकि पीजीआइ प्रशासन ने ओपीडी में सैकड़ों मरीजों के इलाज किए जाने का दावा किया है।

> पीजीआइ केवल चंडीगढ़ ही नहीं हरियाणा और पंजाब का भी मुख्य रेफल सेंटर है। यहां अति गंभीर मरीज रेफर किए जाते हैं। ऐसी स्थिति में यहां मरीजों की मौत के मामले में हड़ताल और सामान्य दिनों की स्थिति के बीच तुलना करना उचित नहीं होगा।
>
> **- प्रोफेसर जगत राम, निदेशक चंडीगढ़ पीजीआइ**

28 जगहों पर करीब एक लाख पौधे लगाए हैं दिल्ली जल बोर्ड ने विशेष अभियान के तहत। इसमें कर्मचारियों के साथ जल बोर्ड के मुख्य कार्यकारी अधिकारी निखिल कुमार ने भी हिस्सा लिया।

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
रविवार 4 अगस्त 2019

तीसरे दिन भी डॉक्टरों की हड़ताल से परेशान रहे मरीज

इलाज का इंतजार ▸ दूर-दराज से आए बहुत से मरीज और उनके परिजनों ने गुरुवार से अस्पतालों व डॉक्टरों के कमरों के बाहर डाल रखा है डेरा

राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग बिल का विरोध कर रहे हैं रेजिडेंट डॉक्टर

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग बिल के विरोध में एम्स व सफदरजंग अस्पताल में रेजिडेंट डॉक्टरों की हड़ताल तीसरे दिन भी जारी रही। इसके कारण देशभर से आने वाले मरीजों के साथ स्थानीय मरीज भी परेशान रहे। दूसरे शहरों से आने वाले कई मरीज गुरुवार से ही अस्पताल के बाहर इलाज के इंतजार में बैठे हैं। लोगों का कहना है कि कोई उन्हें यह भी नहीं बता रहा है कि डॉक्टर उनका इलाज कब करेंगे।

ज्यादातर मरीज गंभीर बीमारियों से पीड़ित हैं, जिन्हें अन्य छोटे अस्पतालों में इलाज भी नहीं मिल सकता। इसी वजह से दूर-दराज से आए बहुत से मरीज और परिजन तीन दिन से अस्पतालों व डॉक्टरों के कमरों के बाहर डेरे डाले हुए हैं। ज्यादातर मरीजों के तीमारदारों ने बताया कि जब डाक्टरों को दिखाने के लिए नंबर लेने गए तो मरीजों को देखे बिना ही अगली तारीख दे दी गई। इसके अलावा मरीजों के साथ यह भी दिक्कत है कि अगली तारीख तक वे तमाम तरह की परेशानियों के लिए कौन सी दवा लें, यह भी नहीं बताया। उनके सामने जीवन-मरण का सवाल खड़ा हो गया है।

दूसरी ओर एम्स रेजिडेंट डॉक्टरों द्वारा की जा रही हड़ताल के बीच शनिवार को संस्थान के करीब 60 वरिष्ठ डॉक्टरों (फैकल्टी) ने भी एक बैठक की। इसमें उन्होंने रेजिडेंट डॉक्टरों व मेडिकल के छात्रों की मांगों का समर्थन किया। इस दौरान एम्स की स्वायत्तता का मुद्दा भी उठाया गया।

वरिष्ठ डॉक्टरों की यह बैठक एम्स के फैकल्टी एसोसिएशन ने नहीं बुलाई थी। फैकल्टी एसोसिएशन को दरकिनार कर वरिष्ठ डॉक्टरों ने यह बैठक की। उल्लेखनीय है कि स्वायत्तशासी संस्थान होने के नाते एम्स भारतीय चिकित्सा परिषद (एमसीआइ) के दायरे से बाहर रहा है। इसलिए एम्स अपना पाठ्यक्रम व प्रवेश परीक्षा का मॉडल खुद ही तैयार करता रहा है, लेकिन अब एम्स को भी एनएमसी के दायरे में लाया जा रहा है। इसके तहत एमबीबीएस में दाखिले के लिए एम्स को भी अब नीट के दायरे में लाने का प्रस्ताव है। इसके अलावा एम्स के छात्रों को भी एमबीबीएस के अंतिम वर्ष में नेक्स्ट परीक्षा देनी होगी।

बैठक में कुछ डॉक्टरों ने कहा कि इससे एम्स की स्वायत्तता प्रभावित होगी। एक डॉक्टर ने कहा कि सरकार ने यह विधेयक जल्दबाजी में पारित किया है। इससे निजी मेडिकल कॉलेजों में पढ़ाई महंगी होगी। आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के बच्चों को उसमें दाखिला नहीं मिल पाएगा क्योंकि 50 फीसद सीटों पर निजी मेडिकल कॉलेज मनमाने तरीके से शुल्क निर्धारित करेंगे। डॉक्टरों का कहना है कि निजी मेडिकल कॉलेजों की 85 फीसद सीटों पर सरकार का नियंत्रण होना चाहिए।

राम मनोहर लोहिया अस्पताल में रेजिडेंट डॉक्टरों की हड़ताल के कारण इलाज के लिए गोद में बच्चे को उठाकर भटकता पिता। इलाज नहीं होने से ऐसे और भी बहुत से मरीज भटक रहे हैं। ध्रुव कुमार

सरकार की चेतावनी के बावजूद काम पर नहीं लौटे डॉक्टर

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

केंद्र सरकार द्वारा लाए गए राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग (एनएमसी) बिल का विरोध करने वाले रेजिडेंट डॉक्टरों में मतभेद सामने आया गया है। फोर्डा (फेडरेशन ऑफ रेजिडेंट डॉक्टर्स एसोसिएशन) के ज्यादातर पदाधिकारी हड़ताल को बढ़ाने के पक्ष में नहीं हैं। इसलिए लगातार दो दिन की हड़ताल के बाद शनिवार को दिल्ली सरकार के ज्यादातर अस्पतालों की ओपीडी व इमरजेंसी में रेजिडेंट डॉक्टर ड्यूटी पर लौट आए। इससे मरीजों को थोड़ी राहत मिली। लेकिन एम्स के रेजिडेंट डॉक्टर हड़ताल पर अड़े हैं। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय व एम्स प्रशासन ने रेजिडेंट डॉक्टरों को हड़ताल खत्म नहीं करने पर कार्रवाई करने की चेतावनी दी है। इस चेतावनी की परवाह न करते हुए केंद्र के सभी अस्पतालों की ओपीडी में रेजिडेंट डॉक्टरों ने हड़ताल की। एम्स, सफदरजंग, आरएमएल समेत करीब सात अस्पतालों की ओपीडी में ड्यूटी पर रेजिडेंट डॉक्टर मौजूद नहीं थे। रेजिडेंट डॉक्टरों की हड़ताल से ऑपरेशन थियेटर भी बंद रहे। इस वजह से इन अस्पतालों में सैकड़ों मरीजों की सर्जरी टाल दी गई। हालांकि राहत की बात यह है कि सफदरजंग अस्पताल को छोड़कर सभी अस्पतालों में इमरजेंसी सेवा सामान्य रही।

हड़ताल का सबसे अधिक असर सफदरजंग अस्पताल में देखा गया। यहां रेजिडेंट डॉक्टरों ने इमरजेंसी सेवा भी ठप रखी। सफदरजंग में 500 बेड की क्षमता का देश का सबसे बड़ा इमरजेंसी सेंटर है। इसमें प्रतिदिन करीब 1500 मरीज इलाज के लिए पहुंचते हैं। सुरक्षा गार्डों ने मरीजों और तीमारदारों को इमरजेंसी वार्ड में प्रवेश करने से रोक दिया, जबकि फोर्डा ने शनिवार से इमरजेंसी सेवा शुरू करने की घोषणा की थी। सफदरजंग रेजिडेंट डॉक्टर्स एसोसिएशन ने भी इमरजेंसी में हड़ताल खत्म करने बात कही थी। लेकिन रेजिडेंट डॉक्टरों ने सफदरजंग अस्पताल में इमरजेंसी सेवा को ठप कर दिया।

रेजिडेंट डॉक्टरों ने सफदरजंग अस्पताल के सामने स्थित सड़क पर कई घंटे जाम लगाए रखा। वे सड़क पर बैठकर केंद्र सरकार व एनएमसी बिल के खिलाफ नारेबाजी करते रहे। इस दौरान रेजिडेंट डॉक्टरों व पुलिस के बीच झड़प भी हुई।

एम्स के रेजिडेंट डॉक्टरों का आरोप है कि संस्थान में पुलिस सुरक्षा इतनी बढ़ा दी गई थी कि उन्हें प्रदर्शन करने के लिए अस्पताल से बाहर नहीं निकलने दिया गया।

एम्स, सफदरजंग, आरएमएल के अलावा लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज के दो अस्पताल, हिंदू राव अस्पताल व बाहरी दिल्ली के एक अस्पताल में ओपीडी सेवा प्रभावित रही। हालांकि एम्स, सफदरजंग व आरएमएल अस्पताल की ओपीडी में वरिष्ठ डॉक्टर मौजूद थे। वहीं दिल्ली सरकार के लोकनायक, जीबी पंत सहित ज्यादातर अस्पतालों में ओपीडी में मरीजों का इलाज हुआ।

दो धड़े में बंटे एम्स के रेजिडेंट : एक दिन पहले केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हर्षवर्धन से मुलाकात के बाद एम्स रेजिडेंट डॉक्टर्स एसोसिएशन के पदाधिकारी हड़ताल वापस लेना चाहते थे, लेकिन एसोसिएशन के सभी रेजिडेंट डॉक्टर सहमत नहीं हुए। इस तरह से एम्स में भी रेजिडेंट डॉक्टर दो धड़ों में बंट गए हैं। ज्यादातर रेजिडेंट डॉक्टर अपनी मांग पर अड़े हुए हैं। यही वजह है कि एम्स सहित केंद्र के अस्पतालों में हड़ताल जारी है। एम्स के रेजिडेंट डॉक्टर एनएमसी बिल से सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को दवाएं लिखने का लाइसेंस देने के प्रस्ताव का विरोध कर रहे हैं। साथ ही नेक्स्ट परीक्षा के प्रावधान को खत्म करने की मांग कर रहे हैं।

भारतीय अर्थव्यवस्था नौकरी मांगने वाली नहीं, देने वाली बने : सिसोदिया

जासं, नई दिल्ली : दिल्ली के उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने सचिवालय में दो सौ उद्यमियों से विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की। इस दौरान सिसोदिया ने कहा कि उद्यमिता पाठ्यक्रम (एंटरप्रिंयोरशिप माइंडसेट करिकुलम) देश की आर्थिक विकास में योगदान करेगा। उन्होंने कहा कि जीडीपी के मामले में भारत आज दो स्थान नीचे खिसक गया है। आज हमारे सामने चुनौती है कि दिल्ली, भारत को 5वें स्थान पर या ऊपर लाने में क्या योगदान कर सकती है। देश को विकास की पटरी पर लाने के लिए हमें एक साथ मिलकर काम करना होगा। उन्होंने कहा कि दिल्ली सरकार द्वारा सरकारी स्कूलों में कक्षा नौ से 12वीं तक शुरू किए गए उद्यमिता पाठ्यक्रम का उद्देश्य ही उद्यमियों से बच्चों का नियमित जुड़ाव रखना है।

उन्होंने कहा कि आज स्नातक की पढ़ाई कर कॉलेजों से निकलने वाले 99 फीसद युवा नौकरी चाहते हैं। मेरा सपना है कि भारतीय अर्थव्यवस्था नौकरी मांगने वाली नहीं, बल्कि नौकरी देने वाली बने। हम वास्तव में जब एक अर्थव्यवस्था के रूप में विकसित होंगे, तब दुनिया भर के लोग भारतीय उद्यमियों द्वारा शुरू की गई और भारतीय कंपनियों के लिए काम करना शुरू करेंगे। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि कई शीर्ष संस्थान आज ऐसे कोर्स चला रहे हैं जो छात्रों को व्यवसाय शुरू करने में सक्षम बना रहे हैं। लेकिन जो कमी है, वह कारोबारी दिमाग की है। हमारा उद्देश्य इसे स्थापित करना है।

कर विभाग की 41 टीमों ने 21 ट्रांसपोर्टरों के गोदामों और ठिकानों पर मारे छापे

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

- ट्रांसपोर्टरों व व्यापारियों के मिलीभगत से जीएसटी चोरी के अवैध धंधे का भंडाफोड़
- दो गोदाम सील, 18 गोदामों में मिली अनियमितता, 1.18 करोड़ का माल जब्त
- शुक्रवार शाम से शुरू हुई कार्रवाई शनिवार सुबह तक चली

दिल्ली सरकार के व्यापार व कर (टीटी) विभाग के 41 टीमों में शामिल 140 कर अधिकारियों ने दिल्लीभर में 21 ट्रांसपोर्टरों के 41 गोदामों और ठिकानों पर छापेमारी की। इसमें भारी संख्या में टैक्स चोरी के मामले सामने आए हैं। शुक्रवार शाम से शुरू हुई कार्रवाई शनिवार सुबह तक चली। एक साथ छापेमारी की इस कार्रवाई से दिल्ली के ट्रांसपोर्टरों में खलबली है। शुरुआती जांच में 1.18 करोड़ रुपये के सामानों के दस्तावेज नहीं मिले हैं। दो गोदामों को सील कर दिया गया है।

विभाग के आयुक्त एच राजेश प्रसाद ने बताया कि छापेमारी वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) कानून-2017 के तहत की गई। इसमें व्यापारियों और ट्रांसपोर्टरों की मिलीभगत से बड़ी कर चोरी के मामला सामने आया है। वैसे, विभाग पिछले दो माह से व्यावसायिक वाहनों की जांच कर रहा था। इसमें 200 ऐसे ट्रक पकड़ में आए, जिनके चालकों के पास ई-वे बिल, इंवाइस और सामान की रसीद (जीआर) में खामियां थीं। ऐसे मामलों में 4.18 करोड़ रुपये जुर्माना के रूप में वसूले गए। विभाग के मुताबिक ट्रक चालकों से ही पूछताछ में कर चोरी में ट्रांसपोर्टरों व व्यापारियों की संलिप्तता का पता चला। इसके बाद एक साथ छापेमारी का फैसला लिया गया।

शुक्रवार शाम को एक साथ कर अधिकारियों के दल ने ट्रांसपोर्टरों के ठिकानों और गोदामों पर धावा बोल दिया। इसमें पुरानी दिल्ली स्थित कमला मार्केट, बाग दीवार, नया बाजार, कुतुबरोड, खन्ना मार्केट के अलावा बाहरी दिल्ली स्थित अलीपुर, स्वरूप नगर, संजय गांधी ट्रांसपोर्ट नगर और गांधी नगर इलाके समेत दिल्ली के अन्य स्थानों पर मौजूद गोदामों में जांच की गई।

छापेमारी से ट्रांसपोर्टरों में खलबली रही। साथ ही दिल्ली के कारोबारियों में भी इसे लेकर कयास लगाए जाते रहे। जांच के दौरान टीमों ने दस्तावेजों का पेटी व बंडलों में रखे माल का मिलान कराया। जांच टीमों ने गोदामों में मौजूद पेटियों को तोड़कर व बंडलों को फाड़कर उसमें रखे सामानों का दस्तावेजों से मिलान कराया। जांच में यह देखा गया कि रसीद में जो सामान दर्ज हैं, वही जा रहे हैं और उसी मात्रा में जा रहे हैं? क्या इनका टैक्स भुगतान किया गया है? इसे लेकर कर विभाग के अधिकारियों ने ट्रांसपोर्टरों और मौजूद कर्मचारियों से अलग-अलग पूछताछ भी की।

पूरी कवायद में बड़े पैमाने पर कर चोरी के अवैध धंधे का पता चला। 18 ठिकानों व गोदामों में अनियमितता मिली। इंवाइस बिल, सामान की रसीद व ई-वे बिल में गड़बड़झाला था। ऐसे में अधिकारियों ने दस्तावेजों को जब्त कर लिया। साथ ही बिना विभाग को बताए सामान न हटाने की चेतावनी दी है। इस मामले में अभी तक किसी की गिरफ्तारी नहीं हुई है, पर विभाग ने अधिकारियों को कर चोरी में संलिप्त रहने वाले ट्रांसपोर्टरों व डीलरों पर सख्त कार्रवाई करने को कहा है।

छापेमारी से ट्रांसपोर्टरों में दहशत के साथ नाराजगी है। दिल्ली गुड्स ट्रांसपोर्टर आर्गनाइजेशन के अध्यक्ष राजेंद्र कपूर ने कहा कि ट्रांसपोर्टर न तो जीएसटी लेता है और न ही उसे जमा कराता है। उसका काम तो माल को यहां-वहां पहुंचाना भर है। हम दस्तावेज के आधार पर माल बुक कर उसे आगे भेज देते हैं। हमारे साथ ऐसा व्यवहार हो रहा है, जैसे हम सीधे कर चोरी में लिप्त हैं। उन्होंने कहा कि इस संबंध में ट्रांसपोर्टर्स जल्द दिल्ली सरकार के वित्त मंत्री व कर विभाग के आयुक्त से मुलाकात कर अपना पक्ष रखेंगे।

महिलाओं को बसों में मुफ्त यात्रा की तैयारी पूरी

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : दिल्ली में विधानसभा चुनावों की तैयारियां कर रही आम आदमी पार्टी (आप) सरकार तेजी से अपनी घोषणाओं को पूरा करने में जुटी है। दिल्लीवासियों को मुफ्त बिजली की सौगात देने के बाद मुफ्त यात्रा योजना को लेकर सक्रिय हो गई है। बसों में मुफ्त यात्रा को लेकर दिल्ली परिवहन निगम (डीटीसी) ने एक प्रस्ताव बनाकर परिवहन मंत्री को भेजा है। इसके अनुसार सरकार हर महिला यात्री पर औसतन दस रुपये खर्च करेगी।

यही व्यवस्था दिल्ली इंटिग्रेटेड मल्टी मॉडल ट्रांजिट सिस्टम (डिम्टस) के तहत क्लस्टर बसों में भी लागू होगी। डीटीसी दिल्ली में करीब 3,600 बसों का संचालन करती है, जबकि डिम्टस 1,679 क्लस्टर बसों का संचालन करती है। दिल्ली की बसों में 40 लाख से ज्यादा लोग रोज सफर करते हैं। ऐसे में सब्सिडी देने से सरकारी खजाने पर करीब 300 करोड़ रुपये का भार आएगा। फिलहाल बसों में महिलाओं के लिए यह व्यवस्था की जाएगी।

दिल्ली सरकार के एक अधिकारी ने बताया कि डीटीसी ने इसका प्रस्ताव बनाकर परिवहन मंत्री कैलाश गहलोत को भेज दिया है। उनकी मंजूरी मिलने के बाद इसे कैबिनेट के लिए भेज दिया जाएगा। वहां से स्वीकृति मिलते ही इसे लागू कर दिया जाएगा। उन्होंने बताया कि इस योजना को तय करने से पहले सरकार के सामने सबसे बड़ी मुश्किल यह थी कि सब्सिडी का आधार क्या रखा जाए।

आइजीआइ एयरपोर्ट पर लगे फेस रिकग्निशन कैमरे

संतोष शर्मा, नई दिल्ली

इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट (आइजीआइ) एयरपोर्ट पर फेस रिकग्निशन कैमरा (चेहरा पहचानने वाला कैमरा) लगाने का काम शुरू कर दिया गया है। इस कैमरे के लगने से जहां एयरपोर्ट की सुरक्षा पहले से ज्यादा पुख्ता होगी। इसके साथ ही यात्रियों के समय में भी बचत होगी। फेस रिकग्निशन कैमरे के माध्यम से यात्रियों के प्रवेश से एयरपोर्ट की सुरक्षा में तैनात केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के जवानों को जांच में ज्यादा जहमत नहीं उठानी पड़ेगी। फिलहाल, आइजीआइ पर तीन फेस रिकग्निशन कैमरे लगा दिए गए हैं। प्रथम चरण में ट्रायल के तौर पर इसके माध्यम से एयरपोर्ट कर्मी टर्मिनल के अंदर प्रवेश कर सकेंगे। ट्रायल पूरा होने के बाद इस वर्ष के अंत तक इसे आम यात्रियों के लिए शुरू करने की योजना है।

दरअसल सेक्यूरिटी होल्ड एरिया प्लान के कारण आइजीआइ एयरपोर्ट पर कोई भी शख्स सिर्फ विमान टिकट के आधार पर बगैर सामान जांच कराए अंदर तक प्रवेश कर सकता है। इसका ही नतीजा है कि 2018 में एयरपोर्ट पर जहां एडिट किए हुए टिकट पर टर्मिनल में अवैध प्रवेश करने वाले 108 और हथियार व कारतूस के साथ यात्रा करने की कोशिश करते हुए 55 लोगों को पकड़ा गया था। इस वर्ष मई तक इस प्रकार के क्रमशः 22 और 53 मामले सामने आ चुके हैं। एयरपोर्ट के वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि फेस रिकग्निशन कैमरा लगने से इस प्रकार की घटनाओं पर पूरी तरह से रोक लग जाएगी और एयरपोर्ट की सुरक्षा फुलप्रूफ हो जाएगी।

प्रथम चरण में आइजीआइ पर कैमरे के तीन सेट लगाए गए हैं। पहला कैमरा प्रवेश द्वार पर स्थापित कियोस्क में लगाया गया है। वहां यात्रियों को टर्मिनल में प्रवेश करने से पहले अपना नाम और उड़ान इत्यादि का विवरण दर्ज करना होगा। मशीन में लगा कैमरा उनके चेहरे की पहचान कर उन्हें एक विशिष्ट पहचान संख्या प्रदान करेगा। इसके बाद सिक्योरिटी होल्ड एरिया (एसएचए) और बोर्डिंग गेट पर दो अन्य कैमरे लगाए गए हैं। यात्री द्वारा एसएचए में लगे कैमरे और सिस्टम में अपनी विशेष पहचान संख्या दर्ज करते ही सुरक्षा जांच के बाद उन्हें बोर्डिंग गेट तक जाने की इजाजत मिल जाएगी। यही प्रक्रिया विमान में चढ़ने से पहले बोर्डिंग गेट पर लगे सिस्टम के सामने अपनानी होगी। सब कुछ ठीक पाए जाने के बाद यात्री विमान में प्रवेश कर जाएंगे।

एयरपोर्ट की सुरक्षा पहले से ज्यादा पुख्ता होगी। यात्रियों का बचेगा समय। जागरण

यात्री द्वारा एक बार अपनी जानकारी दर्ज कर दिए जाने के बाद यह सिस्टम में संरक्षित हो जाएगा। अन्य यात्रा के दौरान उन्हें सिर्फ चेहरे की पहचान के आधार पर टर्मिनल में प्रवेश मिल जाएगा। इससे यात्री का काफी समय बचेगा। अधिकारी ने बताया कि फिलहाल आइजीआइ एयरपोर्ट पर तीन फेस रिकग्निशन कैमरे स्थापित किए गए हैं। आगामी दिनों में इसका ट्रायल शुरू किया जाएगा। ट्रायल के दौरान केवल एयरपोर्ट कर्मी इसका प्रयोग कर सकेंगे। ट्रायल सफल रहने पर इस वर्ष अंत तक इसे यात्रियों के लिए शुरू कर दिया जाएगा। अधिकारी ने कहा कि फेस रिकग्निशन कैमरे लगाने का विचार मार्च 2016 में ब्रसेल्स एयरपोर्ट के अंदर हुए बम विस्फोटों के बाद आया था। चूंकि वहां प्रवेश करते वक्त जांच नहीं होती इसलिए हमलावर टर्मिनल बिल्डिंग के अंदर प्रवेश कर बम धमाका करने में सफल हो गया था।

अलग-अलग एयरपोर्ट पर होती है तीन तरह की सुरक्षा जांच : अधिकारी के मुताबिक अलग-अलग एयरपोर्ट की सुरक्षा के लिए तीन तरह की योजनाएं अपनाई जाती हैं। इनमें सेक्यूरिटी होल्ड एरिया प्लान, बोर्डिंग गेट और कॉनकोर्स प्लान प्रमुख हैं। आइजीआइ एयरपोर्ट पर सेक्यूरिटी होल्ड एरिया (एसएचए) प्लान के तहत विमान का टिकट दिखाने पर बगैर जांच के यात्री को टर्मिनल बिल्डिंग में प्रवेश दे दिया जाता है। चेकइन के बाद एसएचए में उनकी सुरक्षा जांच होती है। वहीं बोर्डिंग गेट प्लान के अंतर्गत विमान में जाने से पूर्व बोर्डिंग गेट पर, जबकि कॉनकोर्स प्लान में टर्मिनल बिल्डिंग में प्रवेश के वक्त यात्रियों की सुरक्षा जांच की जाती है।

फ्लाईओवर से गिरा अनियंत्रित ट्रक, चालक की जान गई

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम के पास फ्लाईओवर से शिमला मिर्च से भरा ट्रक तीव्र मोड़ पर अनियंत्रित होकर नीचे गिर गया। हादसे के बाद ट्रक को काटकर चालक को निकाला गया। तब तक उसकी मौत हो चुकी थी। चालक की पहचान हरियाणा के मेवात के जैतपुर निवासी जलालुद्दीन उर्फ कल्ली (45 वर्ष) के रूप में हुई है। हादसे में मेवात निवासी क्लीनर शाहरुख व एक अन्य व्यक्ति वाजिद घायल हो गए। उन्हें एलएनजेपी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। वाजिद कल्ली का रिश्तेदार है। इधर सड़क के बीच में ट्रक गिरने के कारण एक घंटे तक रिंग रोड पर जाम की स्थिति बनी रही। पुलिसकर्मियों ने क्रेन से ट्रक को हटाकर जाम खुलवाया। आइपी एस्टेट थाना पुलिस मामले की छानबीन कर रही है।

पुलिस के मुताबिक जलालुद्दीन राजस्थान के ट्रांसपोर्टर के ट्रक में महाराष्ट्र के कोल्हापुर से शिमला मिर्च लेकर आया था। शनिवार सुबह करीब तीन बजे मिर्च लेकर वह आजादपुर मंडी जा रहा था। रास्ते में इंदिरा गांधी स्टेडियम के पास फ्लाईओवर पर चढ़ते ही सलीमगढ़ मोड़ पर ट्रक बेकाबू हो गया और रेलिंग तोड़ता हुआ 25 फीट नीचे जा गिरा। हादसे में ट्रक का अगला हिस्सा जमीन से टकराने की वजह से बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। केबिन में स्टेयरिंग के बीच जलालुद्दीन बुरी तरह फंस गया। शाहरुख और वाजिद कांच तोड़कर बाहर निकले। शाहरुख ने बताया कि हादसे के वक्त वह सो रहा था।

सलीमगढ़ फ्लाईओवर के तीव्र मोड़ पर ट्रक गिरने से दो लोग भी हुए हैं घायल। संजय

भाजपा में बढ़ रहा मुस्लिम महिलाओं का भरोसा

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

तीन तलाक के खिलाफ कानून बनने और गरीबों के जीवन स्तर में सुधार लाने के लिए शुरू की गई योजनाओं का असर अल्पसंख्यक वर्ग विशेषकर मुस्लिम महिलाओं पर भी पड़ा है। यही कारण है कि मुस्लिम महिलाएं भाजपा के साथ जुड़ने के लिए आगे आ रही हैं। तीन तलाक विधेयक संसद में पास होने के बाद बड़ी संख्या में मुस्लिम महिलाएं भाजपा कार्यालय पहुंची थीं। इसके साथ ही सदस्यता अभियान कार्यक्रम में आकर वे पार्टी से जुड़ रही हैं।

करोलबाग के अजमल खां रोड पर प्रदेश भाजपा व्यापारी प्रकोष्ठ की ओर से आयोजित सदस्यता अभियान कार्यक्रम में व्यापारियों के साथ ही मुस्लिम भी शामिल हुए। भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री अरुण सिंह सहित अन्य नेताओं ने कार्यकर्ताओं व नए सदस्यों को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि व्यापारी वर्ग देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है। कांग्रेस नेतृत्व विहीन हो चुकी है इसलिए पार्टी में बिखराव शुरू हो गया है। दूसरी ओर आम आदमी पार्टी की लोकसभा चुनाव में जमानत तक जब्त हो चुकी है। ऐसे में विधानसभा चुनाव में भाजपा प्रचंड जीत के साथ दिल्ली में सरकार बनाएगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व और भाजपा की संगठन शक्ति से हर कोई प्रभावित है। यही वजह है कि दिल्ली की नकारात्मक व झूठी सरकार को सत्ता से हटाने के लिए जनता तैयार है।

दिल्ली प्रदेश संगठन महामंत्री सिद्धार्थन ने कहा कि दिल्ली विधानसभा चुनाव में भी लोकसभा चुनाव जैसी जीत हासिल करने में सदस्यता अभियान सहायक सिद्ध होगा। इस अवसर पर प्रदेश भाजपा व्यापारी प्रकोष्ठ के प्रभारी गुलशन गुगनानी, प्रदेश मीडिया प्रमुख अशोक गोयल देवराहा एवं करोलबाग जिला अध्यक्ष भारत भूषण मदान उपस्थित थे।

करोलबाग में आयोजित सदस्यता अभियान के तहत मुस्लिम महिलाओं को भाजपा को सदस्यता दिलाते पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव अरुण सिंह और प्रदेश संगठन महामंत्री सिद्धार्थन। जागरण

सुविधा

एम्स में अब तक 70 मरीजों में दिल का हो चुका है प्रत्यारोपण, इसमें सफलता के मामले में संस्थान का रिकॉर्ड विश्वस्तरीय

दिल व फेफड़े को एक साथ प्रत्यारोपित करेगा एम्स

रणविजय सिंह, नई दिल्ली

देश में सफल दिल (हृदय) प्रत्यारोपण के 25 साल पूरे हो चुके हैं। इस उपलब्धि को एम्स ने शनिवार को रजत जयंती के रूप में मनाया। इसका मकसद देशभर में दिल प्रत्यारोपण कार्यक्रम को बढ़ावा देना है ताकि ज्यादा से ज्यादा मरीजों में दिल प्रत्यारोपण किया जा सके। अब एम्स के डॉक्टर दिल व फेफड़े का प्रत्यारोपण एक साथ करने को तैयार हैं। इसके लिए जरूरतमंद मरीजों की सूची बनाई जा रही है।

एम्स के मीडिया व प्रोटोकॉल डिविजन की अध्यक्ष डॉ आरती विज ने कहा कि संस्थान में दिल प्रत्यारोपण का कार्यक्रम सफलतापूर्वक चल रहा है। देश में पहली बार तीन अगस्त 1994 को एम्स में प्रोफेसर डॉ. वेणुगोपाल के नेतृत्व में दिल का सफल प्रत्यारोपण किया गया था। इसके बाद कई अस्पतालों में यह सुविधा शुरू हुई। एम्स में अब तक 70 मरीजों में दिल का प्रत्यारोपण हो चुका है। इसकी सफलता के मामले में एम्स का रिकॉर्ड विश्वस्तरीय है। कई मरीजों को दिल के साथ-साथ फेफड़े की भी गंभीर बीमारी होती है। ऐसे मरीजों में दिल के अलावा फेफड़ा भी प्रत्यारोपण करने की जरूरत होती है।

देश में पहली बार तीन अगस्त 1994 को एम्स में प्रोफेसर डॉ. वेणुगोपाल के नेतृत्व में दिल का सफल प्रत्यारोपण किया गया था। फाइल फोटो

दिल और फेफड़ा को एक साथ प्रत्यारोपण करने के लिए एम्स को हाल ही में लाइसेंस मिला है। अब एम्स इस तरह की पहली सर्जरी करने की तैयारी में है। करीब डेढ़ साल से फेफड़ा प्रत्यारोपण शुरू करने की कोशिश की जा रही है। फेफड़ा प्रत्यारोपण के लिए एम्स के पास कई सालों से लाइसेंस भी है।

डॉ. आरती विज ने कहा कि प्रत्यारोपण के लिए मरीजों की सूची तैयार है। उपयुक्त डोनर मिलने पर फेफड़ा प्रत्यारोपण के अलावा दिल व फेफड़े का एक साथ प्रत्यारोपण शुरू किया जाएगा। एम्स के कार्डियोलॉजी विभाग के प्रोफेसर डॉ. अंबुज राय ने बताया कि एक ही मरीज में दिल व फेफड़ा प्रत्यारोपित करना बेहद जटिल है। इसके लिए विशेषज्ञता के साथ ही कई विभागों के डॉक्टरों की टीम की जरूरत होती है। दक्षिण भारत में फेफड़ा प्रत्यारोपण बहुत हुए हैं, लेकिन दिल व फेफड़ा एक साथ प्रत्यारोपित करने के मामले गिने-चुने ही हैं। इसलिए यह सुविधा शुरू होने पर एम्स के लिए यह बड़ी उपलब्धि होगी।

सैकड़ों लोगों की मिली जिंदगी : एम्स के कार्डियक सर्जन डॉ. मिलिंद होते ने कहा कि 25 साल पहले डॉ. वेणुगोपाल ने एम्स में हृदय प्रत्यारोपण की जो जोत जलाई गई थी, उससे देश भर में अब तक सैकड़ों लोगों नई जिंदगी मिल चुकी है। देश में अब तक 700 लोगों में हृदय प्रत्यारोपण किया जा चुका है। इसमें से 400-500 लोग जीवित हैं।

464 मरीजों में हुआ फेफड़ा प्रत्यारोपण : देश में वर्ष 2010 के बाद से अब तक 464 से अधिक मरीजों में फेफड़ा प्रत्यारोपण किया जा चुका है। इनमें से अकेले तमिलनाडु में करीब 432 मरीजों में फेफड़ा प्रत्यारोपित किया जा चुका है। इसके अलावा तेलंगाना, आंध्र प्रदेश व केरल में फेफड़ा प्रत्यारोपण की सुविधा है।

गरीबों को मुफ्त में डायलिसिस कराएगा दिल्ली वक्फ बोर्ड

वी.के.शुक्ला, नई दिल्ली

दिल्ली वक्फ बोर्ड समाज सेवा के क्षेत्र में हाथ बढ़ाने जा रहा है। बोर्ड किडनी की बीमारी से ग्रसित गरीब मरीजों का मुफ्त में डायलिसिस कराएगा। इसके लिए बोर्ड अपने खर्च पर डायलिसिस सेंटर खोलने जा रहा है। जल्द ही ओखला क्षेत्र में पहला डायलिसिस सेंटर खोला जाएगा जिसमें एक साथ दस लोग डायलिसिस करा सकेंगे। गरीब मुस्लिमों के साथ ही हिंदुओं को भी इस फ्री सुविधा का लाभ मिलेगा। बोर्ड के आधिकारिक सूत्रों के अनुसार, इस प्रयास से हिंदू-मुस्लिम भाईचारे को बढ़ावा भी मिलेगा।

दिल्ली में इस समय किडनी की बीमारी के लिए सरकारी अस्पतालों में न तो पूर्ण इलाज की व्यवस्था है और न ही डायलिसिस के लिए पर्याप्त मशीनें ही उपलब्ध हैं। सरकारी अस्पतालों में डायलिसिस के लिए 90 मशीनें मई 2018 में उपलब्ध कराई गई थीं, मगर इनमें से अभी तक 40 ही चलाई जा रही हैं। सरकारी अस्पतालों में 60 मशीनें पहले से उपलब्ध थीं। ऐसे में कुल 150 मशीनों में से 100 मशीनें ही काम कर रही हैं।

डीपीएस की टक्कर के स्कूल खोलेगा बोर्ड

नई दिल्ली : दिल्ली वक्फ बोर्ड गरीब बच्चों के लिए इसी सत्र से 16 स्कूल शुरू करेगा। आठवीं तक खुलने वाले ये स्कूल नामी-गिरामी स्कूलों को टक्कर देंगे। इन स्कूलों में अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाई होगी। यहां पढ़ने वाले बच्चों से कोई फीस नहीं ली जाएगी। उनको स्कूल की ओर से ही मिड-डे मील भी दिया जाएगा। दिल्ली वक्फ बोर्ड ने गरीबों के लिए मुफ्त शिक्षा दिए जाने की योजना बनाई है। इस योजना के तहत वक्फ बोर्ड दिल्ली भर में 250 स्कूल खोलेगा।

सोना तस्करी में एयरपोर्ट कर्मी सहित दो पकड़े गए

जासं, नई दिल्ली : आइजीआइ एयरपोर्ट पर सीआइएसएफ ने सोने की तस्करी में एयर इंडिया की ग्राउंड हैंडलिंग एजेंसी के एक कर्मचारी सहित दो लोगों को दबोच लिया। उनके पास से सोने के सात बिस्कुट मिले हैं। 820 ग्राम भार के सोने की कीमत 29 लाख रुपये आंकी गई है।

सीआएसएफ के प्रवक्ता हेमेंद्र सिंह ने बताया कि तीन अगस्त की सुबह टर्मिनल-3 पर बल की सर्विलांस टीम ने दो संदिग्ध लोगों को देखा। इनमें एक एयरपोर्ट कर्मी धर्मवीर और दूसरा एयर इंडिया की उड़ान से दम्माम से आया यात्री मैनलाल मीणा था। धर्मवीर विमान यात्री का सहयोग कर रहा था। यात्री ने बाहर जाने के लिए कार पार्क की, जबकि कर्मी प्रस्थान गेट की ओर जाने लगा। टिकटिंग एरिया में पहुंचते ही सीआइएसएफ के जवानों ने पहले धर्मवीर को दबोच उसकी तलाशी ली तो उसके पास से सोने के तीन बिस्कुट बरामद हुए। उसने कुर्सी में सोना छिपा रखा था। बाद में यात्री की जांच की गई तो उसके पास से भी सोने के चार बिस्कुट बरामद हुए।

2000 रेलवे स्टेशनों पर निशुल्क वाईफाई की सुविधा उपलब्ध है। रेलटेल के सीएमडी पुनीत चावला ने शनिवार को बताया कि राजस्थान में अजमेर मंडल का राणा प्रताप नगर रेलवे स्टेशन निशुल्क वाईफाई सुविधा वाला देश का 2000वां स्टेशन बन गया है।

भाजपा विचारधारा के बल पर यहां तक पहुंची : मोदी

मंत्र ▶ पीएम ने सांसदों को कार्यकर्ताओं से दूर न होने की दी नसीहत

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

भाजपा सांसदों को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने साफ किया कि पार्टी किसी परिवार के बल पर नहीं, बल्कि अपनी विचारधारा और सोच के बल पर इस मुकाम तक पहुंची है। सांसदों को पार्टी के कार्यकर्ताओं के लगातार संपर्क में रहने की सलाह देते हुए उन्होंने कहा कि उनकी बदौलत ही वे यहां तक पहुंच पाए हैं। दोनों सदनों के भाजपा सांसदों के लिए दो दिन के अभ्यास सत्र में नरेंद्र मोदी, पार्टी अध्यक्ष व गृहमंत्री अमित शाह, कार्यकारी अध्यक्ष जेपी नड्डा समेत भाजपा के सभी वरिष्ठ नेता मौजूद थे।

संसद परिसर स्थित बालयोगी सभागार में दो दिन के अभ्यास सत्र का उद्घाटन करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने करीब 380 से अधिक भाजपा सांसदों को संबोधित किया। उन्होंने पार्टी कार्यकर्ताओं की तुलना मां से की, जो बेटे को बड़े जतन से बड़ा करती है। लेकिन जब शादी के बाद बेटा पत्नी पर ज्यादा ध्यान देने लगता है, तो वह खुद को उपेक्षित महसूस करने लगती है। उन्होंने कहा कि इसीलिए एक बार सांसद बनने के बाद उन्हें कभी पार्टी और उसके कार्यकर्ताओं को नहीं भूलना चाहिए। उन्हें उन कार्यकर्ताओं के साथ चाहे चुनाव हो या न हो लगातार संपर्क में रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि पार्टी को यहां तक पहुंचाने में कार्यकर्ताओं के अथक परिश्रम की अहम भूमिका रही है। संसदीय कार्यमंत्री प्रह्लाद जोशी के अनुसार प्रधानमंत्री मोदी कहा कि हमें अपने भीतर के कार्यकर्ता को हमेशा जिंदा रखना चाहिए। उन्होंने भाजपा को एक जीवंत संगठन बताते हुए कहा कि यह जोड़-तोड़कर बनाया गया संगठन नहीं है। प्रधानमंत्री ने अभ्यास सत्र की अहमियत को बताते हुए कहा कि उन्होंने सूरजकुंड में हुए एक ऐसे अभ्यास सत्र में भाग लिया था और उसका उन्हें काफी फायदा हुआ। उन्होंने सांसदों को लगातार सीखते रहने की सीख देते हुए कहा कि यह एक नियमित प्रक्रिया है और उम्र से इसका कोई संबंध नहीं है। उद्घाटन सत्र के बाद भाजपा सांसदों का अभ्यास सत्र शुरू हुआ। सभी सांसदों को 15-15 के ग्रुप में बांटकर मंत्रियों के साथ उनकी बैठक हुई। रविवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह सांसदों को संबोधित करेंगे।

पीछे बैठे पीएम मोदी : शनिवार को नई दिल्ली में भाजपा सांसदों के दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला 'अभ्यास वर्ग' में प्रधानमंत्री मोदी कुछ पंक्तियां पीछे बैठे नजर आए। दरअसल प्रधानमंत्री मोदी इस कार्यशाला में वाराणसी के सांसद के तौर पर शामिल हुए। इसलिए वह बाकी सांसदों के साथ बैठे। प्रेट्र

जयशंकर ने ईरान में बंधक जहाज में फंसे भारतीयों की जल्द वापसी का भरोसा दिया

नई दिल्ली, एएनआइ : विदेश मंत्री एस.जयशंकर ने कहा है कि होर्मुज स्ट्रेट ईरानी सैनिकों के हाथों बंधक बनाए गए ब्रिटिश टैंकर पर सवार 18 भारतीयों को भारत सरकार जल्द मुक्त कराने के लिए तेजी से कार्य कर रही है। यह 18 भारतीय ब्रिटिश तेल टैंकर पर चालक दल के सदस्य हैं।

विदेश मंत्री जयशंकर ने शनिवार को ट्विटर पर बताया कि वह स्टेना इंपेरो नाम के जहाज में फंसे चालक दल के 18 भारतीय सदस्यों की जल्द रिहाई पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। तेहरान स्थित भारतीय दूतावास के अफसरों ने इन भारतीयों से मुलाकात की है। उनकी सेहत अच्छी है और उनके पास सभी जरूरी सामान उपलब्ध हैं। इस मसले को सुलझाने के लिए हम लगातार ईरानी प्रशासन के संपर्क में हैं।

जयशंकर ने यह ताजा जानकारी ट्विटर पर तब साझा की जब तमिलनाडु के मुख्यमंत्री के.पलानीस्वामी ने केंद्र और विदेश मंत्रालय को बताया कि ब्रिटिश जहाज में 18 अन्य भारतीय चालक दल के सदस्यों के अलावा चेन्नई के आदित्य वासुदेवन (27) भी मौजूद थे। पलानीस्वामी ने अपने पत्र में लिखा कि वासुदेवन उस जहाज पर बतौर थर्ड आफिसर तैनात थे। यह जहाज फुजारिया, यूएई से होता हुआ जुबेल, सऊदी अरब जा रहा था। तभी 19 जुलाई को ईरानी सेना ने होर्मुज में इस जहाज को अपने कब्जे में ले लिया था। वासुदेवन के पिता ने उसकी जल्द रिहाई के लिए तमिलनाडु सरकार से गुहार लगाई है। उल्लेखनीय है कि भारत ने हाल ही में जहाज के चालक दल के 18 भारतीय सदस्यों को काउंसलर एक्सेस दिया है।

पता था मध्यस्थता समिति नाकाम रहेगी महाभारत के पहले भी हुई थी : योगी

जागरण संवाददाता, अयोध्या

छह अगस्त से रामजन्मभूमि-बाबरी मस्जिद विवाद की नियमित सुनवाई को लेकर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को खासी उम्मीदें हैं। उन्होंने विश्वास जताया कि 30 सितंबर 2010 को इलाहाबाद हाई कोर्ट ने जो आदेश दिया था, सुप्रीम कोर्ट उसका परिमार्जन करने के साथ जनभावनाओं का सम्मान करेगा। इसी के साथ ही उन्होंने विवाद के हल के लिए गठित मध्यस्थता समिति की नाकामी पर भी तंज कसा। बोले, हम लोग पहले से जानते थे कि मध्यस्थता के लिए बनी तीन सदस्यीय समिति कुछ नहीं कर पाएगी। महाभारत के पहले भी मध्यस्थता के प्रयास हुए थे, लेकिन उन्हें भी सफलता नहीं मिली थी।

मंदिर-मस्जिद विवाद की नियमित सुनवाई से मुख्यमंत्री को खासी उम्मीदें

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ मंदिर आंदोलन के पर्याय रहे रामचंद्रदास परमहंस को उनकी 16वीं पुण्यतिथि पर दिगंबर अखाड़ा में श्रद्धांजलि दे रहे थे। इसी के साथ ही मुख्यमंत्री ने रामनगरी से जुड़ी अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। उन्होंने साफ कहा कि हम अयोध्या का पुरातन गौरव लौटाकर ही दम लेंगे। इसके लिए हम पूरी कोशिश कर रहे हैं।

अयोध्या का विकास मंदिर निर्माण की भूमिका जैसा : मुख्यमंत्री ने अयोध्या के कायाकल्प की दृष्टि से संचालित विभिन्न विकास कार्यों का जिक्र करते हुए कहा कि ये विकास कार्य राम मंदिर निर्माण की भूमिका सरीखे हैं। मुख्यमंत्री ने सबसे ऊंची प्रतिमा के रूप में भगवान राम की प्रतिमा के साथ प्रस्तावित संग्रहालय का भी जिक्र किया। कहा, हम चाहते हैं कि मनु से लेकर इक्ष्वाकु वंश के सभी राजाओं का संग्रहालय बने। भगवान राम के जीवन को डिजिटल माध्यम से अयोध्या आने वाले लोग देखें और अनुभव करें। इससे पूर्व उन्होंने 275 लाख रुपये की लागत से निर्मित परमहंस रामचंद्रदास बहुउद्देशीय हाल का लोकार्पण किया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पूर्ववर्ती सरकारों पर अयोध्या की उपेक्षा और छवि खराब करने का आरोप भी लगाया। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार अयोध्या का पुरातन गौरव लौटाने के लिए हम हरसंभव कोशिश कर रहे हैं और इसका प्रभाव भी दिखने लगा है।

अयोध्या स्थित दिगंबर अखाड़ा में विचार व्यक्त करते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ। जागरण

प्रवर्तन निदेशालय ने प्रताड़ित करने के गवाह के आरोप नकारे

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : अगस्ता वेस्टलैंड मामले में मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री कमलनाथ के भांजे रतुल पुरी के खिलाफ बयान लेने के लिए गवाह महिपाल सिंह को प्रताड़ित करने के आरोपों को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने खारिज कर दिया। हालांकि अदालत ने गवाह की अर्जी को मंजूर करते हुए कहा कि इसे मुख्य केस के साथ सितंबर में सुना जाएगा।

महिपाल ने शुक्रवार को अचानक अदालत में अर्जी देकर ईडी पर प्रताड़ित करने का आरोप लगाया था। शनिवार को राउज एवेन्यू की विशेष अदालत में सुनवाई के दौरान ईडी ने कहा कि महिपाल के आरोपों में कोई सच्चाई नहीं है। उसने सवालों का जो जवाब दिया है, उससे प्रताड़ित करने जैसा कुछ प्रतीत नहीं होता। महिपाल ने सवालों के जवाब में कहा कि उसे नहीं पता, वह नहीं जानता। अब अगर उस पर दबाव बनाया गया होता तो क्या इस तरह के जवाब उसके नाम से दर्ज किए जाते? ईडी ने कहा कि इससे सिर्फ अदालत का समय खराब हो रहा है। लिहाजा उसकी अर्जी को खारिज कर देना चाहिए। वहीं, महिपाल के वकील ने अदालत में कहा कि इस प्रकरण की शिकायत राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग में भी की जाएगी।

विधायकों की नाराजगी दूर करेंगे कैप्टन

राज्य ब्यूरो, चंडीगढ़

पंजाब के मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह कांग्रेस विधायकों की नाराजगी को पांच अगस्त को दूर करेंगे। उन्होंने सभी विधायकों को सोमवार को पंजाब भवन में डिनर पर बुलाया है। पता चला है कि डिनर से पहले वह बैठक करेंगे और विधायकों द्वारा उठाए गए मुद्दों पर सरकार की रणनीति की जानकारी देंगे। उल्लेखनीय है कि शुक्रवार को विधायक दल की बैठक में बरगाड़ी में श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बेअदबी, ड्रग्स आदि मुद्दों पर सरकार की ढीली कारगुजारी को लेकर विधायकों की नाराजगी खुलकर सामने आई थी।

अमरिंदर सिंह फाइल

कैप्टन के मीडिया सलाहकार रवीन ठुकराल ने इसे अनौपचारिक बैठक बताया है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री हर साल विधायकों को डिनर पर बुलाते हैं। पिछले साल भी इस तरह की बैठक हुई थी। यह ठीक है कि पिछले साल भी विधायकों को रात्रि भोज पर बुलाया गया था, लेकिन इस बार मसला अलग है। दरअसल, विधायक श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बेअदबी को लेकर ढीली चल रही जांच से नाराज हैं। कोटकपूरा व बहिबलकलां गोलीकांड में वे चाहते हैं कि पूर्व मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल, पूर्व उपमुख्यमंत्री व अकाली दल के अध्यक्ष सुखबीर सिंह बादल और पूर्व डीजीपी सुमेध सैणी के खिलाफ कार्रवाई की जाए।

सीबीआइ की रिपोर्ट पर अदालत के रुख का इंतजार : श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बेअदबी मामले में सीबीआइ की ओर से मोहाली की अदालत में दी गई क्लोजर रिपोर्ट का असर सरकार द्वारा गठित की गई विशेष जांच दल (एसआइटी) की जांच पर भी पड़ने की संभावना है। फिर भी सरकार को मोहाली की विशेष सीबीआइ अदालत के रुख का इंतजार है। उधर, सरकार ने सीबीआइ डायरेक्टर को पत्र लिखकर इसकी जांच फिर से शुरू करने के बारे में कहा है। याद रहे कि कैप्टन अमरिंदर सिंह ने सीबीआइ की क्लोजर रिपोर्ट को खारिज कर दिया था। इसके बाद पंजाब के एडवोकेट जनरल अतुल नंदा ने यह कहते हुए सीबीआइ की क्लोजर रिपोर्ट को गलत बताया था कि जब सरकार ने सीबीआइ से ये केस वापस ले लिए थे तो उस पर क्लोजर रिपोर्ट क्यों दी गई।

सिद्धू के विधानसभा सत्र में आने के आसार कम

राज्य ब्यूरो, चंडीगढ़ : पंजाब के पूर्व कैबिनेट मंत्री नवजोत सिंह सिद्धू के विधानसभा सत्र में शामिल होने के आसार काफी कम हैं। शुक्रवार को भी वह विधानसभा में नहीं आए थे। अब सोमवार और मंगलवार को दो दिन का सत्र बाकी है, जिसमें उनके आने की उम्मीद न के बराबर है। उनके करीबी दोस्त और विधायक परगट सिंह पिछले दिनों उनसे मिलने गए थे। उन्होंने बताया कि उनकी सिद्धू से सत्र को लेकर तो कोई बात नहीं हुई, लेकिन उनके मूड से ऐसा लग रहा था कि वह सत्र में आने को लेकर राजी नहीं हैं। परगट सिंह के अलावा डॉ. राजकुमार वेरका भी सिद्धू से मिलकर आए हैं। सिद्धू किसी को भी अपना मन नहीं बता रहे हैं। गौरतलब है कि पिछले दिनों मंत्री पद से इस्तीफा देने के बाद नवजोत सिंह सिद्धू अपना सरकारी आवास खाली करके अपने हलके अमृतसर में ही रह रहे हैं। वह केवल स्थानीय नेताओं और वर्करों के साथ ही मिल रहे हैं। विधानसभा में उनकी सीट मंत्रियों की सीट के साथ ही लगाई गई है। उनकी सीट दूसरी कतार में राकेश पांडे के साथ वाली बेंच पर तय की गई है।

जदएस नेता कुमारस्वामी ने दिए राजनीति छोड़ने के संकेत

हासन (कर्नाटक), एएनआइ : कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री और जदएस नेता एचडी कुमारस्वामी ने शनिवार को राजनीति छोड़ने का संकेत दिया। कुमारस्वामी ने 'दुर्घटनावश' मुख्यमंत्री बनने की बात कही और बोले राजनीति अच्छे लोगों के लिए नहीं है। यहां पर जातिवाद का बोलबाला है।

मीडिया से बात करते हुए उन्होंने कहा, 'मैं राजनीति से अलग होने के बारे में सोच रहा हूं। 'दुर्घटनावश' ही मुख्यमंत्री बन गया था। भगवान ने मुझे दो बार मुख्यमंत्री बनने का अवसर दिया। मैं किसी को संतुष्ट नहीं कर पाया, लेकिन 14 महीनों के शासनकाल में राज्य के विकास के लिए अच्छा काम किया।'

उन्होंने कहा, 'वर्तमान दौर में राजनीति जहां जा रही है, उसके मुताबिक यह अच्छे लोगों के लिए नहीं है। मेरे परिवार को इसमें मत लाओ। बस बहुत हुआ अब और नहीं। मुझे चैन से जीने दो। मुझे राजनीति में नहीं रहना है। मैं लोगों के दिलों में जगह बनाना चाहता हूं।' जदएस नेता ने कहा कि उनके पिता एचडी देवेगौड़ा तुमकुरु संसदीय क्षेत्र से चुनाव हारने के बाद भी पार्टी को खड़ा करने के लिए दिनरात एक किए हुए हैं। बता दें कि गठबंधन सरकार द्वारा विश्वास मत हासिल नहीं करने के बाद कुमारस्वामी ने 26 जुलाई को कर्नाटक के मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया था। उनके इस्तीफे के बाद येदियुरप्पा ने राज्य के नए मुख्यमंत्री के तौर पर शपथ ली थी।

एचडी कुमारस्वामी फाइल फोटो

कहा, यह अच्छे लोगों के लिए नहीं, यहां जातिवाद का बोलबाला है

मैं किसी को संतुष्ट नहीं कर सका लेकिन 14 महीनों के शासनकाल में राज्य के विकास के लिए अच्छा काम किया

तीन नए विधेयक लाने की तैयारी में सरकार

नई दिल्ली, एएनआइ : संसद के चालू सत्र के बाकी तीन दिनों में सरकार तीन नए विधेयक लाने की तैयारी में है। इनमें सुप्रीम कोर्ट में मुख्य न्यायाधीश समेत जजों की कुल संख्या 31 से 34 करने संबंधी विधेयक भी शामिल है। नए विधेयकों समेत सरकार प्राथमिकता वाले कुल नौ विधेयकों को चालू सत्र में पारित कराने का लक्ष्य लेकर चल रही है।

प्रधान न्यायाधीश रंजन गोगोई ने 22 जून को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखकर सर्वोच्च न्यायालय में जजों की संख्या बढ़ाने का आग्रह किया था। सत्र के बाकी बचे दिनों में सरकार इस संबंध में विधेयक लाएगी। जम्मू-कश्मीर में सामान्य श्रेणी के आर्थिक रूप से पिछड़े लोगों के लिए 10 फीसद आरक्षण संबंधी जम्मू-कश्मीर आरक्षण (दूसरा संशोधन) विधेयक और चिट फंड्स (संशोधन) विधेयक भी तीन नए विधेयकों में शामिल हैं। 17वीं लोकसभा के पहले सत्र की शुरुआत 17 जून को हुई थी। सत्र 26 जुलाई को समाप्त होना था, लेकिन इसे बढ़ाकर सात अगस्त तक कर दिया गया है। संसदीय कार्य मंत्री प्रह्लाद जोशी ने गुरुवार को उम्मीद जताई थी कि उत्पादकता और विधेयक पारित होने की दृष्टि से यह सत्र नया रिकॉर्ड बनाएगा।

इस साल किसी भी आइआइटी में खाली नहीं बची सीट

नई दिल्ली, प्रेट्र : इस साल भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों (आइआइटी) की सभी 13,604 स्नातक सीटों पर प्रवेश हुए हैं। यह पहला मौका है जब देश के किसी भी आइआइटी में एक भी सीट खाली नहीं बची है। यह जानकारी मानव संसाधन विकास मंत्रालय के उच्चतर शिक्षा सचिव आर सुब्रह्मण्यम ने दी। पिछले साल देश के 23 आइआइटी में 118 सीटें खाली रह गई थीं, तब मानव संसाधन मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने कहा था कि छात्रों द्वारा रुचि नहीं दिखाने के चलते यह सीटें खाली रह गई हैं। इसके लिए उन्होंने आने वाले समय में समीक्षा करने के निर्देश दिए थे।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार 2013 में देश के सभी आइआइटी में कुल मिलाकर 11,000 सीटें थीं, लेकिन 274 सीटें खाली रह गई थीं। आइआइटी बीएचयू ऐसा संस्थान था, जहां पर सबसे अधिक सीटें खाली रही थीं। 2016 में आइआइटी का दर्जा पाए द इंडियन स्कूल ऑफ माइंस, धनबाद में 2016 और 2017 में 23 सीटें खाली रह गई थीं। हालांकि आइआइटी कानपुर और आइआइटी हैदराबाद की बात करें तो यहां 2013 से 2017 के बीच एक भी सीट रिक्त नहीं रही। आइआइटी दिल्ली में 2013 से 2015 के बीच कोई सीट खाली नहीं रही थी, लेकिन 2016 और 2017 में दो-दो सीटें खाली रह गई थीं। जहां तक आइआइटी बांबे की बात है तो 2013, 2014 और 2015 में यहां एक भी सीट रिक्त नहीं बची थी, लेकिन 2016 और 2017 में दो-दो सीटें खाली रह गई थीं।

सभी 13,604 स्नातक सीटों पर छात्रों ने लिया दाखिला

पिछले साल 23 आइआइटी में 118 सीटें खाली रह गई थीं

मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा गठित समिति ने की थी सिफारिश : दरअसल, वर्ष 2014 को छोड़कर देश के प्रतिष्ठित तकनीकी संस्थानों में पांच सालों के दौरान सीटें खाली रहने के मामले को गंभीरता से लेते हुए मानव संसाधन मंत्रालय ने 2017 में एक समिति का गठन किया था। समिति ने कई सिफारिशें की थीं। इसमें रोजगार के अवसरों, राष्ट्रीय आवश्यकता, उपलब्ध बुनियादी ढांचे और भविष्य को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक स्ट्रीम में सीटों का निर्धारण करना। साथ ही काउंसलिंग प्रक्रिया को और अधिक सुव्यवस्थित करने का सुझाव दिया था।

झारखंड में बंद होगी कांग्रेस नेताओं की बयानबाजी, दोनों गुट हुए राजी

राज्य ब्यूरो, रांची

झारखंड प्रदेश कांग्रेस की अंतर्कलह समाप्त हो या न हो, लेकिन फिलहाल विरोध और बयानबाजी का दौर जरूर खत्म होगा। आलाकमान के निर्देश के बाद पार्टी के केंद्रीय स्तर के वरिष्ठ नेताओं ने दोनों गुटों को एक-दूसरे का खुलेआम विरोध न करने और पब्लिक फोरम पर बयानबाजी बंद करने के लिए तैयार कर लिया है। तय किया गया है कि चुनाव तक प्रदेश कांग्रेस की पूरी टीम अलग-अलग ही सही, लेकिन एक उद्देश्य से फील्ड में मूव करेगी। झारखंड में विधानसभा चुनाव को देखते हुए राष्ट्रीय नेतृत्व परिवर्तन की बातों को फिलहाल नकार रहा है। फिलहाल इस बात की पूरी संभावना है कि चुनाव तक झारखंड कांग्रेस की टीम जस की तस बनी रहे। 11 अगस्त को राष्ट्रीय कार्यसमिति की बैठक में इसपर अंतिम फैसला होगा।

शनिवार को नई दिल्ली में झारखंड प्रदेश कांग्रेस की दो राउंड बैठक हुई, जिसमें राष्ट्रीय महामंत्री केसी वेणुगोपाल, प्रदेश कांग्रेस प्रभारी आरपीएन सिंह, सह प्रभारी उमंग सिंघार मौजूद थे। बैठक में सभी वरिष्ठ नेताओं से उनकी राय मांगी गई और साफ तौर पर कहा गया कि अभी सार्वजनिक तौर पर बयानबाजी बंद करनी होगी। इसके लिए दोनों गुट के वरिष्ठ नेता लगभग तैयार हो गए हैं। तीनों शीर्ष नेताओं ने अपनी रिपोर्ट शाम 6.30 बजे कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व को सौंप दी।

राष्ट्रीय नेतृत्व प्रदेश कार्यकारिणी में बदलाव को लेकर असमंजस में, चुनाव पूर्व गलत संदेश जाने का अंदेशा

11 अगस्त को राष्ट्रीय कार्यसमिति में होगी चर्चा, फिलहाल नहीं दिखे बदलाव के आसार

कांग्रेस सूत्रों की मानें तो पार्टी का राष्ट्रीय नेतृत्व इस बात के लिए भी प्रदेश के नेताओं को तैयार करने में जुटा है कि विधानसभा चुनाव तक किसी प्रकार का परिवर्तन न किया जाए। मुख्य विपक्षी दल झारखंड मुक्ति मोर्चा से कांग्रेस के बेहतर संबंधों को इसका आधार बताया जा रहा है। इस बीच, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष डॉ. अजय कुमार, पूर्व केंद्रीय मंत्री सुबोधकांत सहाय, फुरकान अंसारी, ददई दुबे, प्रदीप बलमुचु आदि नेता अपने- अपने स्तर से केंद्रीय नेताओं के संपर्क में हैं और तर्कों के साथ अपनी बात रख रहे हैं।

दिल्ली पहुंचने वालों में अजय कुमार के विरोधी अधिक : प्रदेश कांग्रेस के दोनों खेमे अपने-अपने समर्थकों के साथ दिल्ली में कैंप किए हुए हैं। हालांकि दिल्ली पहुंचे लोगों में डॉ. अजय कुमार के विरोधी अधिक बताए जा रहे हैं। प्रदेश के पांच में से तीन जोनल को-ऑर्डिनेटर भी इनके विरोध में हैं। पुराने नेताओं में सुखदेव भगत, आलमगीर आलम समेत चंद ऐसे नेता भी हैं जो दोनों गुटों से बराबर दूरी बनाए हुए हैं। दूसरी ओर, प्रदेश कांग्रेस की टीम और जिलाध्यक्षों का भारी-भरकम सपोर्ट डॉ. अजय कुमार को है।

गुरुवार को हुई थी दोनों गुटों में भिड़ंत : गुरुवार को सुबोधकांत सहाय गुट के दो नेताओं ने प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय में प्रेस कांफ्रेंस करने की बात कही थी। दोनों को पूर्व में ही पार्टी से निष्कासित कर दिया गया था और इस कारण से प्रदेश अध्यक्ष के समर्थकों ने उन्हें कार्यालय परिसर में प्रवेश नहीं करने दिया। यहां पहली बार प्रदेश अध्यक्ष का गुट मजबूत दिखा। इसके पूर्व दो बार प्रदेश अध्यक्ष की फजीहत सुबोधकांत सहाय के गुट के हाथों हो चुकी थी।

मनमोहन वैद्य ने कहा, भारत का शब्द नहीं है असहिष्णुता

जागरण संवाददाता, जयपुर

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह डॉ. मनमोहन वैद्य का मानना है कि भारत, भारत रहना चाहिए, क्योंकि भारत एक विचार है। भारत का एक व्यक्तित्व व एक स्वभाव है। असहिष्णुता भारत का शब्द या विचार नहीं है। जयपुर में संघ से जुड़ी संस्था विश्व संवाद केंद्र की ओर से आयोजित सोशल मीडिया कॉन्क्लेव की पूर्वसंध्या पर हुए भारत बोध कार्यक्रम में शुक्रवार रात वैद्य ने यह बात कही।

उन्होंने कहा कि भारत सर्वसमावेशी है। पूरी दुनिया में प्रताड़ित यहूदी, पारसी, क्रिश्चियन आदि ने हमारे देश में आकर शरण ली, जिन्हें हमने अपनाया। कुछ समय पूर्व लोगों ने असहिष्णुता जैसे अभियान चलाए, लेकिन असहिष्णुता भारत का शब्द नहीं है। विवेकानंद ने कहा था कि कोई भी व्यक्ति किसी भी विचार को मान सकता है, ऐसा सिर्फ सनातन संस्कृति में ही संभव है। अनेकता में एकता ही हमारे देश का धर्म है। यही हमारी संस्कृति है। भारत के मुसलमान को समझने की जरूरत है कि हमारे वंशज एक ही हैं।

तीन दिवसीय इस कॉन्क्लेव का उद्घाटन शनिवार को फिल्म निर्माता निर्देशक विवेक अग्निहोत्री ने किया। अग्निहोत्री ने कहा कि मॉब लिंचिंग (उन्मादी भीड़ की हिंसा) का भाव हमारे यहां हमेशा से रहा है। लोगों का न्याय व्यवस्था में भरोसा नहीं है। हमारी व्यवस्थाओं ने और हमारी फिल्मों ने यह भाव उसमें पैदा किया है, इसलिए वह निजी न्याय में भरोसा करता है और जब भी मौका मिलता है, बिना सोचे समझे उन्मादी भीड़ का हिस्सा बन जाता है। अग्निहोत्री ने कहा कि समाज की रचनात्मकता हमारी शिक्षा व्यवस्था ने खत्म कर दी, जो सिर्फ क्लर्क पैदा करती है। हमारे दिन का सबसे रचनात्मक समय हम अपने ऑफिस में रूटीन काम करते हुए निकाल देते हैं। जबकि हमें करना वही चाहिए जो हम करना चाहते हैं।

भारत बोध कार्यक्रम को संबोधित करते डॉ. मनमोहन वैद्य। जागरण

दो टूक

महाराष्ट्र के 288 विधानसभा सीटों में से कांग्रेस को सिर्फ 40 सीटें देने को राजी हैं वंचित बहुजन आघाड़ी के अध्यक्ष, कहा- इस माह के अंत तक बता दें अपनी स्थिति, अन्यथा सभी सीटों पर अपने उम्मीदवार घोषित करेंगे

कांग्रेस की फिर बांह मरोड़ने लगे प्रकाश आंबेडकर

ओमप्रकाश तिवारी, मुंबई

महाराष्ट्र में वंचित बहुजन आघाड़ी (वीबीए) के अध्यक्ष प्रकाश आंबेडकर ने विधानसभा चुनाव से पहले एक बार फिर कांग्रेस की बांहें मरोड़नी शुरू कर दी हैं। उन्होंने साफ कर दिया है कि यदि कांग्रेस राज्य की 288 विधानसभा सीटों में से 40 पर लड़ने को राजी हो तो इस माह के अंत तक बता दे, अन्यथा वह सभी सीटों पर अपने उम्मीदवार घोषित कर देंगे।

इस तरह की चेतावनी उन्होंने लोकसभा चुनाव से पहले भी कांग्रेस को दी थी। तब उन्होंने अपनी मूल पार्टी भारिप बहुजन महासंघ के लिए कांग्रेस से 12 सीटें मांग थीं, लेकिन जल्द ही अपनी मांग बढ़ाकर 22 सीट कर दी थी। फिर कांग्रेस को दिया गया समय पूरा होने से पहले ही अपने उम्मीदवार घोषित करने शुरू कर दिए और असदुद्दीन ओवैसी की एमआइएम के साथ मिलकर एक नई पार्टी वंचित बहुजन आघाड़ी का गठन कर डाला। यह पार्टी महाराष्ट्र की सभी 48 लोकसभा सीटों पर चुनाव लड़ी और कांग्रेस-राकांपा को करीब 15 सीटों पर नुकसान पहुंचाया। वंचित बहुजन आघाड़ी को 41 लाख से ज्यादा वोट मिले, जो कुल पड़े मतों का 7.63 फीसद थे। इसके बाद से पार्टी के नेताओं और कार्यकर्ताओं को जोश काफी बुलंद है। वे आगामी विधानसभा चुनाव में भी ऐसे ही प्रदर्शन की उम्मीद कर रहे हैं।

प्रकाश आंबेडकर फाइल फोटो

अपनी पार्टी को भाजपा की बी टीम कहे जाने से खफा हैं प्रकाश

प्रकाश आंबेडकर अपनी पार्टी को भाजपा की बी टीम कहे जाने से भी नाराज हैं। उन्हें यह तमगा कांग्रेस की तरफ से ही दिया गया था। कांग्रेस के प्रदेश प्रवक्ता सचिन सावंत ने हाल ही में एक बयान देकर कहा था कि विधानसभा चुनाव में कांग्रेस के साथ गठबंधन करके प्रकाश आंबेडकर यह सिद्ध कर सकते हैं कि वह भाजपा की बी टीम नहीं हैं। अब आंबेडकर इस बात पर भी अड़े हैं कि कांग्रेस पहले स्पष्टीकरण दे कि क्या वह अब भी उनकी पार्टी वीबीए को भाजपा की बी टीम मानती है?

कांग्रेस ने दिया था धर्मनिरपेक्ष मोर्चे में शामिल होने का प्रस्ताव : कांग्रेस ने वंचित बहुजन आघाड़ी को मिले इतने मतों की धमक महसूस भी की है। तभी कांग्रेस के नवनियुक्त प्रदेश अध्यक्ष बालासाहब थोराट ने पद संभालते ही प्रकाश आंबेडकर को पत्र लिखकर कहा कि हाल के चुनाव परिणामों से पता चलता है कि वंचित बहुजन आघाड़ी के वोट काटने से किस प्रकार शिवसेना-भाजपा जैसी पार्टियों को फायदा पहुंचा। इसलिए आपके संगठन को विधानसभा चुनाव में धर्मनिरपेक्ष मोर्चे का हिस्सा बनना चाहिए। प्रकाश आंबेडकर ने संभवतः कांग्रेस अध्यक्ष के इसी पत्र का जवाब देते हुए कहा है कि गेंद अब कांग्रेस के पाले में है। अब उसकी ताकत कम हो चुकी है। इसलिए वह कांग्रेस को 40 सीटों से ज्यादा देने को तैयार नहीं है। यदि कांग्रेस इतनी सीटों पर लड़कर वीबीए से गठबंधन करना चाहती है, तो अगस्त के अंत तक बता दे, अन्यथा वह अपने घोषित किए उम्मीदवार वापस नहीं लेंगे।

...तो राकांपा का क्या होगा : यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि कांग्रेस से गठबंधन की बात करते हुए प्रकाश आंबेडकर कहीं भी शरद पवार की राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) का नाम तक नहीं ले रहे हैं। यानी कांग्रेस यदि वंचित बहुजन आघाड़ी के साथ जाना चाहती है, तो उसे राकांपा का साथ भी छोड़ना पड़ेगा। ऐसे में कांग्रेस फिलहाल दुविधा में दिख रही है।

कह के रहेंगे माधव जोशी

50 युवकों ने वर्ष 2019 में मार्च से जून के बीच आतंक की राह पकड़ी है घाटी में। 2018 में कश्मीर में 201 तो 2017 में 135 स्थानीय युवकों ने हथियार उठाए थे।

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
रविवार 4 अगस्त 2019

पचास हजार पर्यटक, श्रद्धालु व कामगारों को घाटी से बाहर भेजा

एहतियात ▶ प्रशासन ने लोगों को निकालने में नागरिक विमानों के अलावा वायुसेना की भी मदद ली

प्रशासन का दावा, 20 हजार पर्यटक, श्रद्धालु व 30 हजार श्रमिक लौटे

राज्य ब्यूरो, श्रीनगर

राज्य प्रशासन की सलाह के बाद पर्यटकों और अमरनाथ श्रद्धालुओं से एक दिन पहले तक गुलजार नजर आ रही कश्मीर घाटी शनिवार को वीरान हो गई। श्री अमरनाथ यात्रा रुक जाने के बाद लगभग 20 हजार पर्यटकों और श्रद्धालुओं के अलावा 30 हजार के करीब प्रवासी मजदूर भी रातों-रात अपने घरों की ओर लौट गए। जो बचे हैं, वे भी सामान समेट रहे हैं। श्रीनगर से किसी भी नागरिक विमान में कोई सीट खाली नहीं थी। ऐसे में वायुसेना की भी मदद ली गई। वायुसेना के विमान ने दो उड़ानों में 300 पर्यटकों व श्रद्धालुओं को सुबह कश्मीर से जम्मू और चंडीगढ़ पहुंचाया। वहीं, होटलों और हाउसबोटों में पुलिसकर्मी जाकर पर्यटकों को एडवाइजरी के बारे में बता रहे हैं।

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआइटी) में पांच अगस्त से 10 दिवसीय अवकाश घोषित कर दिया गया है। अन्य राज्यों के छात्रों को एयरपोर्ट, टैक्सी-बस स्टैंड या फिर जम्मू पहुंचाने के लिए राज्य परिवहन निगम की गाड़ियां कैंपस में ही पहुंच गईं। यहां से करीब 600 छात्रों ने अपने घरों की राह पकड़ी है। दोपहर तक एनआइटी परिसर खाली हो गया। श्रीनगर स्थित कश्मीर विश्वविद्यालय, पॉलीटेक्निकल कॉलेज और विभिन्न कॉलेजों में भी प्रशासन ने छात्रों को हॉस्टल खाली करने का निर्देश दे दिया है। स्कूल-कॉलेज खुले, लेकिन छात्रों की संख्या नाममात्र रही।

जम्मू-कश्मीर में अतिरिक्त सुरक्षा बलों की तैनाती के साथ गर्म अफवाहों के बीच अमरनाथ यात्री, पर्यटक और बाहरी छात्र घाटी छोड़ने लगे हैं। शनिवार को श्रीनगर में अनेक विदेशी पर्यटक भी डल झील में शिकारा का आनंद लेने के बाद यहां से पलायन कर गए। रायटर

किसी बड़े संकट की आशंका से घबराए स्थानीय लोग राशन व अन्य जरूरी सामान जमा करने में लगे हैं। पेट्रोल पंपों पर लंबी-लंबी कतारें दिखीं। कई लोग घरों में रसोई गैस सिलेंडर जमा कर रहे हैं। कुछ ने छह माह का राशन एकत्र कर लिया है।

कुछ पर्यटक ट्रैकिंग पर गए हैं, उन्हें भी वापस भेजा जाएगा : पर्यटन निदेशक कश्मीर निसार अहमद वानी ने कहा कि शुक्रवार को वादी में लगभग 22 हजार पर्यटक थे। गृह विभाग की एडवाइजरी के बाद अधिकांश अपने घरों को लौट गए हैं। कुछ पर्यटक पहलगाम में ट्रेकिंग पर गए हैं। लौटते हुए उनको कश्मीर से जाने के लिए कहा जाएगा।

बालटाल, पहलगाम से श्रद्धालुओं व लंगर वालों को भी वापस भेजा

गुलमर्ग, पहलगाम, सोनमर्ग और श्रीनगर से करीब सात हजार पर्यटक शनिवार सुबह तक कश्मीर छोड़ चुके थे। बालटाल, पहलगाम, श्रीनगर व अन्य जगहों पर रुके 15 हजार श्रद्धालुओं को कश्मीर से बाहर भेजा गया है। इनमें लंगर वाले भी शामिल थे। 30 हजार प्रवासी श्रमिकों ने शनिवार सुबह तक कश्मीर छोड़ा है।

किसी भी विमान में खाली नहीं रही सीट

पूरे दिन श्रीनगर एयरपोर्ट पर यात्रियों का जमावड़ा रहा। किसी भी विमान में कोई सीट खाली नहीं रही। रविवार के लिए भी शत प्रतिशत बुकिंग हो चुकी है। इस बीच, टैक्सी और टेंपो ट्रैवलर मनमाना किराया वसूल रहे हैं।

राज्यपाल ने भरोसा दिया– अनुच्छेद 370 और 35 ए से छेड़छाड़ नहीं होगी : उमर

राज्य ब्यूरो, श्रीनगर

जम्मू-कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री व पीडीपी अध्यक्ष महबूबा मुफ्ती के बाद शनिवार को नेशनल कांफ्रेंस के उपाध्यक्ष उमर अब्दुल्ला भी राज्य के विशेष दर्जे को लेकर बने संशय को दूर करने के लिए राज्यपाल सत्यपाल मलिक से मिले। इसके बाद उन्होंने कहा कि राज्यपाल ने यकीन दिलाया है कि अनुच्छेद 370 और 35 ए के साथ कोई छेड़छाड़ नहीं होगी, लेकिन उनकी बात अंतिम नहीं है, इस मामले में केंद्र की बात ही अंतिम होगी। इसलिए केंद्र सरकार सोमवार को संसद में राज्य के हालात पर अपना पक्ष रखे।

राज्यपाल से मुलाकात के बाद उमर अब्दुला अपने निवास पर पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। उन्होंने कहा कि जम्मू-कश्मीर के साथ विलय के समय जो वादे-शर्तें तय की गई थीं, उन्हें निभाया जाए। इन शर्तों को मरते दम तक रखना है। उन्होंने कहा कि श्रद्धालुओं को कश्मीर छोड़ने की सलाह के बाद तनाव पैदा हो गया है। अचानक पेट्रोल पंपों पर, दुकानों पर लोगों की भीड़ उमड़ रही है। गुलमर्ग, पहलगाम, सोनमर्ग जैसे पर्यटन स्थलों से भी पर्यटकों को निकाला जा रहा है। कश्मीर में ऐसा क्या हो रहा है, यही पूछने के लिए हम राज्यपाल से मिले थे। उमर ने कहा कि संसद में नेकां सदस्यों ने राज्य के मौजूदा हालात पर एक ध्यानाकर्षण प्रस्ताव लाया था। सोमवार को हम सरकार की एडवाइजरी और राज्य के संवैधानिक मुद्दों पर स्थिति स्पष्ट करने के लिए दोबारा ध्यानाकर्षण प्रस्ताव लाएंगे।

उमर ने कहा कि गत दिनों मुलाकात के दौरान पीएम नरेंद्र मोदी ने यकीन दिलाया कि चुनावों की तैयारी की जा रही है, लेकिन इसके 24 घंटे के भीतर ही कश्मीर से पर्यटकों को निकालने और यात्रा को रोकने का आदेश जारी हो गया, हमें इसकी उम्मीद नहीं थी। पीएम ने ऐसा कोई संकेत नहीं दिया कि कश्मीर में हालात खराब हैं या कुछ बड़ा होने जा रहा है।

कल की मुझे खबर नहीं, आज कुछ नहीं होने जा रहा : राज्यपाल : राज्यपाल सत्यपाल मलिक ने कहा कि संविधान के प्रावधानों में किसी तरह के बदलाव को लेकर मुझे कोई जानकारी नहीं है। मैं आज इतना ही कह सकता हूं कि यहां कुछ नहीं होने जा रहा है। कल क्या होगा, यह मेरे हाथ में नहीं है। आज कुछ भी ऐसा नहीं है, जिसे लेकर डरा जाए। पर्यटकों व श्रद्धालुओं को कश्मीर छोड़ने की सलाह को सही ठहराते हुए राज्यपाल ने कहा कि यहां सुरक्षा व्यवस्था को बनाए रखने के लिए कुछ ठोस कदम उठाए जाने की जरूरत है, जिन पर कार्रवाई हो रही है। इसे अनावश्यक रूप से अन्य मुद्दों के साथ जोड़कर डर का माहौल पैदा नहीं किया जाना चाहिए।

कश्मीर में फिर डर का माहौल पैदा कर रही सरकार

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

कश्मीर के मौजूदा हालात पर चिंता जताते हुए कांग्रेस ने शनिवार को कहा कि 30 साल बाद सरकार फिर घाटी में डर और नफरत का माहौल पैदा कर रही है। कांग्रेस ने अमरनाथ यात्रा रोकने के सरकार के फैसले की भी निंदा की और कहा कि ऐसा पहले कभी नहीं हुआ। इससे भी खराब स्थितियों में भी यात्रा नहीं रोकी गई। वह इस मुद्दे को संसद के चालू सत्र में उठाएगी और सरकार ने जवाब मांगेगी। 1990 में भी घाटी में ऐसा ही डर का माहौल पैदा हुआ था, जिसमें हजारों कश्मीरी पंडितों को घाटी से निकाला गया था।

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता डॉ. कर्ण सिंह, गुलाम नबी आजाद, पूर्व गृह मंत्री पी. चिदंबरम, आनंद शर्मा और अंबिका सोनी ने एक संयुक्त प्रेस कांफ्रेस में सरकार पर यह हमला बोला। उन्होंने सरकार से पूछा कि ऐसा क्या हो गया है, जिसके चलते यह डर और नफरत का माहौल पैदा किया जा रहा है। आजाद ने बताया कि वर्ष 2000 में जब अमरनाथ यात्रा पर आतंकियों ने हमला किया था तब भी यात्रा नहीं रोकी गई थी। दो-तीन दिन रोकने के बाद यात्रा को फिर चालू कर दिया गया था। सरकार घाटी छोड़ने की एडवाइजरी जारी कर लोगों में दहशत फैला रही है। डॉ. कर्ण सिंह ने कहा कि पिछले 70 साल में जम्मू-कश्मीर को लेकर कई उतार-चढ़ाव देखे, लेकिन मौजूदा समय में जो स्थिति है वह चिंताजनक है।

सरकार के इस कदम को अनुच्छेद 370 और 35ए को खत्म करने से जोड़कर देखने के सवाल पर चिदंबरम ने सरकार को आगाह किया कि वह ऐसा कुछ न करे। जिस तरीके से माहौल बनाया जा रहा है उससे यह आशंका पैदा हो रही है कि वह कुछ अचंभा करने वाले हैं।

पीएम से बयान की मांग : गुलाम नबी आजाद ने कहा कि संसद का सत्र चल रहा है। लिहाजा प्रधानमंत्री को संसद के दोनों सदनों में इस मसले पर बयान देना चाहिए। यह उनका दायित्व है।

नई दिल्ली में शनिवार को जम्मू-कश्मीर के हालात पर प्रेसवार्ता करते कांग्रेस के वरिष्ठ नेता गुलाम नबी आजाद, साथ में कर्ण सिंह, अंबिका सोनी, आनंद शर्मा और पी चिदंबरम। प्रेट्र

पाक की शातिर चाल, कश्मीर को अफगान से जोड़ा

जयप्रकाश रंजन, नई दिल्ली

कश्मीर में आतंकियों के खिलाफ भारत की सख्त कार्रवाई और वहां चल रही भावी तैयारियों को देखते हुए पाकिस्तान में हड़कंप मचा हुआ है। सिर्फ पाकिस्तान की सेना ही नहीं, बल्कि वहां के विदेश मंत्री भी भारत के खिलाफ अनर्गल आरोप लगाने में जुट गये हैं। पिछले दिनों नियंत्रण रेखा के आस-पास छिपे आतंकियों के अड्डों पर भारत की कार्रवाई को लेकर भी पड़ोसी देश में जबरदस्त बेचैनी है। विदेश मंत्री शाह महमूद कुरैशी ने तो शातिर चाल चलते हुए कश्मीर में भारत की कार्रवाई को अफगानिस्तान को लेकर चल रही शांति वार्ता से जोड़ दिया है। उन्होंने कहा है कि अगर कश्मीर के हालात बिगड़ते हैं तो इसका सीधा असर अफगानिस्तान को लेकर चल रहे शांति प्रयासों पर पड़ेगा।

कश्मीर पर भारत की तैयारियों को लेकर पाकिस्तान की मीडिया पहले से ही कई तरह की बेसिर पैर की खबरें दे रही थी, लेकिन शनिवार को उनकी सरकार का भी संयम जवाब दे गया। सबसे पहले कुरैशी ने यह ट्वीट किया कि भारतीय सेना नियंत्रण रेखा पर निर्दोष नागरिकों की हत्या कर रही है। यह सीधे तौर पर जेनेवा संधि और अंतरराष्ट्रीय कानून का उल्लंघन है। इसके तुरंत बाद पाकिस्तान सेना के प्रवक्ता ने बेहद भड़काऊ बयान जारी किया, 'अंतरराष्ट्रीय नियमों का उल्लंघन करते हुए भारत कलस्टर बम का प्रयोग कर रहा है। कोई भी हथियार कश्मीरियों के आत्मनिर्णय के अधिकार को नहीं छीन सकता। कश्मीर हर पाकिस्तानी के लहू में बहता है।' भारतीय विदेश मंत्रालय ने इस पर अधिकारिक तौर पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है, लेकिन सूत्रों ने इसे बेसिर पैर का आरोप करार दिया है। दूसरी तरफ, भारतीय सेना की तरफ से साफ किया गया है कि सीमा पार से भारत में आतंकियों की घुसपैठ कराने की किसी भी कोशिश का करारा जवाब देने को वह तैयार है। भारत को इस बात की पुख्ता जानकारी मिली है कि नियंत्रण रेखा के पास आतंकियों के कुछ नए लांच पैड तैयार किए गए हैं, जहां से उनकी घुसपैठ कराने की तैयारी है। भारत उन्हें लेकर ऐहतियाती कदम उठा रहा है। सूत्रों की तरफ से यह भी बताया गया है कि पाकिस्तान के विदेश मंत्री और वहां के सेना के प्रवक्ता ने जो तस्वीरें साझा की हैं उनकी प्रमाणिकता को लेकर भी संदेह है।

कश्मीर में हाल के दिनों में भारत की तरफ से अतिरिक्त सैन्य बल तैयार कराने से सशंकित कुरैशी ने शनिवार को पाकिस्तान के कई टीवी चैनलों से बात की और अपने बयान साझा किए। कुरैशी ने भारत पर युद्ध का माहौल बनाने का आरोप लगाते हुए अंतरराष्ट्रीय समुदाय से कहा है कि वह कश्मीर व नियंत्रण रेखा (एलओसी) के हालात पर गौर करें। उन्होंने कहा है कि अगर कश्मीर को लेकर भारत व पाकिस्तान के बीच तनाव और बढ़ता है तो यह सीधे तौर पर अफगानिस्तान शांति वार्ता पर असर डालेगा। अफगानिस्तान शांति वार्ता के लिए अमेरिका के विशेष राजदूत जाल्मे खलीलजाद शुक्रवार को पाकिस्तान में ही थे और शनिवार को वह दोहा पहुंचे हैं, ताकि सभी पक्षकारों से बातचीत आगे बढ़े। इस तरह से कुरैशी ने बेहद शातिर रवैया अपनाते हुए पूरे मामले में अमेरिका को भी घसीटने की कोशिश की है। सनद रहे कि हाल के दिनों में अमेरिका की तरफ से कश्मीर में हस्तक्षेप करने की बात जो कही गई है उसके पीछे भी उसकी अफगानिस्तान को लेकर मजबूरियों को ही बताया जा रहा है।

नापाक हरकत

- विदेश मंत्री शाह महमूद कुरैशी और पाकिस्तान की सेना ने कश्मीर को लेकर फिर शुरू किया प्रलाप
- पाकिस्तानी सेना ने आतंकियों पर भारतीय सेना की कार्रवाई को कलस्टर बम गिराने से जोड़ा

शाह महमूद कुरैशी फाइल फोटो

कश्मीरियों में भय पैदा कर रही हैं नेकां, पीडीपी और कांग्रेस : रैना

राज्य ब्यूरो, जम्मू : प्रदेश भाजपा अध्यक्ष रविंद्र रैना ने कश्मीर को लेकर व्याप्त संशय के लिए विपक्षी दलों को आड़े हाथ लिया। रैना ने कहा कि नेशनल कांफ्रेंस, पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) और कांग्रेस कश्मीरी लोगों के बीच जानबूझ कर भय पैदा करने की कोशिश कर रही हैं। पार्टियां खुद डरी हुई हैं, लेकिन कश्मीर के लोगों को डरने की आवश्यकता नहीं है। लोग धूमधाम से स्वतंत्रता दिवस मनाएं और अपने घरों पर तिरंगा फहराएं। सरकार कोई भी फैसला राज्य के तीनों संभागों जम्मू, कश्मीर और लद्दाख के हित को देख कर ही उठाएगी। जम्मू-कश्मीर को अनुच्छेद 370 और 35 ए के जरिये मिला विशेष दर्जा ही अलगाववाद और आतंकवाद का कारण है। ऐसे अनुच्छेद के प्रावधानों के तहत ही महिलाओं से भेदभाव हो रहा है।

असमंजस की स्थिति स्पष्ट करे केंद्र : प्रदेश कांग्रेस कमेटी प्रधान जीए मीर ने पत्रकारों से कहा कि कश्मीर के मौजूदा हालात से लोग परेशान हैं। कोई नहीं जानता है, क्या हो रहा है? स्थिति असमंजस की है। हम पहली बार ऐसी स्थिति देख रहे हैं, जिससे कई सवाल खड़े हो रहे हैं। अतिरिक्त सुरक्षा बलों की तैनाती, बाबा अमरनाथ श्रद्धालुओं और पर्यटकों को जल्द घाटी छोड़ने के आदेश ने लोगों में भय पैदा कर दिया है।

शोपियां और सोपोर में जैश के तीन आतंकी मार गिराए

राज्य ब्यूरो, श्रीनगर

- क्रॉस फायरिंग की चपेट में आकर एक श्रमिक की मौत
- मुठभेड़ स्थल से भारी मात्रा में गोला बारूद और हथियार बरामद

आतंकवाद के खिलाफ अभियान को तेज करते हुए सुरक्षा बलों ने दक्षिण कश्मीर के शोपियां में शुक्रवार से जारी मुठभेड़ में जिंदा बचे दूसरे आतंकी को मार गिराया तो उत्तरी कश्मीर के सोपोर में जैश-ए-मुहम्मद के दो आतंकियों को ढेर कर दिया। शोपियां में क्रॉस फायरिंग की चपेट में आकर एक श्रमिक मारा गया। सोपोर मुठभेड़ में सेना का एक जवान भी जख्मी हुआ है।

सूचना मिली थी कि सोपोर के मलमानपोरा में कुछ आतंकी मौजूद हैं। पुलिस, सेना की 22 आरआर और सीआरपीएफ के जवान मलमानपोरा में घेराबंदी करने लगे तो एक मकान से आतंकियों ने पहले ग्रेनेड फेंके और उसके बाद फायरिंग शुरू कर दी। इसमें एक सैन्यकर्मी जख्मी हो गया। तब से जारी मुठभेड़ में एक आतंकी सुबह नौ बजे और उसका साथी दोपहर बाद तीन बजे मारा गया। दोनों जैश ए मुहम्मद से संबद्ध बताए जा रहे हैं, हालांकि उनकी पहचान नहीं हो पाई है। उनसे भारी मात्रा में हथियार व अन्य साजो सामान मिला है।

उधर, शोपियां के पंडुशान गांव के इट्टू मुहल्ले में शुक्रवार तड़के शुरू हुई मुठभेड़ में जैश का स्थानीय आतंकी जीनत उल इस्लाम उर्फ नायकू मारा गया था। वह निकटवर्ती ममेंदर गांव का रहने वाला था। इस दौरान 34 आरआर के जवान रामवीर सिंह शहीद हुए थे। जीनत का एक साथी मंजूर अहमद बट उस समय बच गया था। उसे शनिवार को मार गिराया गया।

सुरक्षाबलों पर किया गया पथराव

सैन्य अधिकारियों ने बताया कि क्रॉस फायरिंग की चपेट में आकर एक श्रमिक मारा गया है। वह आतंकी ठिकाने के पास क्या करने गया था इसकी जांच भी की जा रही है। मारा गया श्रमिक मुजीब बिहार का रहने वाला बताया जाता है। मुठभेड़ स्थल से एक एसाल्ट राइफल और एक एसएलआर समेत भारी मात्रा में विस्फोटक सामग्री भी बरामद हुई है। आतंकी समर्थक तत्वों ने सुरक्षाबलों पर पथराव भी किया।

एम-24 : घातक स्नाइपर राइफल

अमरनाथ यात्रा मार्ग पर अमेरिका निर्मित स्नाइपर राइफल एम- 24 के मिलने की घटना ने किसी बड़ी आतंकी वारदात की आशंका खड़ी कर दी। साथ ही हर किसी में इसके बारे में ज्यादा-जानने समझने का कौतूहल भी पैदा कर गई। स्नाइपर राइफल का इस्तेमाल लंबी दूरी पर मौजूद लक्ष्य को साधने के लिए करते हैं। इसे सधा हुआ निशानेबाज ही चला सकता है। दूर तक का निशाना साधने के लिए इसमें दूरबीन समेत अत्याधुनिक तकनीक होती है। एक अकेली स्नाइपर राइफल ही दुश्मनों पर भारी पड़ सकती है। पाकिस्तानी सेना अमेरिका निर्मित स्नाइपर ही इस्तेमाल करती है। भारतीय सेना पहले जर्मनी में निर्मित हेक्लर एंड कोच स्नाइपर राइफल का इस्तेमाल करती है। पेश है एक नजर...

अमरनाथ यात्रा मार्ग से बरामद अमेरिका निर्मित स्नाइपर राइफल एम- 24 शुक्रवार को श्रीनगर में मीडिया के सामने पेश की गई। फाइल फोटो

एम-24 की खूबियां

अमेरिका निर्मित स्नाइपर राइफल एम- 24 रेमिंगटन मॉडल 700 का उन्नत रूप है। खासतौर पर इसे अमेरिकी सेना के लिए स्नाइपर वीपन सिस्टम के रूप में 1980 में विकसित किया गया। 1988 में थल सेना में शामिल किया गया। यह एक किलोमीटर तक निशाना साध सकती है, लेकिन 800 मीटर तक सटीक निशाना साधती है। 5.4 किग्रा की इस राइफल की लंबाई 1092 मिमी है। बैरल की लंबाई 660 से 686 मिमी तक है।

इन देशों के पास है एम 24

अमेरिका से खरीदकर एम 24 राइफल का इस्तेमाल पाकिस्तान समेत अफगानिस्तान, ब्राजील, हंगरी, जॉर्जिया, जापान, लेबनान, फिलीपींस की सेनाएं करती है।

चार किमी है रूस की एसवीएलके-14 सुमराक की मारक क्षमता

यह अब तक की सबसे मारक राइफलों में से एक है। इसे रूस की निजी हथियार निर्माता कंपनी जार पुष्का ने तैयार किया है। 1.5 मीटर लंबी बैरल की इस राइफल में 10.3 एमएम की गोली पड़ती है। 900 मीटर प्रति सेकेंड की रफ्तार से गोली निकलती है। पांच सेकेंड से कम समय ही दुश्मन को ढेर करने में सक्षम है।

दुनिया की पहली स्नाइपर राइफल

लंबी दूरी तक मार करने में सक्षम व्हिटवर्थ राइफल दुनिया की पहली स्नाइपर राइफल है। इसे ब्रिटिश इंजीनियर सर जोसेफ व्हिटवर्थ ने डिजाइन किया था। 1857 में इसका पहली बार परीक्षण किया गया। मारक क्षमता 1.4 किमी की इस राइफल का अमेरिकन सिविल वार में पहली बार इस्तेमाल हुआ। 1.2 मीटर की इस राइफल की बैरल 840 मिमी है।

अमेरिका की बैरेट एम 82

बैरेट फायरमैन मैन्युफैक्चरिंग ने 1982 में बनाकर तैयार की। दुनिया के 60 से अधिक देशों में इस्तेमाल होती है। लंबाई 120 सेंमी और वजन 14 किग्रा। मारक क्षमता 1800 मीटर तक है।

भारत में बनी स्नाइपर राइफल

अब भारत के पास खुद की बनाई स्नाइपर राइफल है, जिसे पश्चिम बंगाल के ईशापुर में आयुध फैक्ट्री में तैयार किया गया है। 7.62 एमएम की इस इस राइफल की कीमत 2.5 लाख रुपये है। वजन 6.7 किलोग्राम और 800 मीटर तक मार सकती है। वहीं, जर्मनी की एच एंड एन की कीमत इससे तीन गुनी है। इसका वजन 7.2 किग्रा और मारक क्षमता 500 मीटर ही है।

बढ़ी मुसीबत

एडवांस बुकिंग के रूप में ट्रैवल एजेंसियों के पास फंसे लाखों रुपये, नियमों का हवाला देकर एजेंसियों ने रिफंड को लेकर खड़े किए हाथ

अमरनाथ यात्रा स्थगित होने से श्रद्धालु परेशान

शिवांग माथुर, नई दिल्ली

जम्मू-कश्मीर छोड़ने संबंधी सरकार की एडवाइजरी से अमरनाथ यात्री और पर्यटक परेशान हैं। सुरक्षा कारणों से रद हुई यात्रा ने श्रद्धालुओं की समस्या बढ़ा दी है। सबसे ज्यादा परेशान ऐसे श्रद्धालु हैं, जिन्होंने एडवांस बुकिंग कराई है और अब उन्हें यात्रा रद करनी पड़ रही है। ऐसे यात्रियों के लाखों रुपये एडवांस बुकिंग में फंस गए हैं। विभिन्न राज्यों से संचालित होने वाली ट्रैवल एजेंसियां नियम एवं शर्तों का हवाला देकर एडवांस बुकिंग का पैसा लौटाने से इन्कार कर रही हैं। देश के कोने-कोने से बाबा बर्फानी के दर्शन के इच्छुक कई लोगों को दोहरी मायूसी का सामना करना पड़ रहा है। एक ओर दर्शन का मौका उनके हाथ से निकल गया, तो दूसरी ओर बुकिंग में पैसा भी फंस गया।

हर साल अमरनाथ यात्रा के लिए हजारों की तादाद में श्रद्धालु फ्लाइट टिकट से लेकर होटल, हेलिकॉप्टर और टैक्सी की एडवांस बुकिंग करा लेते हैं। अब सरकार के निर्देश पर अचानक यात्रा रद होने से उनके पैसे फंस गए हैं। ट्रैवल एजेंसियों ने पैसा वापस करने के नाम पर हाथ खड़े कर दिए हैं।

जम्मू-कश्मीर छोड़ने की एडवाइजरी के बाद जम्मू रेलवे स्टेशन पर शनिवार को यात्रियों की भारी भीड़ रही। प्रेट्र

एजेंसियों के दफ्तरों पर अपना रिफंड लेने पहुंच रहे सभी यात्रियों को निराशा ही हाथ लगी है। एजेंसियां नियमों का हवाला देकर पल्ला झाड़ रही हैं। उनका कहना है कि इस तरह की स्थिति में रिफंड का कोई विकल्प नहीं है। एजेंसियों का तर्क है कि एडवांस बुकिंग के लिए यात्रियों से लिया गया पैसा संबंधित होटलों, टैक्सी कंपनियों आदि को दिया जा चुका है। ऐसे में इन कंपनियों की तरफ से रिफंड मिले बिना एजेंसियां इस दिशा में कुछ भी करने में अक्षम हैं। ज्यादा कहा-सुनी होने पर एजेंसियां लोगों को कोर्ट के रास्ते रिफंड पाने की सलाह भी दे रही हैं।

नहीं दिख रहा विकल्प : राजस्थान के रामअवतार शर्मा और सुबोध माथुर का परिवार अपने पैसे के लिए अब परेशान भटक रहा है। उन्होंने यात्रा के लिए एक लाख रुपये तक का एडवांस जमा कराया है। अब ट्रैवल एजेंसी उनका पैसा वापस करने से मना कर रही है। निजी विमानन कंपनियों ने पैसा रिफंड करने की बात कही है। बावजूद इसके ट्रैवल एजेंसी सहयोग करने को राजी नहीं है। कई परिवार ऐसी स्थिति से दो-चार हो रहे हैं।

10 फीसद रिफंड की बात : एजेंसियों का तर्क है कि कश्मीर को लेकर रिफंड की पॉलिसी के तहत ही वो काम कर रही हैं। ज्यादा जोर देने पर पैकेज वाली कुछ कंपनियां 10 फीसद तक पैसा लौटाने पर राजी हुई हैं। ऐसे में सैकड़ों की तादाद में फंसे इन यात्रियों की सुनवाई कैसे हो, इसका जवाब फिलहाल किसी के पास नहीं।

श्रीनगर से उड़ानों पर किराए में की गई भारी बढ़ोतरी

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

सरकार के निर्देश के बाद यात्रियों के बीच जम्मू-कश्मीर से वापसी की अफरा-तफरी का फायदा विमानन कंपनियां उठा रही हैं। श्रीनगर से दिल्ली और अन्य गंतव्यों के हवाई किराए में असामान्य वृद्धि हुई है। सामान्यतः जिस रूट पर किराया तीन से चार हजार रुपये के बीच रहता है, वहां शनिवार और रविवार के लिए किराया कई गुना बढ़ गया। उमर अब्दुल्ला ने श्रीनगर-दिल्ली फ्लाइट का किराया बढ़ने का मुद्दा सोशल नेटवर्किंग साइट ट्विटर पर उठाया। उन्होंने एक स्क्रीन शॉट शेयर किया जिसमें चार अगस्त की श्रीनगर से दिल्ली की फ्लाइट का किराया 41 हजार रुपये से लेकर 51 हजार रुपये तक होने का दावा किया गया था। हालांकि उमर ने जो स्क्रीन शॉट शेयर किया था, उसमें दो यात्रियों के साथ एक बच्चे और एक नवजात के लिए यह किराया दिखाया गया है। उमर ने कहा कि कश्मीर से बाहर जाने वालों को इतना ज्यादा किराया देना पड़ रहा है। बाहरी यात्रियों को विशेष फ्लाइट की सुविधा मिल जाएगी, लेकिन कश्मीर के जो छात्र या नियमित यात्री हैं, वे कैसे इतना किराया चुकाएंगे? उन्होंने नागर विमानन मंत्री हरदीप पुरी को टैग करते हुए इस पर ध्यान देने का आग्रह किया।

कंपनियों को किराए नियंत्रित रखने की सलाह

नई दिल्ली, प्रेट्र : नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने विमानन कंपनियों को श्रीनगर से चलने वाली उड़ानों का किराया नियंत्रित रखने की सलाह दी है। सूत्रों के मुताबिक, मंत्रालय ने कंपनियों को किराया वृद्धि में सतर्कता बरतने को कहा है। शुक्रवार को नागरिक उड्डयन महानिदेशालय ने कंपनियों को अतिरिक्त उड़ान के लिए तैयार रहने की सलाह भी दी थी। एयरपोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया के मुताबिक, शनिवार को श्रीनगर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से 6,126 यात्रियों ने उड़ान भरी।

429 स्कूलों में विज्ञान संकाय बंद किया जाएगा हरियाणा के। राज्य सरकार ने यह फैसला छात्रों की बेहद कम संख्या के मद्देनजर लिया है। इससे 11वीं व 12वीं के विज्ञान के हजारों बच्चों को परेशानी का सामना करना पड़ेगा।

भारी बारिश से फिर थमे मुंबई-कोंकण

बुरे हालात ▶ मौसम विभाग ने सोमवार सुबह तक भारी बारिश की संभावना जताई

दो छात्राओं समेत तीन लोगों की गई जान

राज्य ब्यूरो, मुंबई

शुक्रवार देर रात से लगातार जारी भारी बरसात के कारण शनिवार को मुंबई सहित पूरा कोंकण क्षेत्र फिर थमता नजर आया। बरसात के कारण यातायात प्रभावित होने के साथ-साथ दो छात्राओं समेत तीन लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी। मौसम विभाग ने सोमवार सुबह तक भारी बारिश की संभावना जताई है।

विभाग के अनुसार कोंकण के उत्तरी हिस्से अर्थात मुंबई, ठाणे, रायगढ़ और पालघर में बरसात का अधिक प्रभाव रहा। ठाणे में एक 18 वर्षीय युवक की करंट लगने से मृत्यु हो गई तो नई मुंबई में एक झरने के पास पिकनिक मनाने गए एसआइईएस कॉलेज की दो छात्राओं की डूबने से मृत्यु हो गई। दो छात्राएं अब भी लापता हैं।

हाईटाइड के अनुमान के बाद ज्यादातर लोग घरों से नहीं निकले : रेल पटरियों पर पानी भरने से मध्य रेलवे की मुंबई छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस (सीएसएमटी) से ठाणे और वसई तक की लोकल रेल सेवा बंद करनी पड़ी। पश्चिम रेलवे की लोकल ट्रेनें भी लेट हुईं। मौसम विभाग द्वारा दोपहर 1.44 बजे हाईटाइड का अनुमान जताने के बाद ज्यादातर लोग घरों से नहीं निकले। पालघर जनपद में भी बरसात का रौद्र रूप दिखाई दिया। यहां सूर्या नदी के तेज बहाव में कुछ पशु बह गए। मुंबई-गोवा मार्ग पर रायगढ़ जिले में पहाड़ों से पत्थर गिरने से मुंबई-गोवा मार्ग बाधित हो गया। पालघर और ठाणे में बरसात के कारण शनिवार को स्कूल-कॉलेज बंद रहे। चूंकि लोकल ट्रेनें चल रही थीं इसलिए कार्यालय जाने वालों पर अधिक प्रभाव नहीं पड़ा।

शुक्रवार रात मप्र के बहादुरपुर की हाजूखेड़ी रोड बस्ती में एक मगरमच्छ घुस गया। शनिवार को वन विभाग के कर्मियों ने उसे पकड़ा। नईदुनिया

वडोदरा के बाढ़ग्रस्त रिहायशी इलाके में मगरमच्छ घुस आया। जिसे देखकर लोगों में अफरा-तफरी मच गई। एएनआइ

अगस्त में चौतरफा अच्छी बारिश के आसार

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

मानसून पूरे देश पर छा गया है, लेकिन कहीं भारी तो कहीं हल्की बारिश हो रही है। देश का कुछ हिस्सा अभी भी सूखे जैसी स्थिति से जूझ रहा है। इसके चलते खरीफ सीजन की फसलों की बोआई प्रभावित हुई है। इससे खेती की रफ्तार पिछले साल के मुकाबले पीछे चल रही है। भारतीय मौसम विभाग के वैज्ञानिकों ने अगस्त माह में अच्छी बारिश का अनुमान लगाया है।

तेलंगाना और छत्तीसगढ़ में लगातार भारी बारिश के चलते दोनों राज्यों की ज्यादातर जगहों पर बाढ़ आ गई है। महाराष्ट्र और गुजरात के तटीय क्षेत्रों में मूसलाधार बारिश से निचले हिस्से पानी में डूब गए हैं। शहरी क्षेत्रों में जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। पूर्वी राज्यों में असम और बिहार के ज्यादातर जिले बाढ़ की चपेट में हैं, जहां खेती पर विपरीत असर पड़ा है। जनजीवन भी प्रभावित हुआ है। देश के उत्तरी राज्यों में पश्चिमी विक्षोभ का असर शुरू हो गया है, जिससे आसमान पर घने बादल छाए हुए हैं। मौसम विभाग की मानें तो आने वाले तीन चार दिन सुहाने होंगे।

मानसून की अनियमित बारिश के चलते देश के कुछ हिस्सों में खरीफ सीजन की प्रमुख फसल धान की रोपाई पर विपरीत असर पड़ा है। सीजन की सभी फसलों का कुल बोआई रकबा पिछले साल के मुकाबले 55.67 लाख हेक्टेयर पीछे है, जबकि धान की रोपाई 32 लाख हेक्टेयर कम हो सकी है। हालांकि कृषि मंत्रालय का कहना है कि आने वाले दिनों में धान की रोपाई के रकबे में सुधार होगा।

वडोदरा में मिला 11 फीट का मगरमच्छ

अहमदाबाद : वडोदरा में शनिवार दोपहर दो घंटे भारी बरसात होने से राहत एवं बचाव कार्य प्रभावित हुआ। इस बीच, विश्वामित्री नदी के पानी के साथ एक मगरमच्छ बहकर शहर में आ गया। करीब 11 फीट लंबे इस मगरमच्छ को एनडीआरएफ की टीम ने भारी मशक्कत के बाद पकड़कर वापस नदी में छोड़ दिया। मौसम विभाग ने आगामी 24 घंटे में यहां अभी और बारिश की चेतावनी दी है। साथ ही विभाग ने राज्य के सौराष्ट्र-कच्छ, मध्य गुजरात और दक्षिण गुजरात में भी आगामी एक हफ्ते में भारी वर्षा की चेतावनी दी है।राज्य की 14 तहसीलों में शनिवार सुबह छह बजे से लेकर दोपहर दो बजे तक चार से 12 इंच तक वर्षा हुई। सूरत के ओलपाड में सर्वाधिक 12 इंच और आणंद के खंभात में 11 इंच बारिश दर्ज की गई। उधर, नर्मदा नदी पर सरदार सरोवर बांध के ऊपरी इलाके में अच्छी वर्षा के चलते बांध का जलस्तर लगातर बढ़ रहा है।

चालक-क्लीनर को तीन दिन के पुलिस रिमांड पर लेकर पूछताछ

उन्नाव दुष्कर्म कांड

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

उत्तर प्रदेश के उन्नाव (माखी) दुष्कर्म कांड में सीबीआइ ने ट्रक चालक आशीष व क्लीनर मोहन को तीन दिन के पुलिस रिमांड पर लेकर पूछताछ शुरू की है। इससे पूर्व सीबीआइ ने लखनऊ स्थित विशेष न्यायिक मजिस्ट्रेट की अदालत में प्रार्थनापत्र देकर ट्रक चालक व क्लीनर की पुलिस कस्टडी रिमांड की मांग की। सीबीआइ ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने सात दिन में विवेचना पूरी करने का निर्देश दिया है। चालक व क्लीनर को मौके पर ले जाकर साक्ष्य एकत्र किए जाने हैं। विशेष न्यायिक मजिस्ट्रेट आराधना शुक्ला ने दोनों की तीन दिन की रिमांड मंजूर कर दी।

खराब मिले जेल के सीसीटीवी कैमरे : सीबीआइ टीम ने सीतापुर जेल के सीसीटीवी कैमरों को भी खंगाला। बताया गया कि तीन सीसीटीवी कैमरे खराब मिले। सीबीआइ ने इसे लेकर नाराजगी भी जताई।

बुखार-निमोनिया की चपेट में दुष्कर्म पीड़िता : किंग जार्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी (केजीएमयू) के ट्रॉमा सेंटर में भर्ती दुष्कर्म पीड़िता की हालत गंभीर है। उसके फेफड़े में संक्रमण हो गया है। इसके चलते वह बुखार और निमोनिया की चपेट में आ गई है। उसकी स्थिति नाजुक बनी हुई है। हादसे में मल्टीपल फ्रैक्चर से आंतरिक रक्तस्राव हुआ था। फेफड़े के बाहरी भित्त में करीब 150 मिमी रक्त था, उसे नली डालकर निकाल दिया गया, मगर खतरा टला नहीं है। फेफड़े में संक्रमण हो गया है। प्रवक्ता डॉ. संदीप तिवारी के मुताबिक पीड़िता के निमोनिया और बुखार पर लगातार नजर रखी जा रही है।

तिहाड़ लाया गया पीड़िता का चाचा : पीड़िता के चाचा को रायबरेली जेल से सीआरपीएफ की सुरक्षा के बीच शनिवार दोपहर राजधानी के तिहाड़ जेल लाया गया। सूत्रों के अनुसार, अभी उसे जेल नंबर दो में रखा गया है। साथ ही उसको त्रिस्तरीय सुरक्षा दी गई है, जिसमें जेल प्रशासन, तमिलनाडु पुलिस व आइटीबीपी के जवानों को तैनात किया गया है। जेल प्रशासन ने इस बात का खास खयाल रखा है कि पीड़िता के चाचा के सेल के आसपास उत्तर प्रदेश के उन्नाव व आसपास के अन्य इलाके के कैदी न हों।

रायबरेली-लालगंज मार्ग पर घटना की जांच करती सीबीआइ व फोरेंसिक टीम। जागरण

कल से तीस हजारी में रोज होगी सुनवाई

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : उन्नाव दुष्कर्म कांड की सुनवाई सोमवार से दिल्ली की तीस हजारी अदालत में शुरू होगी। शनिवार को अदालत ने आरोपित विधायक कुलदीप सिंह सेंगर और शशि सिंह का प्रोडक्शन वारंट जारी कर दिया। अदालत ने डीजी जेल को नोटिस जारी कर कहा कि आरोपितों को सोमवार को अदालत में पेश किया जाए। वहीं अन्य आरोपितों का 6 अगस्त के लिए प्रोडक्शन वारंट जारी हुआ है। गुरुवार को सुप्रीम कोर्ट ने आदेश दिया था कि उन्नाव कांड से जुड़े सभी पांच केस दिल्ली की तीस हजारी अदालत में सुने जाएंगे। हालांकि शुक्रवार को आदेश में बदलाव करते हुए चार केस तीस हजारी में सुनने के लिए कहा गया है।

न्यूज गैलरी

घुसपैठ करता पाकिस्तानी नागरिक गिरफ्तार

फिरोजपुर : पंजाब के फिरोजपुर सीमा क्षेत्र में घुसपैठ करते एक पाकिस्तानी नागरिक को गिरफ्तार किया गया है। उसकी पहचान 38 वर्षीय याकूब पुत्र फैजल रज्जाक वासी कमालीया, टोभा टेक सिंह वाला (पाकिस्तान) के रूप में हुई है। बीएसएफ के 118 बटालियन के जवानों ने याकूब को शुक्रवार रात्रि साढ़े नौ बजे गिरफ्तार किया। प्रारंभिक पूछताछ के बाद उसे थाना लक्खोके बहिराम पुलिस के हवाले कर दिया गया। थाना प्रभारी गुरतेज सिंह ने बताया कि याकूब को जल्द ही मजिस्ट्रेट के समझ पेश कर पुलिस रिमांड हासिल करेगी। उसके पास से संदिग्ध वस्तु बरामद नहीं हुई है। (जासं)

ममता बनर्जी की तस्वीर से छेड़छाड़ कर किया वायरल

कोलकाता : बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की तस्वीर से छेड़छाड़ कर उसे सोशल मीडिया में वायरल करने का मामला प्रकाश में आया है। यह घटना मालदा जिले के मानिकचक थानांतर्गत ग्राम पंचायत की है। इस मामले में तृणमूल कांग्रेस ने भाजपा के ग्राम प्रधान के खिलाफ थाने में शिकायत दर्ज कराई है। आरोप है कि इलाके में लगे मुख्यमंत्री की तस्वीर वाले पोस्टर-बैनर से छेड़छाड़ कर उन्हें सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया गया। मालदा जिला परिषद के महासचिव ने ग्राम प्रधान मम्पी रजक व उनके पति तरुण रजक के खिलाफ थाने में शिकायत दर्ज कराई है। वहीं, ग्राम प्रधान ने आरोप को सिरे से खारिज करते हुए कहा कि ऐसी कोई घटना नहीं घटी है। (जासं)

कोलकाता समेत बंगाल में कई जगहों पर भूकंप के झटके

कोलकाता : कोलकाता समेत बंगाल के कई जिलों में शनिवार को भूकंप के झटके महसूस किए गए। जानकारी के मुताबिक शाम को करीब 4:42 बजे तीन-चार सेकेंड तक झटके महसूस किए गए। कोलकाता के अलावा हुगली, पश्चिम मेदिनीपुर, पुरुलिया सहित दक्षिण बंगाल के कई जिलों में लोगों ने कंपन महसूस किया। भूकंप के केंद्र व इसकी तीव्रता का पता नहीं चल पाया है, लेकिन इसकी तीव्रता कम होने की वजह से किसी तरह के जान-माल के नुकसान की खबर नही है। बताया जा रहा है कि पश्चिम मेदिनीपुर जिले में भूकंप की तीव्रता सबसे अधिक थी। (जासं)

लालू की तबीयत में सुधार, जा सकते हैं वापस जेल

राज्य ब्यूरो, रांची : चारा घोटाले में सजायाफ्ता राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव की तबीयत में धीरे-धीरे सुधार हो रहा है। अब वह कभी भी बिरसा मुंडा केंद्रीय कारा होटवार ले जाए जा सकते हैं। जेल अधीक्षक अशोक कुमार चौधरी ने बताया कि उन्हें अब तक डॉक्टर की रिपोर्ट नहीं मिली है। डॉक्टर की रिपोर्ट में सब कुछ सामान्य मिला तो लालू प्रसाद जेल लाए जाएंगे। राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद करीब डेढ़ साल से रिम्स में भर्ती हैं। यहां उनका शुगर, किडनी, लीवर व यूरिक एसिड से संबंधित बीमारियों का इलाज चल रहा है। रिम्स में इलाज के दौरान लालू प्रसाद की तबीयत में अब सुधार बताया जा रहा है। लालू प्रसाद का इलाज कर रहे डॉक्टर डीके झा ने बताया कि उनकी मासिक जांच की गई थी। जांच में किडनी, लीवर व यूरिक एसिड की जांच हुई है।

निकाह के 25 साल बाद 10 बच्चों की मां को दिया तत्काल तीन तलाक

जागरण संवाददाता, फीरोजाबाद

तत्काल तीन तलाक पर कानून बनने के बाद शनिवार को उप्र के फीरोजाबाद में तत्काल तीन तलाक का पहला मामला सामने आया है। शादी के 25 साल बाद जबरदस्ती के विरोध पर शौहर ने बीवी को तीन बार तलाक कहा और भाग गया। पीड़िता ने लाइनपार थाना में शौहर के खिलाफ तहरीर दी है। पीड़िता 10 बच्चों की मां है। नई आबादी निवासी नूरजहां ने शनिवार सुबह थाने पहुंचकर पुलिस के समक्ष रोते हुए शौहर की करतूत बयां की और तहरीर दी। नूरजहां ने बताया शौहर चूड़ी कारखाने में मजदूरी करता है। आरोप लगाया कि रात लगभग 11 बजे शौहर घर पहुंचा और जबरदस्ती करने लगा। विरोध पर उसने मारपीट की और जान से मारने की धमकी दी। इसके बाद तीन बार तलाक कहा और घर से निकल जाने की कहकर चला गया, सुबह तक नहीं लौटा। एसओ के मौजूद न होने पर वह तहरीर देकर चली गई। एसओ लाइनपार संजय कुमार सिंह ने बताया कि दोपहर में महिला का बेटा आया था और पिता को नशेबाज बताते हुए मां को घर ले गया।

तीन तलाक का मुकदमा दर्ज

जासं, ग्रेटर नोएडा : एसएसपी के आदेश पर शनिवार को उप्र के गौतमबुद्ध नगर स्थित दादरी कोतवाली में तत्काल तीन तलाक का मामला दर्ज किया गया। दादरी कोतवाली पुलिस ने बताया कि नई आबादी मोहल्ला निवासी इकबाल व इंदरीश का निकाह दनकौर निवासी जहूर की दो बेटियों शमीना व शबाना के साथ 29 मार्च 2005 को हुआ था। पीड़ित पिता जहूर का आरोप है कि बेटी शमीना का पति इकबाल दहेज की मांग को लेकर परेशान करता रहता है।

विधायक से मिलने वाले भी सीबीआइ के रडार पर

जासं, उन्नाव : आरोपित भाजपा विधायक कुलदीप सिंह सेंगर से जेल में बार-बार मिलने गए लोग भी सीबीआइ के रडार पर हैं। सीबीआइ टीम उन्नाव और सीतापुर जेल से ऐसे लोगों की कुंडली खंगालने की तैयारी में है। बीते छह माह के साथ ही रायबरेली हादसा होने के बाद उनसे मिलने वालों पर खासतौर पर शिकंजा कसा जा सकता है। उन्नाव कांड के बाद अब रायबरेली हादसे की जांच भी सीबीआइ ने शुरू कर दी है। दुर्घटनास्थल व लखनऊ स्थित ट्रॉमा सेंटर के बाद शनिवार को सीबीआइ टीम उन्नाव पहुंची। टीम ने माखी थाना और गांव में पड़ताल की। इसके साथ ही उन लोगों के बारे में भी खोजबीन शुरू की जो जेल में बंद विधायक से बार-बार मिलने जाते रहे हैं। जानकारी के मुताबिक सीबीआइ अधिकारियों ने उन्नाव और सीतापुर जेल से विधायक से मिलने गए लोगों का ब्योरा मांगा है।

फाइनेंस कंपनी ने ट्रक मालिक को भेजा था नोटिस

जागरण संवाददाता, फतेहपुर

- ट्रक मालिक ने फाइनेंसर का डर बताकर नंबर प्लेट छुपाने की कही थी बात
- फाइनेंस कंपनी ने पहले कहा, कोई बकाया नहीं, बाद में बताई दो किस्तें हैं बाकी

उन्नाव दुष्कर्म कांड की पीड़िता की कार से हुई ट्रक की टक्कर साजिश थी या हादसा, यह तो सीबीआइ तय करेगी, लेकिन एक बात साफ हो चुकी है कि ट्रक मालिक को फाइनेंस कंपनी ओरिक्स लीजिंग एंड फाइनेंसियल सर्विसेज ने दो नोटिस भेजे थे। एक नोटिस कंपनी ने भेजा था, दूसरा उनके वकील ने। हालांकि, कंपनी के क्लेम मैनेजर ने पहले न्यूज चैनलों से कोई बकाया न होने का दावा किया, लेकिन बाद में दो किस्तें बाकी बताईं। वकील ने पैसा न चुकाने पर ट्रक जब्ती की चेतावनी भी दी थी।

ट्रक मालिक से सीबीआइ आज करेगी पूछताछ : सीबीआइ ने ट्रक मालिक को रविवार को लखनऊ तलब किया है। उसे सीबीआइ कार्यालय में सुबह साढ़े नौ बजे पेश होना है।

26.77 लाख रुपये का था लोन : ट्रक मालिक ललौली (फतेहपुर) निवासी देवेंद्र किशोर पाल ने 26.77 लाख का लोन जनवरी 2018 में लिया था। 40 किस्तों में ऋण चुकाना था। एक किस्त 90,280 रुपये, 10 किस्तें 86,806 और 29 किस्तें 80,126 रुपये की रखी गईं।

फाइनेंसर के डर से छुपाया था नंबर : 28 जुलाई को रायबरेली के लालगंज में ट्रक की भिड़ंत कार से हुई, जिसमें दुष्कर्म पीड़िता की चाची व मौसी की मौत हो गई। पीड़िता व उनके अधिवक्ता गंभीर हैं। ट्रक की नंबर प्लेट पर ग्रीस लगाने से साजिश को बल मिला। सीबीआइ को ट्रक मालिक ने गुरुवार को बताया था कि फाइनेंसर के डर से ग्रीस पोती थी। चार किस्तें बकाया हैं।

केरल में आइएएस अफसर ने कार से पत्रकार को कुचला

तिरुवनंतपुरम, प्रेट्र : केरल की राजधानी तिरुवनंतपुरम में एक आइएएस अफसर की तेज रफ्तार कार ने एक स्थानीय पत्रकार को रौंद डाला। इस सड़क हादसे में बाइक चला रहे स्थानीय पत्रकार के.मुहम्मद बशीर की मौत हो गई। कार को वरिष्ठ आइएएस अधिकारी श्रीराम वेनकितारमण चला रहे थे। इसी गुरुवार को श्रीराम को राज्य की कैबिनेट ने सर्वे डायरेक्टर नियुक्त किया है। पुलिस अधिकारी के अनुसार कार में आरोपित आइएएस अधिकारी के अलावा एक महिला भी थी। प्रारंभिक जांच के बाद पुलिस ने आइएएस अफसर श्रीराम को गिरफ्तार कर लिया है।

33 वर्षीय वरिष्ठ आइएएस अफसर श्रीराम पर आइपीसी की धारा-279 (रैश ड्राइविंग) और धारा 304 (गैर इरादतन हत्या) लगाई गई हैं। हादसे में खुद भी घायल हुए श्रीराम को एक निजी अस्पताल में इलाज कराने के दौरान गिरफ्तार कर लिया गया। वरिष्ठ आइएएस अधिकारी श्रीराम वेनकितारमण सड़क हादसे के वक्त एक क्लब से पार्टी करके लौट रहे थे। उनकी मॉडल मित्र वफा फिरोज भी साथ थीं। हादसे वाली लक्जरी कार की वही मालिक हैं। श्रीराम एमबीबीएस की पढ़ाई भी कर चुके हैं। वह हाल ही में विदेश से उच्च शिक्षा हासिल करके अपने राज्य में वापस लौटे हैं।

शहर के म्यूजियम रोड पर तेज रफ्तार कार ने जब मोटरसाइकिल को टक्कर मारी तो उस पर सवार मलयालम अखबार 'सिराज' के 35 वर्षीय ब्यूरो चीफ के.मुहम्मद बशीर बाइक समेत एक दीवार से जा टकराए। हादसे के वक्त वह अपना काम खत्म करके घर लौट रहे थे। टक्कर इतनी भयंकर थी बाइक और कार के परखच्चे उड़ गए। कई चीजें दुर्घटनास्थल से दूर बिखरी मिलीं। सड़क पर खून बिखरा हुआ था। बशीर की दुर्घटनास्थल पर ही मौत हो गई।

पुलिस की जांच में पता चला है कि श्रीराम ने घटना के समय शराब पी हुई थी। घटना को लेकर एक प्रत्यक्षदर्शी ने कहा कि मैं फिल्म देखकर लौट रहा था तभी मैंने देखा कि एक तेज रफ्तार कार ने एक बाइक को जोर से टक्कर मारी। इसके बाद मैंने कार की ड्राइविंग सीट से एक युवक को भी निकलते देखा।

तिरुवनंतपुरम के पुलिस कमिश्नर धीनेंद्र कश्यप ने बताया कि कार कौन चला रहा था इसे लेकर कई विरोधाभासी बयान आ रहे थे। लेकिन एक स्वतंत्र प्रत्यक्षदर्शी ने बताया कि श्रीराम ही गाड़ी चला रहे थे।

आजम खां से जुड़े मुकदमे की जांच में तेजी विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार ने सौंपी रिपोर्ट

जागरण संवाददाता, रामपुर

- रिपोर्ट में रजिस्ट्रार ने किसानों की जमीन विवि में होने से किया इन्कार
- तहसील और रजिस्ट्री दफ्तर में खंगाले जा रहे जमीन के अभिलेख

सांसद आजम खां के खिलाफ प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) में केस दर्ज होने के बाद पुलिस ने उनसे जुड़े मुकदमों की जांच तेज कर दी है। जमीन के साक्ष्य भी जुटाने शुरू कर दिए हैं। तहसील और रजिस्ट्री आफिस में अभिलेखों की जांच की जा रही है। यूनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार ने पुलिस को सौंपी रिपोर्ट में उल्लेख किया कि यूनिवर्सिटी के अंदर किसानों की जमीन नहीं है।

पुलिस अधीक्षक डॉ. अजय पाल शर्मा का कहना है कि पुलिस की स्पेशल टीम तेजी से जांच कर रही है। स्पेशल टीम में एक निरीक्षक और दो उपनिरीक्षक शामिल हैं। प्रशासन ने आजम खां को भू-माफिया पहले ही घोषित कर दिया है। किस किसान की कितनी जमीन यूनिवर्सिटी के अंदर है, इसका राजस्व अभिलेखों से मिलान किया जा रहा है। ईडी अगर कोई मदद चाहेगा तो वह की जाएगी।

एसपी ने बताया कि मौलाना मोहम्मद अली जौहर ट्रस्ट ने यूनिवर्सिटी को 30 साल के लिए जमीन दी है। उससे ही ज्यादा जानकारी मिल सकती है। अब जौहर ट्रस्ट से इस बारे में पूछा जाएगा। ट्रस्ट के अध्यक्ष आजम खां हैं।

आजम के खिलाफ जमीन कब्जाने का एक और मुकदमा दर्ज: रामपुर के अजीमनगर थाने में शनिवार को आलिया गंज के किसान असरार की तहरीर पर आजम खां पर मोहम्मद अली जौहर विश्वविद्यालय के लिए जमीन हड़पने का मुकदमा दर्ज हुआ है। वह विवि के कुलाधिपति हैं। यह मुकदमा दर्ज होने के बाद अब तक आजम के खिलाफ जमीन कब्जाने के कुल 28 मुकदमे हो चुके हैं। किसान असरार का आरोप है कि आजम ने सपा सरकार में मंत्री रहते उसकी जमीन पर कब्जा कर लिया। विवि के सुरक्षा अधिकारी आले हसन खां और अजीमनगर के तत्कालीन थानाध्यक्ष कुशल वीर सिंह ने भी उन्हें डराया-धमकाया। चरस व स्मैक में बंद करने की धमकी दी। 15 घंटे तक हवालात में बंद रखा और उसकी जमीन को विवि परिसर में मिला लिया। असरार की तरह ही आलिया गंज के 25 अन्य किसानों ने भी मुकदमे कराए हैं।

तजीन बोलीं, यूनिवर्सिटी से छह लाख रुपये लूट ले गई पुलिस : सपा सासंद आजम खां की पत्नी एवं राज्यसभा सदस्य डॉ. तजीन फात्मा ने पुलिस पर दो दिन पहले यूनिवर्सिटी में छापा मारकर छह लाख रुपये लूट ले जाने का सनसनीखेज आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि लूटे गए सामान की लिस्ट बनाई जा रही है। शासन और प्रशासन हम पर दबाव बना रहा है, लेकिन हम झुकने वाले नहीं हैं। शनिवार को मोहम्मद अली जौहर यूनिवर्सिटी में मीडिया से उन्होंने कहा कि जो नए सुरक्षाकर्मी भेजे गए हैं, उन पर हमें संदेह है। जौहर यूनिवर्सिटी से बरामद किताबों के बारे में कहा कि सिविल लाइंस थाने में बैठकर किताबों पर मदरसा आलिया की फर्जी मुहर लगाई गई है। ईडी की जांच को लेकर बोलीं, पूरी यूनिवर्सिटी चंदे के पैसे से बनी है। जकात के ही छह लाख रुपये चांसलर के कक्ष में रखे थे, जो पुलिस लूट ले गई। पुलिस अधीक्षक डॉ. अजय पाल शर्मा ने कहा कि जौहर यूनिवर्सिटी से कोई कैश नहीं लूटा गया है।

मप्र पूर्व विधानसभा अध्यक्ष के पीए की नौ करोड़ की संपत्ति कुर्क

नईदुनिया, भोपाल : मध्य प्रदेश में आर्थिक अपराध प्रकोष्ठ (ईओडब्ल्यू) ने पूर्व विधानसभा अध्यक्ष ईश्वरदास रोहाणी के पीए रहे सुरेश उपाध्याय के खिलाफ आय से अधिक संपत्ति अर्जित करने के मामले में कार्रवाई की है। उनकी करीब नौ करोड़ रुपये की संपत्ति कुर्क कर ली है। 25 जून 2019 को उपाध्याय के यहां ईओडब्ल्यू ने आय से अधिक संपत्ति अर्जित करने के मामले में छापामार कार्रवाई थी। इसमें जबलपुर स्थित तीन करोड़ का मकान, एक करोड़ का पैतृक मकान, 44 लाख 66 हजार 853 रुपये के जेवरात, दो लाख 54 हजार 980 रुपये की नकदी मिली थी। विवेचना के दौरान सुरेश उपाध्यक्ष, उनकी पत्नी अनुराधा, बेटे सचिन के नाम की 177 एकड़ की 62 रजिस्ट्रियां और 81 खसरा नंबरों की 145 एकड़ जमीन के दस्तावेज के साथ बेटे के नाम से कंपनियों में हिस्सेदारी के साक्ष्य मिले थे। उपाध्याय की जिस संपत्ति को अदालत ने कुर्क करने के आदेश जारी किए हैं, वह अब एक साल तक न तो बेची जा सकेगी, न गिरवी रखी जा सकेगी, न नामांतरण या हस्तांतरण हो सकेगा। ईओडब्ल्यू ने जांच में पाया है कि उपाध्याय को पीएचई की नौकरी में कुल 53 लाख 26 हजार 438 रुपये वेतन मिला।

समर्पण

पति, बेटे, ससुर, दामाद आदि को महिलाओं ने ही दी किडनियां, पिछले दो वर्षों में किडनी प्रत्यारोपण कमेटी के समक्ष 150 अर्जियां पहुंचीं, इनमें से 135 महिलाएं किडनी देने को आगे आईं, पुरुष महज 15

अपनों को मौत के मुहाने से खींचने में महिलाएं आगे

नितिन धीमान, अमृतसर

हाथों की लकीरों में एक जीवनरेखा भी होती है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार यह रेखा इंसान की आयु सीमा का प्रतीक है। इस रेखा को देख-परख कर ही ज्योतिषि उम्र का आकलन करते हैं। खैर, हस्तरेखा का जो भी भावार्थ हो, लेकिन महिलाएं जब अपनों को बचाने की ठान लें तो वे हस्तरेखा के मायने बदल सकती हैं। जी हां, नारी सब पर भारी है।

पिछले तीन सालों में 135 महिलाओं ने अपनी किडनियां देकर अपनों की सांसों को टूटने से बचाया है। पति, बेटे, ससुर, दामाद आदि को महिलाओं ने ही दी किडनियां दी हैं। गुरु नानक देव अस्पताल में किडनी प्रत्यारोपण अधिकृत कमेटी की बैठक में महिलाएं ही अपनों को किडनी देने के लिए आगे आईं। हालांकि, परिवार में पुरुष सदस्य भी थे, जो अपनी किडनी दे सकते थे पर महिलाओं ने समर्पण और त्याग का भाव दिखाते हुए यह पहल की।

वर्ष 2016 से 2019 तक किडनी कमेटी के सम्मुख पंजाब के कोने-कोने से मरीज प्रस्तुत हुए। ये मरीज किडनी फेल होने की वजह से मौत के मुहाने पर खड़े थे। किडनी कमेटी के सम्मुख इन तीन वर्षों में कुल 150 केस आए थे। इनमें से केवल 15 मरीजों को ही परिवार के पुरुष सदस्यों ने किडनी दी। वह भी इसलिए, क्योंकि परिवार में महिला सदस्य नहीं थीं। यदि थीं तो उनका शुगर लेवल अत्यधिक था। पुरुषों को बचाने में मां, बहन, पत्नी यहां तक कि मौसी ने भी अपनी किडनी हंसते-हंसते दे दी।

..और बचा लिया एक-दूसरे का सुहाग

हाल ही में अपना-अपना सुहाग बचाने के लिए दो महिलाओं ने खुद की जिंदगी दांव पर लगा दी। अपने-अपने पतियों की टूटती सांसों को सहेजना ही इन महिलाओं का संकल्प था, जिद थी। अमृतसर के गांव तारां कलां की संदीप कौर व गुरदासपुर के अमन नगर की मनजीत कौर ने अपनी किडनियां देकर अपने-अपने पति की जिंदगी बचाई। संदीप कौर के पति विक्रम सिंह का ब्लड ग्रुप ए पॉजिटिव था और संदीप कौर का बी पॉजिटिव। ब्लड ग्रुप मैच न होने से वह चाहकर भी अपने पति को किडनी नहीं दे पा रही थी। ऐसी ही समस्या गुरदासपुर निवासी गुलजार सिंह के साथ थी। गुलजार का ब्लड ग्रुप बी पॉजिटिव था, जबकि उनकी पत्नी मनजीत कौर का ए पॉजिटिव। इसे महज संयोग ही कहें कि मनजीत कौर और संदीप कौर का मेल हुआ और दोनों का ब्लड ग्रुप इक-दूजे के पति से मैच कर गया। संदीप ने मनजीत से कहा- तू मेरा सुहाग बचा ले, मैं तेरे पति को जिंदगी दूंगी। पति के साथ सात फेरे लेकर साथ जीने-मरने की कसमें खाकर अर्द्धांगिनी बनीं इन महिलाओं ने इक दूजे के पति को किडनी देकर अपना-अपना सुहाग बचाया। ऐसे कई मामले सामने आए जिसमें नारी का समर्पण और त्याग देखकर किडनी कमेटी के सदस्य भी भावुक हो गए।

भाई को तड़पता नहीं देख सकीं होशियारपुर की संदीप कौर

होशियारपुर के गांव फताहपुर की रहने वाली संदीप कौर के भाई की किडनियां फेल हुईं। इसके बाद उनके पास काफी कम वक्त बचा था। हर तरफ हाथ-पैर मारने के बाद भी कोई विकल्प नहीं दिख रहा था। ऐसे में भाई को तड़पता हुआ बहन नहीं देख सकी। डॉक्टरों ने बताया कि उसे बचाने का एकमात्र विकल्प किडनी प्रत्यारोपण है। ऐसे में किडनी कमेटी के सम्मुख पेश होकर संदीप कौर ने गुहार लगाई कि वह सहर्ष अपने भाई को किडनी देना चाहती है ताकि वह अपने भाई को मौत से बचा सके। कमेटी ने मंजूरी प्रदान कर दी। आज वह अपने भाई को बचाकर काफी खुश हैं।

ज्यादातर पुरुष ही किडनी फेल्योर का शिकार

पंजाब में किडनी फेल्योर के मामले लगातार बढ़ रहे हैं। जीवनशैली व आहार में आए बदलाव की वजह से ऐसा हो रहा है। विशेषज्ञ डॉ. नवदीप शर्मा के अनुसार किडनी फेल्योर का शिकार ज्यादातर पुरुष ही हो रहे हैं। नशा सेवन के साथ-साथ गलत दवा खाने से भी यह रोग इंसान को गिरफ्त में ले लेता है।

घर से भागकर बेटी ने शादी की तो पिता ने छपवाई शोक पत्रिका

नईदुनिया, मंदसौर

मध्य प्रदेश में मंदसौर जिले के ग्राम कुचड़ौद में बेटी के घर से भागकर पसंद के लड़के से शादी करने से नाराज पिता ने बेटी को मृत मानकर शोक पत्रिका छपवा दी। यह शोक पत्रिका रिश्तेदारों और परिचितों को भी भेजी गई। शोक पत्रिका में उल्लेख था कि दो अगस्त को बेटी का मृत्युभोज दिया जाएगा। हालांकि, पंचों और गांववालों के दबाव में पिता ने मृत्युभोज के आयोजन को निरस्त कर दिया।

जानकारी के अनुसार 19 वर्षीय लड़की ने पास के ही गांव के लड़के के साथ 21 जुलाई को भागकर शादी कर ली थी। इसके बाद पुलिस थाने में उसने माता-पिता को पहचानने से इन्कार कर दिया। इससे नाराज पिता ने भी बेटी को अपने लिए मृत घोषित कर दिया।

परिवार से जुड़े लोगों का कहना है कि बेटी ने पिता के दर्द का नहीं समझा और परिवार की सहमति के बिना ही कक्षा छह से साथ पढ़ने वाले युवक से कोर्ट में शादी कर ली। इसके बाद पिता और परिवार के अन्य लोगों ने बेटी को खूब समझाया, पर उसने किसी की नहीं सुनी। उसने 25 जुलाई को थाना प्रभारी के सामने माता-पिता को देखकर कहा कि मैं नहीं जानती हूं कि ये लोग कौन हैं। इसके बाद माता-पिता दुखी होकर लौट आए।

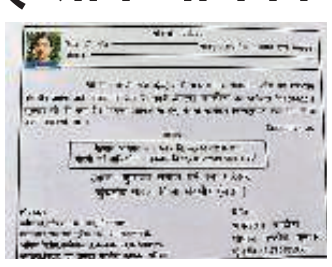

मध्य प्रदेश में मंदसौर जिले के ग्राम कुचड़ौद में बेटी ने घर से भागकर पसंद के लड़के से शादी की तो नाराज पिता ने बेटी को मृत मानकर शोक पत्रिका छपवा दी। नईदुनिया

2,967 बाघ हैं भारत में, जबकि रूस में इनकी संख्या 540 है। इसके बाद मलेशिया, नेपाल और थाइलैंड का नाम आता है, जहां क्रमश : 250, 235 और 189 बाघ हैं।

100 साल का सफर जुनून की कहानी

ईस्ट बंगाल फुटबॉल क्लब

विशाल श्रेष्ठ, कोलकाता

कहते हैं फुटबॉल बंगालियों के खून में है, और फुटबॉल क्लब... वह तो उनका जुनून है। वेग का यह खेल आवेग बनकर हरेक बंगाली की नसों में दौड़ता है। भारतीय फुटबॉल के मक्का कोलकाता में दो फुटबॉल क्लब चिरकालिक हैं-मोहन बागान और ईस्ट बंगाल। दोनों बंगाल की शान हैं। मोहन बागान ने 30 साल पहले 100 साल पूरे कर लिए थे और अब ईस्ट बंगाल भी 100 साल का हो गया है। यह क्लब अपने में एक लंबा इतिहास समेटे हुए है, बिल्कुल किसी फिल्मी कहानी की तरह। इसमें खुशी भी है और गम भी। उन्माद भी है और भावनाएं भी। उपलब्धियां हैं, तो दाग भी हैं। और एक्शन... वो तो भरपूर। खून-खराबा भी जुड़ा है। इन सबके बावजूद ईस्ट बंगाल भारतीय फुटबॉल की एक विरासत है। एक ऐसा अनमोल नगीना, जिसकी चमक समय के साथ बढ़ती जा रही है।

ईस्ट बंगाल क्लब के 100 साल पूरे होने पर क्लब के समर्थकों ने कोलकाता में इस तरह जश्न मनाया। फाइल

यूं हुआ जन्म : 28 जुलाई, 1920 को मोहन बागान का जोराबागान के साथ कूचबिहार ट्राफी का मैच था। जोराबागान टीम प्रबंधन ने अपने अंतिम एकादश में डिफेंडर शैलेश बोस को शामिल नहीं किया। इसका स्पष्ट कारण भी नहीं बताया। जोराबागान के उपाध्यक्ष सुरेश चंद्र चौधरी ने शैलेश को टीम में शामिल करने को कहा, लेकिन कोच राजी नहीं हुए। चौधरी इतने नाराज हुए कि क्लब ही छोड़ दिया और अरविंद घोष नामक शख्स के साथ मिलकर एक अगस्त, 1920 को ईस्ट बंगाल फुटबॉल क्लब की स्थापना की। ईस्ट बंगाल ने उसी महीने अपना पहला टूर्नामेंट 'हरक्युलिस कप' खेला और चैंपियन भी बना।

...और बढ़ता गया सिलसिला : 'हरक्युलिस कप' जीतने के बाद ही ईस्ट बंगाल को इंडियन फुटबॉल एसोसिएशन (आइएफए) से मान्यता मिल गई। क्लब ने आइएफए के सेकंड डिवीजन में खेलना शुरू किया। पहले सीजन में वह तीसरे स्थान पर रहा। 1924 में सेकंड डिवीजन जीतकर फर्स्ट डिवीजन खेलने का दावा पेश किया।

फिर शुरू हुआ बड़ा क्लब बनने का सफर : 1942 में क्लब ने पहली बार फर्स्ट डिवीजन जीता। अगले ही साल आइएफए शील्ड पर पहली बार कब्जा जमाया। 1945 में ईस्ट बंगाल ने कलकत्ता फुटबॉल लीग पहली बार अपने नाम की। इसके बाद 1949 में रोवर्स कप और 1951 में डूरंड कप पर परचम लहराया। क्लब के नाम 2010 से 2017 तक लगातार आठ बार कलकत्ता फुटबॉल लीग जीतने का कीर्तिमान दर्ज है। तीन बार राष्ट्रीय फुटबॉल लीग, आठ बार फेडरेशन कप, तीन बार इंडियन सुपर कप, 39 बार कलकत्ता फुटबॉल लीग, 29 बार आइएफए शील्ड, 16 बार डूरंड कप, 10 बार रोवर्स कप समेत ढेरों खिताब ईस्ट बंगाल के नाम हैं। 1993 में ईस्ट बंगाल ने पहली बार 'वाई वाई कप' के रूप में कोई अंतरराष्ट्रीय खिताब जीता। 2003 में आसियान क्लब चैंपियनशिप जीतकर सबको स्तब्ध कर दिया। उसके अगले ही साल सान मिगुअल इंटरनेशनल कप जीता।

ऐसी प्रतिद्वंद्विता और कहां : ईस्ट बंगाल-मोहन बागान जैसी प्रतिद्वंद्विता शायद ही कहीं देखने को मिले। दोनों टीमों के समर्थकों का इस 'डर्बी मैच' को लेकर ऐसा उन्माद रहता है कि मरने-मारने पर उतारू हो जाते हैं। इसीलिए कोलकाता के विवेकानंद युवा भारती क्रीड़ांगन में जब भी दोनों टीमों के बीच कोई मैच होता है तो सुरक्षा के बेहद कड़े इंतजाम किए जाते हैं। यही नहीं, दोनों टीमों के समर्थकों के लिए गैलरी भी अलग है। दोनों टीमों के बीच सबसे पहला मैच आठ अगस्त, 1921 को कूचबिहार ट्राफी का था, जिसमें कोई भी टीम गोल नहीं कर सकी थी और मैच ड्रा पर खत्म हुआ था। दोनों टीमों के बीच अब तक 367 मैच हुए हैं, जिनमें से ईस्ट बंगाल ने 129, जबकि मोहन बागान ने 118 मैच जीते हैं। 120 ड्रा रहे हैं।

वो भयानक हादसा : 16 अगस्त, 1980 को ईडन गार्डंस में ईस्ट बंगाल-मोहन बागान में मैच के दौरान हुई हिंसा में 16 लोगों की मौत हो गई थी, जबकि दर्जनों घायल हुए थे। मोहन बागान के स्टार खिलाड़ी ओकोली ओडाफा को रेफरी द्वारा लाल कार्ड दिखाने पर उनकी टीम के समर्थकों ने पथराव शुरू कर दिया था। जवाब में ईस्ट बंगाल के समर्थकों ने भी पथराव किया। इस घटना में मोहन बागान के खिलाड़ी सैयद रहीम नबी भी जख्मी हो गए थे। बिगड़े हालात को देख मैच रद कर दिया गया था। ऐसे ही हालात एक बार फिर पैदा हुए। नौ दिसंबर, 2012 को विवेकानंद युवा भारती क्रीड़ांगन में भी एक मैच के दौरान दोनों टीमों के समर्थक भिड़ गए थे, जिसमें 40 लोग जख्मी हो गए थे। उस मैच को भी रद करना पड़ा था।

जब कपिल देव ने ईस्ट बंगाल के लिए खेला था मैच : ईस्ट बंगाल का आकर्षण कुछ ऐसा था कि भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान कपिल देव भी क्लब में शामिल होकर खेलने का ऑफर ठुकरा नहीं पाए थे। ईस्ट बंगाल ने 22 जून, 1992 को कपिल को हस्ताक्षरित किया था। कपिल ने महज छह दिन बाद मोहन बागान के खिलाफ एक प्रदर्शनी मैच में 27 मिनट खेला था।

बंगाल की शान कहे जाने वाले फुटबॉल क्लब ईस्ट बंगाल ने बीते दिनों पूरे किए हैं अपने 100 साल। एक तकरार से शुरू हुए इस क्लब के यहां तक के सफर में कई कीर्तिमान दर्ज हैं। साथ ही हैं उन्माद की ऐसी दास्तानें भी, जिनमें प्रशंसक खून-खराबे तक पर उतर आए। आइए जानते हैं इस ऐतिहासिक क्लब के जन्म की कहानी से लेकर इसके अब तक के सफर को...

आसमान से गिरते पृथ्वी

चर्चित चेहरा

अभिषेक त्रिपाठी, नई दिल्ली

जिन्हें उभरता हुआ सितारा समझा जा रहा था वह बुझते चिराग बनते जा रहे हैं। जिनमें सचिन तेंदुलकर देखा जा रहा था वह विनोद कांबली में तब्दील होते जा रहे हैं। 19 वर्षीय पृथ्वी शॉ ने जूनियर क्रिकेट, रणजी, आइपीएल और फिर टेस्ट मैचों में शानदार प्रदर्शन करके चयनकर्ताओं ही नहीं भारतीय प्रशंसकों के मन मस्तिष्क में अपनी जगह बना ली थी, लेकिन छोटी सी उम्र में की गई बड़ी-बड़ी गलतियों ने उनके क्रिकेट को तो प्रभावित किया ही है, उनकी छवि भी धूमिल हो गई है। कभी खराब व्यवहार के कारण ऑस्ट्रेलिया से लौटाए जाने वाले पृथ्वी शॉ डोपिंग में फंसने के बाद कठघरे में हैं और उनकी शख्सियत पर सवाल उठने लगे हैं।

इस सप्ताह ही भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआइ) ने बताया था कि शॉ को आठ माह के लिए सभी तरह के क्रिकेट से प्रतिबंधित कर दिया है। वह 15 नवंबर, 2019 तक क्रिकेट से दूर रहेंगे। यह प्रतिबंध मार्च 2019 से शुरू हुआ है। वेस्टइंडीज के खिलाफ 2018 में दो टेस्ट मैच खेलने वाले पृथ्वी शॉ का सैयद मुश्ताक अली टी-20 टूर्नामेंट के दौरान डोपिंग टेस्ट किया गया और उन्हें 'टरबुटैलाइन' के सेवन का दोषी पाया गया। शॉ के अलावा दो अन्य घरेलू खिलाड़ियों विदर्भ के अक्षय दुलारवर और राजस्थान के दिव्य गजराज को भी क्रिकेट बोर्ड की डोपिंग रोधी संहिता के उल्लंघन का दोषी पाया गया।

बीसीसीआइ कह रहा है कि शॉ ने अनजाने में प्रतिबंधित पदार्थ का सेवन किया। यह पदार्थ आमतौर पर खांसी की दवा में पाया जाता है। हालांकि यह बात इसलिए हजम नहीं हो रही है क्योंकि शॉ दो टेस्ट के साथ 17 प्रथम श्रेणी, 26 लिस्ट-ए और 33 टी-20 मैच खेलने वाले पृथ्वी को हर तरह की जानकारी दी गई थी। वह बीसीसीआइ की राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (एनसीए) में कई बार ट्रेनिंग कर चुके हैं, जिसमें यह साफ-साफ बताया जाता है कि आपको क्या करना चाहिए और क्या नहीं। ये वही शॉ हैं जिनसे बात करने के लिए मैनेजर की जरूरत पड़ती है, जो बड़े-बड़े करार करने के लिए मैनेजमेंट कंपनी को रखते हैं। इनके बयान एक पीआर कंपनी जारी करती है। ऐसे में यह कहना कि उन्हें पता नहीं था, ये ऐसा थोथा बयान है जिस पर बीसीसीआइ के लोग ही विश्वास नहीं कर रहे हैं तो बाकी दुनिया क्या करेगी।

बीसीसीआइ की तरफ से लगाए गए प्रतिबंध के कारण शॉ वेस्टइंडीज के अलावा, दक्षिण अफ्रीका और बांग्लादेश के खिलाफ घरेलू सीरीज में नहीं खेल पाएंगे। बीसीसीआइ ने यह भी बताया कि प्रतिबंध पिछली तिथि से क्यों लगाया गया। बीसीसीआइ के एडीआर आर्टिकल 10.10.3 के अनुसार दोषी पाए जाने पर पूरा प्रतिबंध होता है, लेकिन क्योंकि शॉ ने इसे स्वीकार किया तो बीसीसीआइ एडीआर आर्टिकल 10.10.2 के अनुसार पिछली तिथि से ही यह प्रतिबंध लगता है, जब टेस्ट (22 फरवरी, 2019 शॉ का टेस्ट) लिया जाता है। ऐसे में क्योंकि शॉ पर 16 मार्च, 2019 से प्रतिबंध लगा है तो उनका यह प्रतिबंध 15 नवंबर, 2019 को समाप्त होगा। हालांकि इसे आंखों में धूल झोंकना ही कहा जा सकता है। बीसीसीआइ उस तिथि से शॉ पर प्रतिबंध लगा रहा है जिस समय वह खेल रहे थे। जब कोई खिलाड़ी किसी तारीख को खेल चुका है तो तब से प्रतिबंध लगाने का मतलब क्या बनता है। कुल मिलाकर गरीबी से उठकर पृथ्वी ने जिस आसमान को चूमने की कोशिश की थी, अब वह उसी आसमान से गिरकर फिर से जमीन पर आ गए हैं।

बीते दिनों डोपिंग में फंसने के बाद पृथ्वी शॉ पर आठ महीने का प्रतिबंध लगा दिया गया, जिसके बाद कई सवाल खड़े हुए। आखिर वह कैसे इसमें फंसे और बीसीसीआइ ने किन नियमों के तहत उन पर यह कार्रवाई की...

बड़े पर्दे पर जमाना देखेगा 'लेडी टार्जन' जमुना टुडू की कहानी

इनसे मिलिए

वेंकटेश्वर राव/पंकज मिश्रा, जमशेदपुर

ये कहानी है झारखंड के पूर्वी सिंहभूम जिले के चाकुलिया ब्लॉक के मुटुरखाम गांव निवासी 38 वर्षीय जमुना टुडू की। इन्हें लोग लेडी टार्जन के नाम से भी जानते हैं। बात 1998 की है, जब जमुना की शादी बेडाडीह टोला गांव में हुई थी। जमुना को लगा कि उनके गांव के आसपास के जंगलों की ज्यादा कटाई हो रही है। उन्होंने गांव वालों से कटाई रोकने को कहा, लेकिन किसी ने साथ नहीं दिया। जमुना चार महिलाओं को साथ जोड़कर जंगल को कटाई से बचाने के लिए वन माफिया से भिड़ गईं। 2004 में वन रक्षक समिति बनाई, जिससे गांव की 60 महिलाएं जुड़ीं। अब उनके दल में 300 महिलाएं शामिल हैं। वन एवं पर्यावरण के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय कार्यों को देखते हुए पद्मश्री सहित कई पुरस्कारों से उन्हें सम्मानित किया जा चुका है। अब उनके जीवन में एक और उपलब्धि जुड़ने वाली है। प्रसिद्ध फिल्म निर्माता-निर्देशक चिलुकुरी प्रसाद एवं कथा लेखक धर्मेंद्र बघेल उनके जीवन पर बायोपिक बनाने जा रहे हैं। संभवतः महेंद्र सिंह धौनी के बाद झारखंड की वह दूसरी शख्सियत होंगी, जिनकी बायोपिक रिलीज होगी।

बायोपिक के लिए जमुना से स्वीकृति लेने के लिए लगभग 1700 किमी की दूरी तय कर चिलुकुरी प्रसाद व धर्मेंद्र बघेल मुंबई से चाकुलिया पहुंचे और काकडीसोल स्थित जमुना के आवास पर उनसे मुलाकात की। उन्होंने बताया कि जमुना की कहानी से प्रभावित होकर वे अपनी कंपनी ए विलेज टॉकीज प्रोडक्शन के बैनर तले बायोपिक बनाना चाहते हैं। चिलुकुरी ने जमुना से अनुमति लेकर सहमति पत्र पर हस्ताक्षर भी लिया। बताया कि करीब दो महीने में फिल्म की कहानी लिख ली जाएगी और साल के अंत तक शूटिंग शुरू कर दी जाएगी। यह शूटिंग चाकुलिया के अलावा रांची व राज्य के अन्य कई हिस्सों में की जाएगी। फिल्म में जमुना के किरदार के लिए विद्या बालन या सोनाक्षी सिन्हा के नाम की चर्चा चल रही है। विदित हो कि हाल के वर्षों में बॉलीवुड में बायोपिक फिल्मों का चलन काफी बढ़ा है। जाने-माने क्रिकेटर महेंद्र सिंह धौनी, पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह, सुपर थर्टी के संस्थापक आनंद कुमार समेत कई हस्तियों पर बायोपिक रिलीज हो चुकी है, जिसे दर्शकों ने काफी सराहा भी है।

ये सम्मान मिले : जंगल बचाने की मुहिम को देखते हुए जमुना को 2013 में फिलिप्स ब्रेवरी अवॉर्ड दिया गया। 2014 में उन्हें स्त्री शक्ति अवॉर्ड मिला। 2016 में देश की प्रथम 100 महिलाओं में शामिल की गईं।

अगर ठान लिया जाए तो बड़ी से बड़ी लड़ाई अकेले लड़ी भी जा सकती है और जीती भी। झारखंड की जमुना टुडू इसकी मिसाल हैं। पद्मश्री से सम्मानित इस लेडी टार्जन के जीवन पर अब बनने जा रही है बायोपिक...

जमुना टुडू फाइल फोटो

पलक झपकाओ, दूर और पास का नजारा पाओ

कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने ऐसे लोगों के लिए एक खास प्रकार के लेंस का प्रोटोटाइप तैयार किया है, जिनकी दृष्टि बेहद कमजोर है और चश्मा पहनना मजबूरी है। इसकी मदद से पलक झपकते ही दूर और पास की चीजों को स्पष्ट देखा जा सकेगा। स्ट्रेची पॉलीमर फिल्म से तैयार इस लेंस को शोधकर्ताओं ने बायोमीट्रिक लेंस का नाम दिया है।

ऐसे करेगा काम

शोधकर्ताओं के मुताबिक इस लेंस को पहनने के बाद आंखों का मूवमेंट करते ही एक खास प्रकार का सिग्नल जनरेट होगा, जिसे इलेक्ट्रोऑक्यूलोग्राफिक सिग्नल कहते हैं। इस सिग्नल की मदद से लेंस को फैलने और सिकुड़ने में मदद मिलती है। ऐसे में दो बार आंखों को झपकाने पर दूर और ऐसा दोबारा करने पर पास की चीजों को स्पष्ट देखा जा सकेगा।

सिग्नल देने की होती है ताकत

पलकें झपकाने में सिग्नल देने की ताकत होती है। जब आप नींद में होते हैं तब भी आपकी आंखों में इलेक्ट्रोऑक्यूलोग्राफिक सिग्नल भेजने की क्षमता होती है। जब आप कुछ भी नहीं देख रहे होते हैं तब भी कुछ लोग अपने आंखों की पुतलियों का मूवमेंट कर इलेक्ट्रोऑक्यूलोग्राफिक सिग्नल जनरेट कर रहे होते हैं।

अभी जारी है रिसर्च

शोधकर्ताओं का कहना है कि अभी इस तकनीक पर काम किया जा रहा है। लेंस को आम लोगों तक पहुंचने से पहले कई और प्रयोगों से गुजरना है। इस लेंस का इस्तेमाल भविष्य में रोबोटिक आई के तौर पर भी किया जा सकेगा। शोधकर्ताओं ने उम्मीद जताई है कि जल्द इसे पूरी तरह से तैयार कर लिया जाएगा।

गूगल ने बी तैयार किया था स्मार्ट लेंस

2014 में सर्च इंजन गूगल ने भी स्मार्ट कॉन्टेक्ट लेंस पर काम करना शुरू किया था। यह लेंस लगाने वाले मधुमेह रोगियों के आंसू से ही ग्लूकोज का स्तर जांच लेता था। हालांकि 2018 में इस प्रोजेक्ट पर रोक लगा दी गई थी।

...जिसने मध्य प्रदेश को फिर बनाया टाइगर स्टेट

टर्निंग प्वाइंट

संजय कुमार शर्मा, उमरिया

मध्य प्रदेश का बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व अपने आप में अनूठा है। हाल ही में आई राष्ट्रीय बाघ आकलन रिपोर्ट 2018 के अनुसार, मध्य प्रदेश के छह टाइगर रिजर्व में सबसे ज्यादा करीब 110 बाघ बांधवगढ़ में पाए गए हैं। बांधवगढ़ के लिए गर्व की बात यह है कि यहां बाघों की बढ़ी हुई आबादी ने प्रदेश को टाइगर स्टेट का खोया हुआ दर्जा दिलाने में अहम भूमिका निभाई है। विंध्य पर्वत की गोद में बसे इस टाइगर रिजर्व को बाघों के साथ जैव विविधता के लिए भी जाना जाता है। करीब 1500 वर्ग किमी में फैले रिजर्व में जंगल, खड़ी चट्टानें और खुले मैदान हैं। 1968 में नेशनल पार्क बनाए गए बांधवगढ़ में कुछ ऐसे स्थान भी हैं जो पर्यटकों में खासे लोकप्रिय हैं।

बांधवगढ़ में बाघों के अलावा दूसरे वन्य प्राणी भी बहुतायत में है। यहां 22 प्रजाति के स्तनधारी हैं, जबकि पक्षियों की 250 प्रजातियां हैं। एशियाई सियार, धारीदार लकड़बग्घा, बंगाली लोमड़ी, रॉटेल, भालू, जंगली बिल्ली, भूरा नेवला और तेंदुआ सहित गिलहरी, छोटा चूहा और छोटा भारतीय कस्तूरी भी यहां पाए जाते हैं। बांधवगढ़ का नाम यहां स्थित एक मुख्य पहाड़ के नाम पर पड़ा है। 811 मीटर ऊंचे इस पहाड़ के पास छोटी-छोटी पहाड़ियां भी हैं, जो इसकी खूबसूरती को और बढ़ा देती हैं। यहां के ताला और मगधी में पर्यटकों को बाघ आसानी से दिखाई देते हैं। बाघों की संख्या बढ़ाने और उन्हें अच्छा वातावरण मुहैया कराने के लिए कुदरती कॉरिडोर विकसित किया जा रहा है। साल और बांस के वृक्ष की अधिकता इसकी प्राकृतिक सुंदरता को बढ़ाती है। बांधवगढ़ का सबसे नजदीकी एयरपोर्ट जबलपुर में है, जो यहां से 164 किलोमीटर की दूरी पर है। रेल मार्ग से भी बांधवगढ़ जबलपुर, कटनी और सतना से जुड़ा है। विश्व प्रसिद्ध पर्यटक स्थल खजुराहो से बांधवगढ़ की दूरी 237 किमी है। बांधवगढ़ के बीच से गुजरने वाली सोन नदी के कुछ हिस्सों को क्रोकोडाइल रिजर्व भी घोषित किया गया है।

बांधवगढ़ के ताला गेट में पर्यटकों की जिप्सियों की कतार। फाइल फोटो

बांधवगढ़ ने ही दिया विश्व को पहला सफेद बाघ : विश्व में पहला सफेद बाघ बांधवगढ़ में ही पाया गया था। यह पहले रीवा रियासत का हिस्सा था और उसके महाराज मार्तंड सिंह को यहीं वर्ष 1951 में सफेद बाघ मिला था। उन्होंने उसका नाम मोहन रखा और बाद में उसे महाराजा ऑफ रीवा के महल में रखा गया। नेशनल पार्क बनाए जाने से पहले बांधवगढ़ की एक पहचान रीवा महाराजाओं और उनके मेहमानों की शिकारगाह के रूप में थी।

बाघिन सीता और बाघ चार्जर से मिली खूब ख्याति : यहां पाई जाने वाली खूबसूरत बाघिन सीता से भी बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व को खूब प्रसिद्धि मिली। यहां आने वाले पर्यटकों ने सबसे ज्यादा उसी की तस्वीरें लीं। फिर उसकी खूबसूरती को किसी की नजर लग गई और उसका शिकार हो गया। बांधवगढ़ का एक बाघ चार्जर काफी शरारती था। उसे पर्यटकों की गाड़ी के पास जाकर हरकतें करने में बड़ा आनंद मिलता था। 1990 के आसपास के सालों में चार्जर को काफी प्रसिद्धि मिली। चार्जर की उम्र पूर्ण होने पर वर्ष 2000 में उसकी मौत हो गई। उसके शव को जहां दफनाया गया उस जगह को आज चार्जर प्वाइंट के नाम से जाना जाता है।

धार्मिक स्थान भी हैं : बांधवगढ़ में वन्य प्राणियों के अलावा कई धार्मिक स्थान भी हैं। यहां धर्म और कर्म की संस्कृति भी बसती है। रिजर्व में भगवान राम का प्राचीन मंदिर है। यहां लोग हर साल कृष्ण जन्माष्टमी पर श्रद्धा के साथ आते हैं और पूजा करके लौट जाते हैं। इस मौके पर पार्क प्रबंधन श्रद्धालुओं के लिए विशेष इंतजाम करता है।

बीते सप्ताह जारी की गई राष्ट्रीय बाघ आकलन रिपोर्ट 2018 जहां एक ओर देश के लिए बड़ी खुशखबरी लेकर आई, वहीं इसने मध्य प्रदेश का खोया हुआ टाइगर स्टेट का दर्जा भी उसे वापस लौटा दिया। इसमें सबसे अहम भूमिका निभाई है राज्य के बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व ने, जहां बाघों की अच्छी संख्या पाई गई। यहां टाइगर के अलावा और भी कई चीजें हैं, जो पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं...

लैब में तैयार हुआ दुनिया का पहला इंसान-बंदर का मिश्रित भ्रूण

स्पेन के वैज्ञानिकों ने चीन की लैब में पहली बार इंसानी बंदर का भ्रूण विकसित किया है, जो इंसान की स्टेम कोशिकाओं और आनुवांशिक रूप से तैयार बंदर के भ्रूण से मिलकर तैयार किया गया है। कानूनी कार्रवाई से बचने के लिए यह प्रयोग चीन में किया गया। हालांकि भ्रूण को 14 दिनों तक विकसित करने के बाद इसपर रोक लगा दी गई। यह कदम इंसानों में जानवर के अंगों को ट्रांसप्लांट करने के लिए अहम माना जा रहा है। इस विवादित तकनीक पर वैज्ञानिकों को आगे बढ़ने के लिए हाल ही में जापान सरकार ने अनुमति दी है। वहां भी वैज्ञानिक मानव अंगों को जानवरों के शरीर के भीतर विकसित करने के प्रयोग में जुटे हैं। जिससे कि दुनिया भर में अंग प्रत्यारोपण का इंतजार करते लोगों की जरूरतें पूरी की जा सकें।

ऐतिहासिक सफलता

स्पेन के वैज्ञानिक जुआन कार्लोस के नेतृत्व में शोधकर्ताओं की एक टीम ने इंसान और बंदर के संकर भ्रूण को विकसित करने में सफलता हासिल की है। यह प्रयोग इस मायने में भी अहम है कि इसमें बंदर की कोशिका को जेनेटिकली मॉडीफाइड यानी उसके डीएनए को बदल कर इंसानी स्टेम सेल से भ्रूण तैयार किया गया। इससे बंदर के अंदर वांछित इंसानी अंग तैयार किए जा सकते हैं। कार्लोस ने 2017 में भी पहली बार इंसान और सुअर का संकर भ्रूण तैयार किया था।

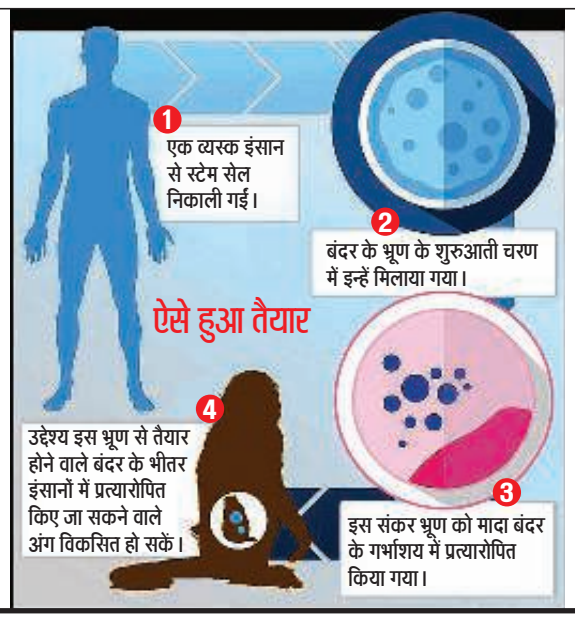

भ्रूण को खत्म करने की बाध्यता

इस शोध का परिणाम अभी किसी अंतरराष्ट्रीय पत्रिका में नहीं छपा है, लेकिन स्पेनिश वेबसाइट एल-पेस के मुताबिक तैयार हुए संकर भ्रूण को 14 दिन के भीतर ही उसके केंद्रीय तंत्रिका तंत्र के विकास से पहले ही खत्म कर दिया गया। क्योंकि इस विवादास्पद तकनीक के तहत अंतरराष्ट्रीय नियम-कानून किसी भ्रूण को 14 दिन से अधिक विकसित करने की अनुमति नहीं देते हैं।

क्रांतिकारी तकनीक

कई देशों में इस तरह के प्रयोग गैर कानूनी हैं। हालांकि ज्यादातर वैज्ञानिक इस तकनीक को अंग प्रत्यारोपण के क्षेत्र में क्रांतिकारी मानते हैं। यदि इस तरह के प्रयोगों को कानूनी मान्यता मिल जाती है तो लाखों लोगों की जान बच सकती है।

ठीक नहीं प्रयोग

हालांकि कुछ वैज्ञानिक इसका विरोध करते हैं। इसके पीछे दलील कुदरत के नियम के विपरीत काम करने की दी जाती है। साथ ही वैज्ञानिक यह भी अभी पुष्टि नहीं कर पाए हैं कि जानवरों के भीतर विकसित किए गए ऐसे अंग मानव के लिए कितना मुफीद साबित होंगे। कहीं जानवर का मस्तिष्क इंसान की तरह विकसित हो गया तो क्या होगा? ऐसी तमाम आशंकाओं के चलते नैतिकता-अनैतिकता की बहस जारी है।

पर्सनल लॉ की जगह ले नेशनल लॉ

हृदयनारायण दीक्षित
विधानसभा अध्यक्ष, उप्र

'पर्सनल लॉ' व्यावहारिक नहीं है। हम सब भारतीय परिवार के अंग हैं। आस्था और राष्ट्रीयता में टकराव उचित नहीं। आस्था व्यक्तिगत होती है, राष्ट्र और राष्ट्रीयता सर्वोपरि निष्ठा है। यह निष्ठा समान नागरिक संहिता से पुष्पित होगी।

राष्ट्र का शक्ति संवर्द्धन प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। संप्रति प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में राष्ट्र को अजेय अपराजेय बनाने का अभियान जारी है। राष्ट्र नागरिकों की अविभाजित निष्ठा से मजबूत होते हैं, राष्ट्र वैयक्तिक कानून मानने वाले समूहों का गठजोड़ नहीं होते। इतिहास संस्कृति व भूमि के प्रति एक समान स्वाभिमान, राष्ट्रीय समृद्धि के एक समान स्वप्न, जय पराजय की एक समान अनुभूति और एक समान नागरिक संहिता राष्ट्र शक्ति के मूलाधार हैं। संविधान निर्माताओं ने 'एक समान नागरिक संहिता' का राष्ट्रीय स्वप्न संविधान (अनुच्छेद 44) में राज्य के नीति निदेशक तत्वों में रखा। बेशक नीति निदेशक तत्व न्यायालयों द्वारा प्रवर्तनीय नहीं है लेकिन अनुच्छेद 37 के अनुसार, 'इनमें अधिकाथित तत्व देश के शासन में अंगभूत -फंडामेंटल्स इन द गवर्नेंस ऑफ द कंट्री' हैं। विधि निर्माण में इन सिद्धांतों को लागू करना राज्य का कर्त्तव्य होगा।'

समान नागरिक संहिता का प्रवर्तन राष्ट्र-राज्य का कर्तव्य है। सुप्रीम कोर्ट ने भी 2003 में समान नागरिक संहिता की जरूरत पर बल दिया था। वह पहले भी ऐसा कह चुका है। सारा देश 'समान नागरिक संहिता का पक्षधर है। लेकिन एक समुदाय के कुछ लोग राष्ट्रीय कानून के सामने पर्सनल लॉ के आग्रही हैं। भारत संप्रदायों का गठजोड़ नहीं है। यहां पंथ या जाति नागरिक इकाई नहीं है। संविधान की उद्देशिका में 'हम भारत के लोग' ही राष्ट्र की इकाई है। समान नागरिक संहिता राष्ट्रीय जरूरत है। संविधान सभा में इस पर विचारोत्तेजक बहस (23.1.1948) हुई थी। मो. इस्माइल (मद्रास) ने कहा, 'देश में समन्वय के लिए यह अपेक्षित नहीं है कि लोगों को उनके निजी कानून छोड़ने के लिए बाध्य किया जाये'। अधिकांश मुस्लिम सदस्यों ने 'पर्सनल लॉ' को जरूरी और 'नेशनल लॉ' को गलत बताया। मौलिक अधिकारों के बहाने कहा गया कि यह अल्पसंख्यकों के प्रति अन्याय है। लेकिन केएम मुंशी ने मौलिक अधिकार के तर्क को काट दिया। उन्होंने कहा, 'किसी भी उन्नत देश में अल्पसंख्यक जाति के निजी कानून को अटल नहीं माना गया है कि व्यवहार संहिता बनाने का निषेध हो। तुर्की अथवा मिस्र को लीजिए। इन देशों में किसी अल्पसंख्यक को ऐसे अधिकार नहीं दिये गये हैं। हमारी महत्वपूर्ण समस्या राष्ट्रीय एकता स्थापित करना है। हम अपने आपको एक राष्ट्र कहते हैं। इसीलिये एक राष्ट्र नहीं है, अपितु हम वास्तव में भी राष्ट्र हैं। मित्र यह नहीं समझेंगे कि यह अल्पसंख्यकों के साथ अन्याय है। मुस्लिम मित्र समझ लें कि जितना जल्दी हम अलगाववादी भावना को भूल जायेंगे उतना ही देश के लिए अच्छा होगा।' अल्लादिकृष्णा स्वामी अय्यर ने कहा कि अंग्रेजों ने देश पर अधिकार के बाद देश में एक ही आपराधिक कानून लागू किया। क्या एक आपराधिक कानून बना देने पर मुसलमानों ने अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह किया? डा बीआर आंबेडकर ने कहा कि श्रीमान जो संशोधन पेश हुए हैं मैं उन्हें स्वीकार नहीं कर सकता। मैं असंख्य उदाहरण दे सकता हूं। इस देश में लगभग एक ही व्यवहार संहिता है, एकविधि है। इस अनुच्छेद 35 (अब अनुच्छेद 44) को विधान का भाग बनाने की इच्छा सुधार की है। हमें ऐसा करना चाहिए या नहीं, यह तर्क मुझे अनुपयुक्त दिखाई देता है। अब यह पूछने का समय बीत चुका है कि क्या हम ऐसा कर सकते है?

डॉ आंबेडकर ने कहा, 'मैं इस कथन को चुनौती देता हूं कि मुसलमानों का निजी कानून, सारे अटल तथा एकविधि था। मेरे मित्र, भूल गये कि सन् 1935 तक पश्चिमोत्तर सीमाप्रांत में शरियत रियत कानून लागू नहीं था। उत्तराधिकार तथा अन्य विषयों में वहां हिंदू कानून का अनुसरण किया जाता था। 1937 तक पश्चिमोत्तर सीमाप्रांत के अतिरिक्त शेष भारत के भी विभिन्न भागों में, यथा युक्तप्रांत, मध्यप्रांत तथा बंबई में उत्तराधिकार के विषय में काफी हद तक मुसलमानों पर हिंदू कानून लागू था। समस्त नागरिकों पर उनके धर्म का विचार न करते हुए एक ही व्यवहार संहिता लागू करने के लिए नयी व्यवहार संहिता में हिंदू कानून के कुछ अंश रख दिये गये हैं - इसलिए नहीं कि वे हिंदू कानून के अंश हैं, इसलिए कि वे सर्वाधिक उपयुक्त हैं। विश्वास है कि किसी मुसलमान को यह कहने का अधिकार नहीं होगा कि व्यवहार संहिता के बनाने वालों ने मुस्लिम भावनाओं के प्रति कठोरता बरती है। इसके बाद विरोधी संशोधनों पर मतदान हुआ। प्रस्ताव हार गया। संहिता संविधान का हिस्सा बनी।

समान नागरिक संहिता पर सकारात्मक विचार का उचित समय आ गया है। राष्ट्रीय एकता और महान भारत की महत्वाकांक्षा के स्वप्न कृति आकार ले रहे हैं। 'पर्सनल लॉ' व्यावहारिक नहीं है। हम सब भारतीय परिवार के अंग हैं। आस्था और राष्ट्रीयता में टकराव उचित नहीं। आस्था व्यक्तिगत होती है, राष्ट्र और राष्ट्रीयता सर्वोपरि निष्ठा है।

पुराने समय की बात है...

अंग्रेजों की व्यवस्था
1772 में वॉरेन हेस्टिंग्स ने उत्तराधिकार, शादी-विवाह और अन्य धार्मिक मामलों में दिए आदेश में कहा कि मुस्लिमों से संबंधित कुरान के कानून और हिंदुओं के लिए शास्त्र से जुड़े नियम-कानूनों का पालन किया जाए।

निष्प्रभावी हुआ फतवा
1817 में ब्रिटिश जजों ने फतवों की व्यवस्था को निष्प्रभावी कर दिया। एक प्रस्ताव पारित कर फतवों की बाध्यकारी प्रकृति को खत्म किया गया।

मुस्लिम पर्सनल लॉ
1937 के शरई कानून के तहत मुस्लिमों के लिए कुछ पर्सनल कानून बनाए गए लेकिन अंग्रेजों ने मुस्लिमों पर इन कानूनों को थोपा नहीं। इसके सेक्शन तीन के अनुसार यह उन्हीं मुस्लिम पर लागू होता था जिन्होंने लिखित में इसके दायरे में आने की बात मानी थी।

स्पेशल मैरिज एक्ट, 1954
अलग-अलग धर्मों के लोग इसके तहत अपनी शादी को पंजीकृत करवा सकते हैं। इसमें यह भी प्रावधान है कि किसी अन्य रूप में की गई शादी को भी स्पेशल मैरिज एक्ट में पंजीकृत किया जा सकता है (अगर यह इस कानून की जरूरतों को पूरी कर रहा हो)।

मौजूद नियम-कानून
शादी-तलाक को लेकर विभिन्न धर्मों के लोगों के लिए अब तक कई कानून बनाए जा चुके हैं। इनमें प्रमुख हैं-
- द कनवर्ट्स मैरिज डिसोल्युशन एक्ट, 1866
- द इंडियन डिवोर्स एक्ट, 1869
- द इंडियन क्रिश्चियन मैरिज एक्ट, 1872
- द काजी एक्ट, 1880
- द आनंद मैरिज एक्ट, 1909
- द इंडियन सक्सेशन एक्ट, 1925
- द चाइल्ड मैरिज रेस्ट्रेंट एक्ट, 1929
- द पारसी मैरिज एंड डिवोर्स एक्ट, 1936
- द डिसोल्युशन ऑफ मुस्लिम मैरिज एक्ट, 1939
- द स्पेशल मैरिज एक्ट, 1954
- द हिंदू मैरिज एक्ट, 1955
- द फॉरेन मैरिज एक्ट, 1969
- द मुस्लिम वीमेन (प्रोटेक्शन ऑफ राइट्स ऑन डिवोर्स) एक्ट, 1986

आजाद भारत में पहल: आजादी के बाद जब देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू और पहले कानून मंत्री बीआर आंबेडकर ने समान नागरिक संहिता लागू करने की कोशिश की तो इस प्रयास को संविधान सभा में भारी विरोध का सामना करना पड़ा। नेहरू को विवश होकर खुद को हिंदू कोड बिल तक ही सीमित करना पड़ा। यह बिल हिंदुओं, सिखों, जैनियों और बौद्धों पर लागू होता है। इससे द्विपत्नी और बहुपत्नी प्रथा को समाप्त किया गया। महिलाओं को तलाक और उत्तराधिकार का अधिकार मिला। शादी के लिए जाति को अप्रासंगिक बनाया गया।

तलाक से यूसीसी तलक

अंग्रेजों की हुकूमत से आजादी मिलने के बाद से ही यूसीसी यानी यूनिफॉर्म सिविल कोड (समान नागरिक संहिता) की जरूरत महसूस की जाती रही है। स्वतंत्र भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने इस दिशा में कदम भी उठाया लेकिन हिंदू कोड बिल ही लागू करा सके। संविधान निर्माता भीमराव आंबेडकर भी समान नागरिक संहिता के पक्षधर थे, लेकिन जब उनकी सरकार यह काम न कर सकी तो उन्होंने पद छोड़ दिया। इससे पहले संविधान सभा में जब आंबेडकर ने यूनीफॉर्म कोड अपनाने की बात रखी तो कुछ सदस्यों ने उग्र विरोध किया, लिहाजा मसले को संविधान के अनुच्छेद 44 में नीति-निर्देशक तत्वों के तहत रख दिया गया। अब जब मुस्लिम महिलाओं के लिए तत्काल तीन तलाक जैसी सामाजिक कुप्रथा को खत्म करने के लिए 'द मुस्लिम वुमेन (प्रोटेक्शन ऑफ राइट्स ऑन मैरिज) एक्ट, 2019' लागू हो चुका है तो इन महिलाओं को और सशक्त किए जाने को लेकर समान नागरिक संहिता की जरूरत शिद्दत से महसूस की जाने लगी है। आखिर एक देश में एक ही काम के लिए अलग-अलग धर्मों-संप्रदायों के बीच अलग-अलग प्रावधान कैसे हो सकते हैं? विधि आयोग पहले से ही इस पर काम कर रहा है। कई बार सुप्रीम कोर्ट सरकार से इसे लागू करने को लेकर सवाल-जबाव कर चुका है। ऐसे में महिलाओं को बराबरी का दर्जा देने के लिए लोगों में जागरुकता के साथ जरूरत है, दृढ़ इच्छाशक्ति की। यह जितना समाज के भीतर से दिखे, उतनी ही सरकार के स्तर पर भी दिखनी चाहिए। तभी सही मायने में तमाम विसंगतियों का अंत होगा और राष्ट्र एक सूत्र में मजबूती से जुड़ेगा।

इलस्ट्रेशन : अवधेश

समान मसला तो समान कानून

अभी देश में विभिन्न धर्मों और संप्रदायों के लोगों के लिए शादी, बच्चे को गोद लेना, संपत्ति या उत्तराधिकार आदि मामलों को लेकर अलग-अलग नियम है। लिहाजा किसी धर्म में जिस बात को लेकर पाबंदी है, दूसरे संप्रदाय में उसी बात की खुली छूट है। इससे देश के बीच एकरूपता नहीं आ पा रही है। आजादी के बाद से ही सभी धर्मों के लिए एक ऐसे कानून बनाए जाने की बात होती रही है जो सब पर एक समान लागू हो। हालांकि अभी तक सहमति नहीं बन सकी है। पूर्व में हिंदू कोड बिल और अब तत्काल तीन तलाक पर बना कानून इस दिशा में बड़े कदम माने जा रहे हैं।

समान नागरिक संहिता
धार्मिक मान्यताओं से जुड़े कानूनों को समाप्त करने और इसकी जगह पर एक समान कानून लागू करने का प्रस्ताव है समान नागरिक संहिता। फिलहाल भारत में विभिन्न धर्म और संप्रदाय के लोगों के अपने निजी धार्मिक कानून हैं। समान नागरिक संहिता केवल शादी, तलाक, संपत्ति, उत्तराधिकार, बच्चा गोद लेने और गुजारा भत्ता जैसे मुद्दों पर लागू होगी।

पर्सनल लॉ पुरानी बात
गोवा देश का एकमात्र ऐसा राज्य है जहां गोवा फैमिली लॉ के नाम से समान नागरिक संहिता लागू है। दरअसल पर्सनल लॉ की मांग आजादी से काफी पहले हुई थी। उस वक्त तक इसकी जरूरत भी थी। समान नागरिक संहिता का मसला 20वीं सदी की शुरुआत से जोर पकड़ने लगा। खासतौर पर महिला अधिकारों की मांग तेज होती गई।

संविधान का हिस्सा
नागरिक संहिता का मुद्दा आज का नहीं है। भारतीय संविधान निर्माताओं ने जब इसकी नींव डाली उसी वक्त समान नागरिक संहिता भी अस्तित्व में आई। संविधान सभा में बाकायदा इस पर चर्चा भी हुई। यह जरूर है कि उस वक्त भी इसे लेकर काफी मतभेद थे। 1949 और फिर 1951 से 1954 के बीच संसद में इस पर तीखी बहस हुई। तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू तो इस विधेयक के समर्थन में थे पर इसे लेकर सभी को मनाने में वह सफल नहीं हुए। लिहाजा इसे नीति निर्देशक तत्व के अनुच्छेद 44 में शामिल कर दिया गया।

मांगी गई जनता की राय
समान नागरिक संहिता पर जनता की राय जानने के लिए साल 2016 में सात अक्टूबर को विधि आयोग ने एक प्रश्नावली जारी की। इसका मकसद विभिन्न समुदायों के लोग खासतौर पर महिलाओं के साथ सांस्कृतिक और धार्मिक रीति-रिवाजों के नाम पर हो रहे भेदभावपूर्ण बर्ताव को खत्म करना और उन्हें समान अधिकार सुनिश्चित कराना था।

मौजूदा स्थिति
फिलहाल विभिन्न धर्म को मानने वाले अपनी धार्मिक मान्यताओं, संस्कृति और रीति-रिवाजों के आधार पर शादी, संपत्ति, तलाक और बच्चा गोद लेने के फैसले कर सकते हैं। यदि इसमें कोई विवाद पैदा हो जाए तो इसके लिए कोई कानून नही होता है।

विवाद क्यों
संविधान के अनुच्छेद 29 और 30 अल्पसंख्यकों को अपनी संस्कृति, धार्मिक रीति-रिवाज के संरक्षण का अधिकार सुनिश्चित करते हैं। वे अपने धर्म के हिसाब से शिक्षण संस्थानों का संचालन कर सकते हैं। अपने धर्म, रीति रिवाज और मान्यताओं का अनुसरण कर सकते हैं। जबकि समान नागरिक संहिता को इन अधिकारों पर खतरे के तौर पर देखा जा रहा है।

किस्सा पुराना
हिंदू राष्ट्रवादी समय-समय पर इस कानून की मांग करते रहे हैं। इस पर उनका तर्क यह है कि हिंदू रूढ़िवादियों के विरोध के बावजूद जब जवाहरलाल नेहरू के समय हिंदुओं को शादी, गोद लेने, और संपत्ति और उत्तराधिकारी से संबंधित कानून का पालन करना पड़ा तो इससे अन्य संप्रदायों और धर्मों को मानने वालों को क्यों बचाकर रखा गया है।

इन मुद्दों पर टकराव
निजी और नागरिक संहिता खासतौर पर शादी, संपत्ति के अधिकार और बच्चा गोद लेने के मुद्दे को लेकर अलग है। पुरुषों के प्रभुत्व वाला ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड तीन तलाक मामले में कोई बदलाव नहीं चाहता था, लेकिन सुप्रीम कोर्ट इसे खत्म करने का फैसला सुनाया और सरकार ने इसके खिलाफ कानून बना सदियों की कुप्रथा का अंत किया। यह मुस्लिम संगठन बहुविवाह की परंपरा को भी जारी रखना चाहता है।

बड़े सुधार की जमीन तैयार

मोदी सरकार ने तीन तलाक के खिलाफ कानून बनाकर महिला सशक्तीकरण की दिशा में बड़ी जमीन तैयार की है। अब समान नागरिक संहिता की संवैधानिक कल्पना साकार हो सकती है।

आरिफ मोहम्मद खां, शाहबानो मामले में तत्कालीन राजीव गांधी सरकार से मतभेद के बाद मंत्री पद से इस्तीफा देने वाले

शाहबानो मामले में सुधार करने का सूत्रपात सुप्रीम कोर्ट की तरफ से हुआ था। तत्कालीन केंद्र सरकार की उसमें कोई भूमिका नहीं थी। तत्कालीन राजीव गांधी सरकार ने तो वह राहत जो न्यायालय ने अपराध प्रक्रिया संहिता के अनुच्छेद 125 के तहत 67 साल की एक असहाय बूढ़ी महिला को मुहैया कराई थी, उसे भी कानून बनाकर छीन लिया था। अनुच्छेद 125 का कोई संबंध पर्सनल लॉ से नहीं था। पर्सनल लॉ सिविल मामला है और अनुच्छेद 125 अपराध संहिता का प्रावधान है जिसका उद्देश्य दरिद्रता तथा भटकाव की स्थिति को रोकना है। इस प्रावधान के अंतर्गत यदि कोई अपने ऊपर आश्रित व्यक्ति के भरण पोषण की जिम्मेदारी से कन्नी काटता है तो पीड़ित व्यक्ति न्यायालय की शरण ले सकता है। न्यायालय पीड़ित को एक निश्चित राशि गुजारा भत्ता के रूप में दिला सकता है। इसकी अधिकतम सीमा 1986 में 500 रुपये थी। न्यायालय ने शाहबानो को केवल 174.20 रुपये प्रति माह देने का आदेश दिया था। लेकिन शाहबानो के पति ने इस्लामिक क़ानून का हवाला देकर कहा कि ऐसा करना मुस्लिम पति की जिम्मेदारी नहीं है और मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने वादी का समर्थन किया।

सुप्रीम कोर्ट में मुकदमा हारने के बाद बोर्ड ने अदालत के निर्णय के विरुद्ध पूरे देश में ऐक अत्यंत आक्रामक अभियान छेड़ दिया जिसमें उसने अदालत के निर्णय को धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप बताया और यह कहा कि इससे मुसलमानों का मिल्ली तशख्खुस (सामुदायिक पहचान) खतरे में पड़ गई है। अभियान के बीच बहुत हिंसक भाषा का प्रयोग हुआ। आखिरकार प्रचंड बहुत वाली तत्कालीन राजीव गांधी सरकार ने बोर्ड के सामने घुटने टेक दिए और एलान किया कि 5 फरवरी 1986 से आरंभ होने वाले शीतकालीन सत्र में एक विधेयक लाकर सुप्रीम कोर्ट के फैसले को निष्प्रभावी बना दिया जाएगा। सरकार का यह कदम ना केवल प्रतिगामी शक्तियों के सामने शर्मनाक समर्पण था बल्कि इस प्रस्तावित विधेयक के जरिए उन्होंने जघन्य संवेदनहीनता भी दिखाई। जिसमें उन्होंने 67 साल की एक महिला के मुंह से निवाला भी छीन लिया। वे लोग जिन्होंने मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के दबाव में आकर 1986 में कानून बनाकर मुस्लिम असहाय महिलाओं से उनका अधिकार छीना था आज वह फिर बोर्ड के कहने पर उस कानून का विरोध कर रहे हैं जिसके माध्यम से तीन तलाक जैसी कुप्रथा को खत्म किया गया है। कहा जा रहा है कि तलाक तो सिविल मामला है इसे आपराधिक कैसे बनाया जा सकता है और तीन तलाक देने वाले के लिए सजा का प्रावधान क्यों किया गया है? ऐसा कहने वाले लोग इस्लामी कानून से परिचित नहीं हैं। इस्लामी कानून में शुरू से ही तीन तलाक को हराम यानी आपराधिक माना गया है और यह काम करने वालों को 40 कोड़ों की सजा दी जाती थी।

मुझे पूरा विश्वास है कि जब इतिहासकार इस बारे में लिखेंगे तो वह पायेंगे कि मोदी सरकार के इस फैसले ने न सिर्फ मुस्लिम महिलाओं को एक भयंकर कुप्रथा से मुक्त किया है बल्कि इसके नतीजे में एक नई चेतना और जागृति का सृजन होगा जिससे सभी भारतीय महिलाओं के सशक्तीकरण में सहायता मिलेगी। हमारा संविधान सभी देशवासियों के लिए एक समान नागरिक संहिता की कल्पना करता है। इस समान नागरिक संहिता का अर्थ आस्था या रीति रिवाज की समानता नहीं है बल्कि यह समानता केवल शादी विवाह के रिश्तों से उत्पन्न दुनियावी अधिकारों तथा जिम्मेदारियों की समानता है। अगर हम इस दिशा में आगे बढ़ते हैं तो वह लोग भी संतुष्ट हो जायेंगे जो आज सजा के मामले में भेदभाव की शिकायत कर रहे हैं।

जनमत

हां 87% नहीं 13%

क्या देश समान नागरिक संहिता लागू करने की ओर बढ़ रहा है?

हां 91% नहीं 09%

क्या देश में समान नागरिक संहिता लागू करने का वक्त आ गया है?

आपकी आवाज

समान नागरिक आचार सहिंता आज की जरूरत है। एक लोकतांत्रिक समाज में अलग-अलग धर्मों के लिए मौजूद पर्सनल लॉ की गुंजाइश नहीं है। समाज की बेहतरी के लिए यह कानून महत्वपूर्ण है।
राकेश कुमार

जिनकों लगता है कि इस कानून के लागू होते ही उनका धर्म खतरे में आ जाएगा। उन्हें इसके बारे में पढ़ना चाहिए। ये कानून लोगों को उनके धर्म को मानने की आजादी को कम नहीं करता, बल्कि विवाह, उत्तराधिकार, दत्तक ग्रहण तथा जायदाद के मामलों में समरूपता लाता है।
अनुज कुमार

देश में समान नागरिक आचार सहिंता पर बहस कई सालों से चल रही है। यह सही समय है कि इस कानून को लागू किया जाए। जब एक देश एक संविधान एक कर है तो एक कानून क्यों न हो।
मिथलेश सिंह

कई विकसित और विकासशील देशों में यह कानून मौजूद है। इस कानून के लागू होने से समाज में व्याप्त तमाम कुरीतियां खत्म हो जाएंगी।
विपिन तिवारी

राष्ट्रीय चरित्र के विकास की दरकार

देश में समान नागरिक संहिता की जरूरत या गैरजरूरत वाली सोच का लंबा इतिहास रहा है। 1928 में पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा तैयार एक रिपोर्ट में पहली बार इसकी चर्चा की गई। यह रिपोर्ट वास्तव में, स्वतंत्र भारत के संविधान का एक प्रारूप थी, जिसे मोतीलाल नेहरू ने तैयार किया था। इसमें यह प्रस्ताव था कि स्वतंत्र भारत में विवाह से संबंधित सभी मामलों को एक समान कानून के तहत लाया जाए। लेकिन तब ब्रिटिश सरकार ने इस रिपोर्ट को स्वीकार करने से इंकार कर दिया था, क्योंकि इसमें भारत के लिए प्रभुत्व का प्रस्ताव रखा था, जो अंग्रेजों के लिए अस्वीकार्य था। 1939 में इस मुद्दे पर लाहौर में कांग्रेस द्वारा एक बैठक बुलाई गई जहां नेहरू की रिपोर्ट के व्यावहारिक पहलुओं पर चर्चा हुई लेकिन इसे अक्षमता के आधार पर खारिज कर दिया गया था।

1985 के बाद से समान नागरिक संहिता के मुद्दे ने सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीशों के साथ एक नया आयाम ग्रहण किया। देश के शीर्ष न्यायालय की इस केस में भागीदारी 1985 में पूर्व मुख्य न्यायाधीश चंद्रचूड़ द्वारा दिए गए एक फैसले के साथ शुरू हुई। शाहबानो मामले में अपने प्रसिद्ध फैसले में, न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ ने यह टिप्पणी करने की आवश्यकता महसूस की थी कि संविधान के अनुच्छेद 44 के तहत अध्यादेश लाना समय की मांग है। इसके बाद 1985 में, सुप्रीम कोर्ट के एक अन्य न्यायाधीश, श्री चिन्नप्पा रेड्डी ने एक समान मामले से निपटते हुए कहा था, 'वर्तमान केस समान नागरिक संहिता की आवश्यकता पर केंद्रित एक और मामला है।' यही बात 1995 में सुप्रीम कोर्ट की दो सदस्यीय बेंच; जस्टिस कुलदीप सिंह और जस्टिस आरएम के फैसले में भी नजर आई थी। उनके फैसले में कहा गया था, 'समान पर्सनल लॉ लागू करना राष्ट्रीय एकता की दिशा में एक निर्णायक कदम है ... देश में एक समान पर्सनल लॉ लागू करने में अनिश्चित काल तक देरी करने का कोई औचित्य नहीं है।' लोग संविधान के अनुच्छेद 44 का उल्लेख करते हुए एक समान नागरिक संहिता की वकालत करते हैं, लेकिन कम लोग इस तथ्य पर विचार करते हैं कि भारतीय संविधान के अनुच्छेद 25 में अनुच्छेद 44 का खंडन मौजूद है। अनुच्छेद 25 के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को समान रूप से धार्मिक स्वतंत्रता और अपनी धार्मिक पद्धति और उसका प्रचार करने का हक है। आज जिस 'सामान्य भावना' की बात की जा रही है वह सदियों से हमारे देश में मौजूद रही है। हमारे देश में विभिन्न समुदाय सौहार्दपूर्वक एक साथ रहते आये हैं, हालांकि उस समय में समान नागरिक संहिता जैसा कुछ भी नहीं था। प्रत्येक समुदाय की अपनी सांस्कृतिक पहचान रही और अपनी धार्मिक परंपराओं के अनुसार उनके यहां विवाह किया जाता रहा। क्योंकि उस समय राष्ट्रीय एकीकरण के भाव में लोग परस्पर जीते थे। यह शब्द अपने पूर्ण अर्थ में मौजूद था। जो संतुलन समान नागरिक संहिता की अनुपस्थिति के कारण नहीं बल्कि पूर्व ब्रिटिश सरकार की नीति से बिगड़ा। यह ब्रिटिश शासकों की एक सुविचारित नीति थी, जिसके कारण भारत में हमेशा से मौजूद राष्ट्रीयता का विघटन हो गया। समान नागरिक संहिता किसी भी तरह से एकरूपता या राष्ट्रीय एकता से संबंधित नहीं है। यहां तक कि समान नागरिक संहिता का पालन करने वाले भी नियमित रूप से एक दूसरे से लड़ते रहे हैं।

21 अगस्त, 1972 को नई दिल्ली से छपे 'द मदरलैंड' को दिए एक इंटरव्यू में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के दूसरे सरसंघचालक माधव सदाशिव गोलवलकर 'गुरुजी' ने कहा था कि राष्ट्रीय एकता के लिए समान नागरिक संहिता आवश्यक नहीं। उनके अनुसार इस तरह की एकरूपता की आवश्यकता नहीं। भारतीय संस्कृति ने विविधता में एकता की अनुमति दी है। उनके अनुसार महत्वपूर्ण बात यह थी कि सभी नागरिकों; हिंदू और गैर-हिंदू के बीच तीव्र देशभक्ति और भाईचारे की भावना को बढ़ावा देना आवश्यक है।वास्तव में भारत को एक एकजुट, शांतिपूर्ण और विकसित देश बनाने के लिए राष्ट्रीय चरित्र की आवश्यकता है। जहां व्यक्तिगत शिकायतों का राष्ट्र निर्माण के सामने कोई वजूद नहीं रह जाता। समान नागरिक संहिता अपनाने जैसे सतही कदम से देशभक्ति कभी पैदा नहीं हो सकती। लोगों की सोच को रचनात्मक दिशा में मोड़ना होगा। इसके लिए हमें सभी संसाधनों का लाभ उठाकर जनता को शिक्षित करना होगा। हमें बौद्धिक जागृति और जागरूकता का एक व्यापक अभियान शुरू करना होगा।

शिक्षा का महत्व राष्ट्रीय निर्माण के उद्देश्य के लिए इतना महान है कि इसकी तुलना में समान नागरिक संहिता की बात गौण है। शिक्षा से व्यक्ति में सही सोच विकसित होती है। जो एक समाज या राष्ट्र निर्माण के लिए सबसे ज्यादा महत्व रखती है।

रामिश सिद्दीकी
इस्लामिक विद्वान और अध्यक्ष, फोरम फॉर पीस एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट

देश में ऐसे राष्ट्रीय चरित्र के विकास की दरकार है जहां व्यक्तिगत शिकायतों का राष्ट्र निर्माण के सामने कोई वजूद नहीं रह जाता। समान नागरिक संहिता अपनाने जैसे कदम से देशभक्ति कभी पैदा नहीं हो सकती। लोगों की सोच को रचनात्मक दिशा में मोड़ना होगा।

Downloaded from: www.iascgl.com

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
रविवार 4 अगस्त 2019

दैनिक जागरण

लक्ष्य के लिए योजना बनाएं और फिर योजना अनुरूप कार्य करें

जरूरी है जनसंख्या रजिस्टर

एक ऐसे समय जब असम में राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर यानी एनआरसी पर काम हो रहा है तब राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर अर्थात एनपीआर की तैयारी स्वागतयोग्य है। यह काम इसलिए होना चाहिए ताकि उन हालात से बचा जा सके जिनसे आज असम दो-चार हो रहा है। जहां एनआरसी यह बताएगा कि कौन देश का नागरिक है वहीं एनपीआर देश में रहने वालों की पहचान सुनिश्चित करेगा। बेहतर होता कि देश में रहने वालों की पहचान तय करने का काम पहले ही कर लिया जाता। चूंकि यह नहीं किया गया इसीलिए आज असम में यह बताना मुश्किल है कि कौन देश का नागरिक है और कौन बांग्लादेश से आकर वहां बस गया है? चूंकि किसी भी देश के नागरिकों और निवासियों में भेद होता है और उनके अधिकार भी अलग-अलग होते हैं इसलिए एनपीआर बनना ही चाहिए। पता नहीं भविष्य में असम की तरह शेष देश में नागरिक रजिस्टर तैयार करने की जरूरत पड़ेगी या नहीं, लेकिन अगर कभी पड़ी तो उसका आधार जनसंख्या रजिस्टर ही बनेगा।

आज जैसे असम में यह जानना कठिन है कि किसे नागरिक के तौर पर देखा जाए और किसे निवासी के रूप में वैसे ही स्थिति देश के कुछ अन्य हिस्सों में भी बन रही है। ऐसा इसीलिए है, क्योंकि दूसरे देशों से वैध-अवैध तरीके से भारत आकर बसने वालों की पहचान का कोई तंत्र नहीं बन सका। बांग्लादेश से लाखों लोगों की घुसपैठ ने असम समेत पूर्वोत्तर के अन्य राज्यों और साथ ही पश्चिम बंगाल में जो गंभीर समस्याएं खड़ी कीं वे किसी से छिपी नहीं। ये लाखों लोग देश के संसाधनों का इस्तेमाल कर रहे हैं और उसके चलते पूर्वोत्तर राज्यों के नागरिक अपने अधिकारों का हनन होते हुए देख रहे हैं। वे अपनी सांस्कृतिक पहचान बचाए रखने के लिए भी चिंतित हैं। विडंबना यह है कि इस चिंता की अनदेखी कर कुछ लोग बाहर से आने वालों के प्रति नरमी बरतने का उपदेश देने में लगे हुए हैं। वे रोहिंग्या के प्रति भी उदारता बरतने की वकालत कर रहे हैं। यह ठीक नहीं। भारत कोई धर्मशाला नहीं कि जो चाहे, यहां आकर बस जाए और संसाधनों की तंगी को बढ़ाने का काम करे। आखिर जब पश्चिम के धनी देश अवैध प्रवासियों के प्रति सख्त हैं तो भारत क्यों उनके प्रति उदारता बरते और वह भी तब जब वे सुरक्षा के लिए खतरा बन सकते हों। राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर की तैयारी अच्छी बात है, लेकिन इसी के साथ सीमाओं की सुरक्षा पर भी ध्यान देना जरूरी है। यह अच्छा नहीं हुआ कि हजारों रोहिंग्या पूर्वोत्तर के सीमावर्ती इलाकों से घुसपैठ कर जम्मू जाकर बस गए और किसी को कुछ पता नहीं चला।

मिलावट का धंधा

पिछले कुछ महीनों में पूर्वोत्तर भारत के सबसे बड़े थोक बाजार कोलकाता स्थित बड़ाबाजार, उससे सटे जोड़ाबागान से लेकर उल्टाडांगा इलाके तक में मिलावटी मसाले के धंधे का भंडाफोड़ हुआ है। अब तक हजारों किलोग्राम मिलावटी मसाले जब्त किए गए हैं और कई लोगों की गिरफ्तारी भी हुई है। बावजूद इसके मिलावट के कारोबार पर लगाम नहीं लग पा रही है। मिलावट का यह कारोबार इतना खतरनाक है कि लोग रसायन मिले मसाले खाकर बीमार पड़ रहे हैं। शुक्रवार को इंफोर्समेंट ब्रांच (ईबी) ने काशीपुर थाना इलाके में ऐसे ही एक कारखाने का भंडाफोड़ करते हुए 900 किलोग्राम मिलावटी मसाले जब्त कर प्रदीप सिंह नामक शख्स को गिरफ्तार किया। दरअसल 25 जुलाई को उल्टाडांगा इलाके में नकली मसाला कारखाने का भंडाफोड़ हुआ था। वहां से जीतेंद्र कहार नामक एक युवक को गिरफ्तार किया गया था। कहार से पूछताछ में इस कारखाने का पता चला। इसके बाद छापामारी कर प्रदीप सिंह को गिरफ्तार कर लिया गया। मौके से 700 किलोग्राम हल्दी पाउडर, 50 किलो जीरा पाउडर, 50 किलो साबुत धनिया, 15 किलो धनिया पाउडर, 80 किलो चावल आटा, 25 किलो पीला रंग और 15 किलो लाल रंग बरामद किया गया है। प्रदीप सिंह ने पूछताछ में बताया कि खराब गुणवत्ता वाले चावल को पीसकर उसमें रंग मिलाने के बाद उसे मसाले में मिक्स कर दिया जाता था। इससे यह पकड़ना मुश्किल हो जाता था कि मसाले मिलावटी हैं। इससे मसालों का वजन भी बढ़ जाता था और खर्च भी बहुत कम पड़ता था। कोलकाता में इस तरह के मिलावटी मसालों का धंधा खूब फल-फूल रहा है। यह तो पिछले कुछ माह से थोड़ी निगरानी बढ़ाई गई है तो एक के बाद एक खुलासे हो रहे हैं। अन्यथा रसायन एवं कृत्रिम रंग मिले मसाले खाकर न जाने कितने लोग बीमार हुए होंगे। पुलिस भी मान रही है कि लंबे समय से मिलावटी मसाले तैयार करने का कारोबार चल रहा है। रंग और रसायन का प्रयोग कर हल्दी, जीरा पाउडर और मिर्च पाउडर तैयार किया जाता था। मसाले में चावल पाउडर, आटा व मैदा का भी प्रयोग किया जाता था। इसके बाद उसके ऊपर रंग और सुगंध के लिए रसायन का छिड़काव कर दिया जाता था। तैयार मिलावटी मसालों को पैकेट में भरकर राज्य के विभिन्न जिलों में भेज दिया जाता था। ईबी के अनुसार मिलावटी मसाला बनाने का कारोबार महानगर के कई और स्थानों पर भी हो सकता है।

अर्थव्यवस्था की सुस्ती का निदान

संजय गुप्त

इससे इन्कार नहीं कि उद्योग-व्यापार जगत का मनोबल बढ़ाने की जरूरत है, लेकिन यह भी ध्यान रहे कि आज की सबसे बड़ी समस्या दो नंबर की अर्थव्यवस्था है

लोकसभा चुनावों में भाजपा की बड़ी जीत का कारण केवल कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों की कमजोरी ही नहीं थी, बल्कि देश की जनता और खासकर निर्धन तबके के साथ-साथ निम्न-मध्यम और मध्य वर्ग का प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर भरोसा था। यह भरोसा मोदी सरकार की ओर से पांच साल में किए गए कार्यों की वजह से उपजा। 2014 में जब मोदी ने सत्ता संभाली थी तो आर्थिक माहौल बेहतर नहीं था। मोदी ने आर्थिक माहौल को बेहतर बनाने के साथ गरीबों के कल्याण के लिए तमाम योजनाएं चलाईं। मोदी सरकार की जिन योजनाओं ने जमीन पर असर दिखाया उनमें आवास, शौचालय, बिजली संबंधी योजनाओं के साथ उज्ज्वला, जनधन, आयुष्मान भारत योजना प्रमुख हैं। इन योजनाओं के अतिरिक्त आम चुनाव के ठीक पहले शुरू की गई किसान सम्मान निधि योजना ने भी अपना असर दिखाया। इस योजना के तहत छोटे किसानों को सालाना छह हजार रुपये दिए जा रहे हैं। किसान सम्मान निधि योजना की राशि और साथ ही सब्सिडी का पैसा नकदी हस्तांतरण के तहत लोगों के खाते में सीधे पहुंचने का एक लाभ यह हुआ कि इन योजनाओं में भ्रष्टाचार की गुंजाइश खत्म हो गई। इससे भी लोगों का मोदी सरकार पर भरोसा बढ़ा और भाजपा को प्रचंड जीत मिली, लेकिन इस सरकार के दूसरे कार्यकाल की शुरुआत के साथ ही अर्थव्यवस्था में सुस्ती ने जिस तरह सिर उठाना शुरू किया उसके आम बजट से दूर होने की उम्मीद की जा रही थी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। उलटे बजट के कुछ प्रावधानों और खासकर अति अमीरों से ज्यादा टैक्स लेने की नीति ने उद्योग-व्यापार जगत को हतोत्साहित करने का काम किया। इसके अलावा भी कई अन्य ऐसे संकेत सामने आ गए हैं जो अर्थव्यवस्था में सुस्ती को प्रकट कर रहे हैं, जैसे रेटिंग एजेंसी क्रिसिल द्वारा विकास दर का अनुमान घटा कर 6.9 प्रतिशत करना और शेयर बाजार में गिरावट जारी रहना।

यदि हम अर्थव्यवस्था में सुस्ती के कारणों की तह में जाएं तो पाएंगे कि पिछले एक दशक के आर्थिक हालात का विपरीत असर मोदी सरकार के पहले कार्यकाल के आखिरी समय पड़ा। उद्योगों के बीमार होकर बंद होने और उद्योगपतियों द्वारा भारी-भरकम कर्ज लेकर उसे चुकाने से इन्कार करने अथवा खुद को विलफुल डिफाल्टर में तब्दील करने से हालात और खराब हुए। इस सबके बीच वित्तीय संस्था आइएलएंडएफएस के फेल होने से स्थितियां और उलझ गईं। हालांकि मोदी सरकार दीवालिया संहिता कानून लेकर आई और उसमें निरंतर सुधार भी किए, लेकिन उसके सकारात्मक नतीजे आने में समय लगेगा। आज स्थिति यह है कि अर्थव्यवस्था के लिए जितनी पूंजी चाहिए उतनी की आपूर्ति नहीं हो पा रही है। अर्थव्यवस्था की मौजूदा हालत को देखते हुए ऐसी भी स्थिति आ सकती है कि लोगों को अपने छोटे कर्ज चुकता करने में परेशानी का सामना करना पड़े। अगर ऐसा हुआ तो बड़े कर्ज के साथ-साथ छोटे कर्ज भी बट्टे खाते में जा सकते हैं। इसकी भी अनदेखी नहीं की जा सकती कि निजी क्षेत्र में निवेश लगभग बंद सा पड़ा है और देश के दो सबसे बड़े उद्योग ऑटोमोबाइल और रियल एस्टेट मंदी के दौर से गुजर रहे हैं। ये दोनों ही सेक्टर लगभग 60 से 65 प्रतिशत रोजगार प्रदान करते हैं। तमाम अर्थशास्त्रियों का मानना है कि अगर स्थिति जल्द नहीं सुधरी तो 10 लाख नौकरियां अकेले ऑटोमोबाइल सेक्टर में ही जा सकती हैं।

अवधेश राजपूत

यह राहतकारी है कि मोदी सरकार न केवल उद्योग-व्यापार की चिंताओं का समाधान करने के लिए सक्रिय हो रही है, बल्कि ऐसे संकेत भी दे रही है कि वह विदेशी निवेशकों पर कर अधिभार पर नए सिरे से विचार कर रही है। यह समय की मांग भी है, क्योंकि विदेशी निवेशकों पर कर अधिभार लगाने का नकारात्मक असर दिखने लगा है। इससे इन्कार नहीं कि उद्योग-व्यापार जगत का मनोबल बढ़ाने की जरूरत है, लेकिन इसी के साथ यह भी ध्यान रहे कि आज की सबसे बड़ी समस्या दो नंबर की अर्थव्यवस्था है। पहले नोटबंदी और फिर जीएसटी के जरिये सरकार ने दो नंबर की अर्थव्यवस्था को नियंत्रित करने की कोशिश की, लेकिन इन दोनों कदमों के कारण कारोबार जगत को तमाम परेशानियों का सामना करना पड़ा। हालांकि सरकार के पास दो नंबर वाले तौर-तरीके अपनाने वालों के बारे में इतनी जानकारी आ गई है कि वह बिग डेटा के जरिये और आयकर एवं जीएसटी अधिकारियों के सहयोग से अनियंत्रित अर्थव्यवस्था को नियंत्रण में ला सकती है, लेकिन इससे कारोबारी और परेशानी महसूस कर सकते हैं। चूंकि वे आशंकित हैं इसलिए निवेश से हाथ खींच रहे हैं। समानांतर अर्थव्यवस्था को संकुचित करने की कोशिश छोटे-मझोले कारोबारियों तक भी पहुंच सकती है। वास्तव में अभी तो यह शुरुआत है, क्योंकि जीएसटी में अभी तक लिंकेज की घोषणा नहीं हुई है। जिस दिन वह होगी उस दिन से समानांतर अर्थव्यवस्था के बारे में और जानकारी सामने आने लगेगी। इसी तरह यह भी स्पष्ट है कि टैक्स हैवेन माने जाने वाले देशों ने अपने यहां के बैंकों के विदेशी खाताधारकों के बारे में जानकारी देना शुरू कर दिया है। इस सिलसिले के बढ़ने से उन कारोबारियों की मुश्किलें बढ़ना तय है जिन्होंने अनुचित तरीके से विदेशी बैंकों में धन जमा कर रखा है।

हाल में सीएजी ने जीएसटी के तहत दो साल बाद भी सिस्टम आधारित इनपुट टैक्स क्रेडिट, इनवायस मैचिंग न चालू होने पर सरकार को आगाह किया है। फिलहाल आसार यही हैं कि मोदी सरकार दो नंबर की अर्थव्यवस्था को नियंत्रित करने के अपने इरादे से डिगने वाली नहीं है, लेकिन इसके साथ ही उसे कारोबारियों को भी भरोसा दिलाना जरूरी है। इससे ही माहौल बदलने में आसानी होगी। वैसे भी एक बड़ा वर्ग अपनी पुरानी आदतों को छोड़कर मुख्यधारा की अर्थव्यवस्था में शामिल हो रहा है। हालांकि इस क्रम में वह आयकर अधिकारियों के निशाने पर भी आ रहा है। अच्छा हो कि यह देखा जाए कि जो व्यापारी पहले गलत तौर-तरीके अपनाए हुए थे और अब उन्हें छोड़ रहे हैं उनके प्रति नरम रवैया अपनाया जाए। ऐसा नहीं है कि हर कारोबारी समानांतर अर्थव्यवस्था चलाने में माहिर है। तमाम कारोबारी कानून के दायरे में रह कर ईमानदारी के साथ अपना काम कर रहे हैं। उन्हें भी शक की निगाह से देखा जाए, इसका कोई औचित्य नहीं। आयकर अधिकारियों को सही और गलत तौर-तरीके अपनाने वाले कारोबारियों में फर्क करना होगा। देश की उन्नति के लिए जितना जरूरी सरकारी नीतियों पर सही तरह से अमल होना है उतना ही यह भी कि कारोबारियों की उद्यमशीलता कायम रहे, क्योंकि देश की पूंजी वही बनाते हैं।

response@jagran.com

उधार के सींगों वाली सियासत

हास्य-व्यंग्य

ज्ञान चतुर्वेदी

राजनीति चुनाव के वक्त गाय से सींग उधार ले गई और फिर वापस नहीं किए। अब गाय निहत्थी और राजनीति मरखनी है

राजनीति की कथा लिखने में यही तो आनंद रहता है, कोई झंझट नहीं रहता। राजनीति हर जगह हो सकती है। होती ही है। तो कथा यूं बन रही है कि कहीं राजनीति होती थी। और वहीं गाय भी थी। गाय भी हर जगह होती ही है। यहां भी थी। गाय अक्सर सड़क पर ही मिलती। दूध देती नहीं थी सो कोई उसे पूछता नहीं था। तो कथा में राजनीति के अलावा गाय भी थी। अब ये दो सर्वव्यापी टाइप के चरित्र इस कथा में, कहीं न कहीं तो, कभी न कभी आपस में मिलने ही थे। एक दिन वे दोनों सड़क पर ही रूबरू हो गए।

मुझे तुमसे कुछ प्रश्न पूछने थे? गाय ने राजनीति को सामने खड़ा देखा तो उससे कहा। यूं तो राजनीति की मुलाकात गाय से रोजाना होती ही रहती थी। बयानों में, पोस्टरों में, फतवों में, नारों में, बहस में, पर इस तरह एक दिन वही गाय यूं उसके ठीक सामने पड़ जाएगी, इसका अंदेशा उसे भी नहीं था। राजनीति ने स्थिति से निपटने की ठानी। 'कैसी हो गौमाता?' राजनीति ने उसे प्रणाम किया।

गाय राजनीति की विनम्रता के निहितार्थ समझ गई। उसने पहले ही स्पष्ट चेतावनी देना उचित समझा। 'देख लो, मेरे पास दूध नहीं है।' गाय ने कहा।

राजनीति ने हाथ जोड़ दिए। 'दूध नहीं चाहिए। पेट भरा पड़ा है माता। पेट फूला पड़ा है। गैस बन रही है। दूध के लिए जगह ही नहीं है।' राजनीति ने कहा।

गाय कुछ देर चुप रहकर उसका पेट देखती रही। सारा देश उदरस्थ कर लिया है क्या?

'तूने मेरे सींग वापस नहीं किए रे? 'गाय ने उलाहना के स्वर में कहा।

राजनीति कभी चुनाव के टाइम पर गाय से सींग उधार ले गई थी। फिर उसने वे सींग वापस ही नहीं किए। तबसे गाय तो निहत्थी हो गई और राजनीति मरखनी।

'माता, वैसे भी तू सींगों का इस्तेमाल तो करती नहीं। अपने सिर पर फालतू ही सजाये घूमती रहती थी। लोग तुझसे डरते ही नहीं थे। हमने कम से कम जमाने में तेरे सींगों का भय तो पैदा किया। है कि नहीं? फिर? तेरे पास तो ये सींग फालतू ही पड़े रहते। है न? हमने तो तेरे सींगों की इज्जत ही बढ़ाई है। 'राजनीति ने गर्व से कहा।

गाय ने राजनीति के हाथों में अपने सींग देखकर पूछा, 'पर मेरे ये सींग पहले इतने पैने तो कभी नहीं थे? तुम्हारे हाथों में आते ही ये इतने पैने कैसे हो गए हैं?'

राजनीति मुस्कराने लगी। 'हमारे पास हर चीज को पैना, नुकीला और घातक बनाने की तरकीब आ गई है। इसे ही तो मीडिया वाले आजकल धारदार राजनीति कहने लगे हैं। हम आजकल बयानों, भाषा, धर्म, सेवा और विनम्रता में भी एक खास तरह का पैनापन ले आए हैं।' राजनीति ने गर्व से कहा।

'पर यह तो ठीक नहीं।' गाय ने कहा।

'सब ठीक है।' और तुम अपने सींगों को दोष कतई मत दो। हमारे हाथ में जो भी आता है उसे ही हम बेहद पैना बना सकते हैं। इसकी एक पूरी राजनीतिक मैनेजमेंट की टेक्नोलॉजी बनाई है हमने।' राजनीति ने कहा।

'तुम अपना यह गलत कारोबार बंद क्यों नहीं कर देते? अपनी यह मशीनरी किसी अच्छे काम में लगाओ न?' गाय ने भर्त्सना करते हुए कहा।

'हम अच्छे काम ही तो कर रहे हैं। अपने चारों तरफ तो देखो। जो हो रहा है वह सब अच्छा काम नहीं है क्या? बता कि लोग आजकल तुझसे डरने लगे हैं कि नहीं? ठीक? अब जो कहीं तू रास्ते में मिल जाए तो सब अदब से पेश आते हैं कि नहीं? गौशाला में तुझे किसी भी हाल में रखा जाए लोग तेरी दुर्दशा पर चुप रहते हैं। गौशाला के बजट में जो भी घपले होते रहें, लोग इसके पवित्र कार्य में दखल देने से घबराने लगे हैं। गौमाता से जुड़ा भ्रष्टाचार भी अब संवेदनशील मुद्दा माना जाता है। बता कि हमारा यह काम अच्छा नहीं है क्या? देख, तूने तो कभी अपनी ताकत को नहीं पहचाना। राजनीति ने तेरी ताकत को पहचान लिया। है कि नहीं? यह अच्छा काम नहीं है क्या? सो तू अपने ये फालतू के प्रश्न अपने पास ही रख। तू अपना काम कर। हमें अपना करने दे। बस, तू तो अपना नाम हमें दे दे। और अपने सींग हमसे वापस न मांग। वे अब हमारे शस्त्रागार का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।'

राजनीति गाय को समझाने लगी। गाय राजनीति के सामने बेबस खड़ी है। वह इसे समझ रही है।

एक कसाईबाड़ा यह भी तो है।

response@jagran.com

तथ्य-कथ्य

विभिन्न देशों का जीडीपी

(ट्रिलियन डॉलर में)

एक ट्रिलियन = एक लाख करोड़

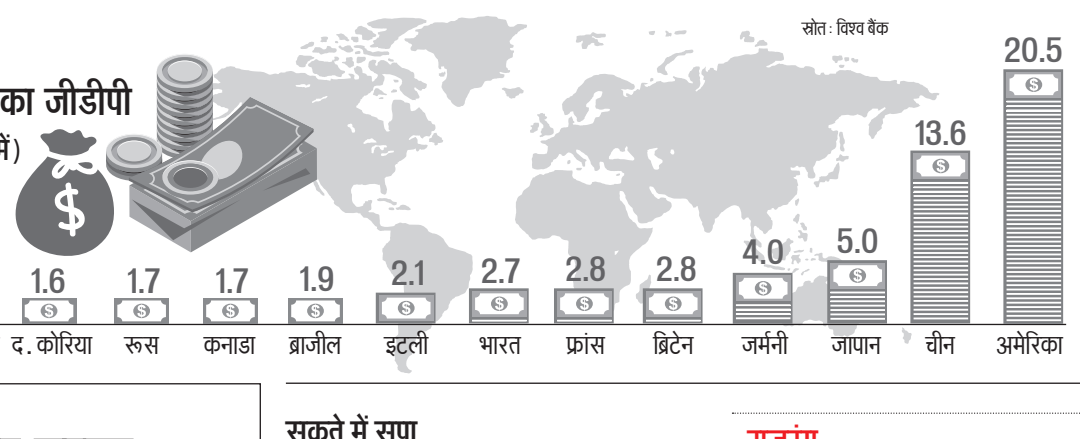

ऊर्जा

मातृभाषा का महत्व

भाषा संप्रेषण का एक माध्यम होती है जो शब्द रूप में सिर्फ अभिव्यक्त ही नहीं, बल्कि भाव भी स्पष्ट करती है। नन्हा सा शिशु अपनी जिह्वा पर वही भाषा लाता है जो वह अपने माता-पिता, परिवारजनों को बोलते हुए सुनता है। शिशु को अलग से सिखाने की आवश्यकता नहीं होती, वह स्वयं उस भाषा के शब्दों को बुनना सीख जाता है और बढ़ती उम्र के साथ उसका भाषा ज्ञान समृद्ध होता चला जाता है। विडंबना इस बात की है कि परिवर्तित स्थितियों ने भाषा पर बहस को जन्म दिया है। जीवन में आधुनिकता के प्रवेश ने कई क्षेत्रों के स्वरूपों को प्रभावित करने का कार्य किया है, इसी क्रम में यह आधुनिकता मातृभाषा को मात्र भाषा बनाने की दिशा में कोई कसर शेष नहीं रखना चाहती, किंतु इन सब के बाद भी हमारी मातृभाषा के महत्व पर कोई आंच नहीं आई है। हिंदी भाषा की समृद्धि से यह प्रत्यक्ष भी होता है।

हिंदी न सिर्फ देश में, वरन दुनियाभर में रहने वाले हिंदुस्तानियों द्वारा प्रयोग की जाने वाली भाषा है, किंतु इस भाषा का उपयोग करने वाले कतिपय विद्वत्जन ही अपनी मातृभाषा के प्रति ग्लानि भाव को अभिव्यक्त करने में संकोच नहीं करते हैं। मातृभाषा के प्रति महात्मा गांधी कहते थे कि हृदय की कोई भाषा नहीं है, हृदय-हृदय से बातचीत करता है और हिंदी हृदय की भाषा है। यह पूर्णतः सत्य है, हिंदी में वह क्षमता है जो आंखों से बहती अश्रु धारा का वर्णन इस रूप में करती है कि उसे पढ़ने वाले पाठक को आंसू बहा रहे व्यक्ति की मनःस्थिति का बोध हो जाता है। क्या किसी अन्य भाषा के भाव हृदयतल तक महसूस किए जा सकते है?

हंसी किसी भी भाषा में अभिव्यक्त हो सकती है, किंतु दूसरों की पीड़ा, दर्द का अनुभव मातृभाषा में ही होता है। यह भावों से भावों को जोड़ देती है। समय के साथ कदमताल मिलाते हुए उन्नति और प्रगति के मार्ग पर चल सफल होना भी आवश्यक है। इसलिए अन्य भाषा का ज्ञान होना या उनका कार्य में प्रयोग करना बुरा नहीं है, किंतु अपनी मातृभाषा को निम्नतम मानना किसी भी अर्थ में सही नहीं है।

सौरभ जैन

पड़ोस में दिखा पृथ्वी जैसा ग्रह

मुकुल व्यास

घने वायुमंडल वाला यह ग्रह पृथ्वी की तरह अपनी सतह पर पानी को रोक सकता है। उसमें ऐसी ही कई और खूबियां भी हैं

बाहरी ग्रह खोजने में जुटी अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी 'नासा' के टेस टेलीस्कोप ने तीन नए ग्रहों का पता लगाया है। इनमें हमारी पहली समीपवर्ती 'सुपर-अर्थ' शामिल है। यह पृथ्वी जैसा ग्रह इंसान के रहने योग्य हो सकता है। इसका नाम जीजे 357डी है जो 31 प्रकाश वर्ष दूर एक तारे का चक्कर काट रही है। यह ग्रह अपने तारे के आवास योग्य क्षेत्र में स्थित है। इसका अर्थ हुआ कि यह अपने तारे के बहुत नजदीक नहीं है और उससे बहुत दूर भी नहीं है। यदि यह तारे के नजदीक होता तो बहुत गर्म होता और बहुत दूर होने पर बहुत ठंडा होता। इस लिहाज से यह अपेक्षाकृत अनुकूल है।

ऐसी स्थिति में ग्रह की सतह पर तरल जल का मौजूद होना संभव है बशर्ते वह ग्रह चट्टानी हो। जीजे 357डी का वायुमंडल कितना घना है और वह तरल जल की मौजूदगी के लिए कितना गर्म है, इसका पता लगाने के लिए अभी और शोध की दरकार है। इस नई खोज से पहले पृथ्वी से 73 प्रकाश वर्ष दूर तीन ग्रहों की खोज की खबर आई थी। इनमें दो ग्रह ऐसे हैं जो ग्रहों के निर्माण में बीच की कड़ी हो सकते हैं। जर्मनी में हाइडलबर्ग स्थित मैक्स प्लांक इंस्टीट्यूट ऑफ एस्ट्रोनॉमी की खगोल वैज्ञानिक डायना कोस्साकोवस्की का कहना है कि जीजे 357डी अपने तारे के आवास योग्य क्षेत्र के बाहरी छोर पर स्थित है और यह अपने तारे से उतनी ही ऊर्जा प्राप्त करता है जितनी कि मंगल सूरज से प्राप्त करता है। उन्होंने कहा कि यदि इस ग्रह का वायुमंडल घना है तो वह ग्रह को गर्म रखने के लिए समुचित ऊष्मा संचय कर सकता है।

वैज्ञानिक लीसा काल्टेनेगर का मानना है कि इस ग्रह पर जीवन संभव है। उन्होंने कहा कि यह सचमुच रोमांचक है कि टेस टेलीस्कोप ने हमारे पड़ोस में एक ऐसी सुपर-अर्थ खोजी है जहां जीवन हो सकता है। घने वायुमंडल वाला यह ग्रह पृथ्वी की भांति अपनी सतह पर पानी को रोक सकता है। काल्टेनेगर ने कहा कि निर्माणाधीन नए टेलीस्कोपों की मदद से हम वहां जीवन के संकेत भी ग्रहण कर सकते हैं। जीजे 357डी हर 55.7 दिन में अपने तारे की परिक्रमा करता है और अपने तारे से इसकी दूरी सूरज से पृथ्वी की दूरी की करीब 20 प्रतिशत है। टेस टेलीस्कोप द्वारा खोजे गए तीनों ग्रह जीजे 357 नामक तारे की परिक्रमा कर रहे हैं। यह एम श्रेणी का बौना तारा है जो हमारे सूरज की तुलना में 40 प्रतिशत ठंडा है तथा द्रव्यमान व आकार की दृष्टि से उसका एक-तिहाई है।

टेस टेलीस्कोप ने गत फरवरी में यह पता लगाया कि यह तारा हर 3.9 दिन बाद मंद पड़ जाता है। यह इस बात का संकेत था कि ग्रह इस तारे की परिक्रमा कर रहे हैं। इनमें सबसे नजदीकी ग्रह, जीजे 357बी पृथ्वी से करीब 22 प्रतिशत बड़ा है। वैज्ञानिकों ने इसे 'गर्म पृथ्वी' बताया है। गर्म होने के कारण इस पर जीवन होना नामुमकिन है, लेकिन नजदीकी चट्टानी ग्रह होने के कारण खगोल वैज्ञानिक इसके वायुमंडल की संरचना का अध्ययन अवश्य करना चाहेंगे। इस सिस्टम के मझोले ग्रह, जीजे 357सी का द्रव्यमान पृथ्वी से 3.4 गुना अधिक है और यह अपने तारे की परिक्रमा नौ दिनों में पूरी करता है।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

राजरंग

सकते में सपा

सकते से उबरने में समय लगता है, लेकिन कितना? यह कोई बता नहीं रहा है। सपा चुनावों में मिली हार से अभी पूरी तरह उबर भी नहीं पाई थी कि उसके जरिये संसद पहुंचे नेता भी उसे एक-एक करके गच्चा देने लगे हैं। दूसरी ओर पार्टी नेतृत्व है कि मानों चादर तानकर सो रहा है। नेतृत्व यही मानकर बैठा हुआ लगता है कि जिसको रहना है रहे, जाना है जाए। अभी तक चुनाव नतीजे की समीक्षा भी नहीं हो पाई है। पार्टी से नाराज नेताओं को लगता है कि नेतृत्व उनकी बातों को तरजीह देना तो दूर उनकी सलाह या किसी तरह के सुझाव को सुनना भी पसंद नहीं करता। सभी फैसले बिना राय-मशविरे के थोप देना आम बात है। मिलने-मिलाने का सिलसिला भी टूट रहा है। भला ऐसे में कब तक साथ रहना मुनासिब होगा। जिसको जहां विकल्प मिल रहा है, वहां का रास्ता नाप रहा है। कहा जा रहा है कि पार्टी का शीर्ष नेतृत्व बसपा प्रमुख की राजनीतिक चोट से उबर नहीं पा रहा है। पहले खुद संभल लें, तब न किसी और की परवाह करें।

चैंबरों की चुप्पी

देश के दोनों प्रमुख उद्योग संगठनों सीआइआइ और फिक्की को इंडिया इंक यानी कंपनी जगत का सबसे मुखर प्रतिनिधि माना जाता है। अपने सदस्यों के हितों के लिए लाबिंग करने के साथ ही अर्थव्यवस्था के समक्ष मंडरा रहे संकट पर चेताते रहना उनकी आदत में शुमार रहा है। इससे जुड़ी चिंता पर वे सरकार को वाकिफ भी कराते रहे हैं। मगर इन दिनों उन्होंने मौन धारण कर रखा है। जहां आर्थिक मंदी की आहट से कई क्षेत्रों में दिक्कत महसूस की जाने लगी है। एजेंसियों व इंडिया इंक की बड़ी शख्सियतों ने मंदी को लेकर अपनी चिंताएं जताती शुरू कर दी हैं, लेकिन इन चैंबरों ने रहस्यमय चुप्पी साध रखी है। हद तो तब हो गई जब देश के कॉफी किंग वीजी सिद्धार्थ की आत्महत्या पर भी इन चैंबरों की तरफ से न तो शोक जताया गया और न ही कोई कोई टिप्पणी की गई।

मंत्री जी को मिली खुशी

चमक-दमक की दुनिया से ताल्लुक रखने वाले बाबुल सुप्रियो वैसे तो इन दिनों जंगल से जुड़े महकमे में मन रमाए हुए है, लेकिन जैसे ही कोई उन्हें उनके हुनर से आंकता है तो उनमें वह स्वाभाविक खुशी फूट ही पड़ती है। पिछले दिनों कुछ ऐसा ही हुआ। बाघों की गणना से जुड़ी रिपोर्ट जारी करते हुए पीएम ने बाबुल से कहा, अब मंत्री जी बागों में बहार है कि जगह गाएंगे 'बाघों में बहार है...।' पीएम की इस टिप्पणी के बाद से बाबुल फूले नहीं समा रहे हैं। दरअसल बाबुल खुद एक पेशेवर गायक हैं। उनके इस हुनर को पीएम से मिली तारीफ को वह खुद सबसे शेयर करते फिर रहे हैं।

कॉल ड्रॉप का बहाना

यूं तो आए दिन कॉल ड्रॉप की वजह से सरकार के एक मंत्री और कुछ अधिकारियों की किरकिरी होती रहती है, लेकिन शुक्रवार को केंद्र के एक शीर्ष पदाधिकारी को कॉल ड्रॉप ने फजीहत से बचा लिया। हुआ कुछ यूं कि वित्त मंत्रालय ने एक प्रेस ब्रीफिंग बुलाई जिसमें पत्रकारों को सवाल पूछने की अनुमति नहीं थी। पत्रकार जब वित्त मंत्रालय के अधिकारियों के साथ इसे लेकर बहस कर रहे थे, तभी मंत्रालय के आला अफसर वहां आ धमके। आनन-फानन में एक अधिकारी ने मंच पर रखी नेम प्लेट की अदला-बदली की और अपनी सीट छोड़कर उन्हें बैठने को जगह दी। सलाहकार ने बमुश्किल दो मिनट तक अफसरों के साथ कानाफूसी की और मामले की गंभीरता को भांपते हुए मोबाइल पर कॉल लगाने लगे। कुछ देर तक जब कॉल नहीं लगी तो उन्होंने बाहर जाकर कॉल करने के बहाने वहां से खिसकना बेहतर समझा। इसके बाद काफी देर तक वह नहीं लौटे। बहरहाल उनकी कॉल मिली या नहीं यह तो पता नहीं, लेकिन कॉल ड्रॉप के बहाने वह फजीहत से जरूर बच गए।

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग,रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त।

250 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र कम हो गया था वर्ष 1997 से 2002 के बीच देश के 28 टाइगर रिजर्व में से 21 में, जिस कारण इनकी जन्मदर में भी व्यापक स्तर पर कमी आ गई।

आजकल

लेखक संगठनों का स्याह चेहरा

अनंत विजय

देश में वाम विचारधारा से संबद्ध अनेक लेखक हैं जिनमें से अधिकांश अपने समर्थक राजनीतिक दलों के लेखक संगठन से भी जुड़े हुए हैं। कुछ समान विचारधारा वाले संगठनों से जुड़े लेखकों ने कैसी-कैसी बातें कहीं हैं उन्हें जानना और समझना जरूरी है। लेखकों के संगठन के बयान में अगर घृणा नजर आए तो समझ लीजिए कि उसमें कोई न कोई राजनीतिक हित है

कम्युनिस्ट पार्टियों से संबद्ध लेखकों के अपने-अपने संगठन हैं। सीपीआइ की प्रगतिशील लेखक संघ है, सीपीएम की जनवादी लेखक संघ है, सीपीआइ-एमएल की जन संस्कृति मंच है। इन लेखक संगठनों की स्थापना चाहे जिस भी उद्देश्य से हुई हो, लेकिन पिछले कई वर्षों में ये अपने-अपने राजनीतिक दलों के बौद्धिक प्रकोष्ठ बनकर रह गए हैं। इनका पितृ-संगठन जो करता है ये उसके पीछे-पीछे चलते हैं। बहुधा अपने राजनीतिक दलों की नीतियों को बौद्धिक जामा पहनाने का काम भी करते हैं। एक और संगठन है- दलित लेखक संघ। ये दलित लेखकों के हितों को लेकर चलने का दावा करता है, लेकिन इसके ज्यादातर कार्यक्रम जनवादी लेखक संघ से संबद्ध ही नजर आते हैं। इस संगठन में पिछले दिनों काफी विवाद हुआ था जिसके बाद भारतीय दलित लेखक संघ की स्थापना हुई जिसके अध्यक्ष इन दिनों अजय नावरिया हैं। एक आंबेडकरवादी लेखक संगठन भी बना जो अभी सक्रिय भी नहीं हो पाया है। इन लेखक संगठनों के बारे में बताने की वजह इनका एक साझा बयान है। ये बयान 29 जुलाई को जारी किया गया। लेखकों के हितों से अधिक इनको अपने राजनीतिक आकाओं की चिंता रहती है, लिहाजा इनका साझा बयान भी राजनीति की बिसात का एक मोहरा है। लेखक संगठन है, जाहिर है कुछ पढ़े-लिखे लोग इसके साथ जुड़े हैं, लेकिन जो बयान जारी हुआ है उसकी भाषा से घृणा की बू आती है।

इनके साझा बयान का एक हिस्सा देखिए, 'लेखक- कलाकार हमेशा से सत्ता के विरोध में रहे हैं, लेकिन मोदी राज में सत्ता के विरोध का एक स्थायी रुझान बनता जा रहा है। जब 2015 में लेखकों-कलाकारों-वैज्ञानिकों ने अपने पुरस्कार लौटा कर सत्ताधारी दल की असहिष्णुता का विरोध किया तो एक हिस्सा, भले ही इस हिस्से के लोगों का कद अपने-अपने कार्यक्षेत्र में उतना बड़ा न हो, उनके विरोध में उठ खड़ा हुआ, जब 23 अक्टूबर 2015 को प्रो. कलबुर्गी की शोकसभा की मांग के साथ लेखक-कलाकार साहित्य अकादमी के कार्यकारी मंडल की बैठक के मौके पर अपना मौन जुलूस लेकर पहुंचे, तब वहां भी भाजपा समर्थक लेखकों-कलाकारों का एक जमावड़ा इनके विरोध में मौजूद पाया गया जिसमें नरेंद्र कोहली जैसे औसत दर्जे के लोकप्रिय लेखक को छोड़ दें तो कोई प्रतिष्ठित नाम नहीं था।'

चार लेखक संगठनों का ये बयान नरेंद्र कोहली को औसत दर्जे का लोकप्रिय लेखक कह रहा है। लेखक संगठनों के बयान से ये अपेक्षा की जाती है कि वो शब्दों के चयन में सावधान रहें। नरेंद्र कोहली इस वक्त हिंदी के सबसे समादृत लेखक हैं जिनकी व्याप्ति समाज के हर वर्ग में है। वो हिंदी के इकलौते लेखक हैं जिनके लेखन के, जिनकी कृतियों के लाखों मुरीद हैं। अब जरा उन नामों को देख लिया जाए जो इन चार लेखक संगठनों की नुमाइंदगी करते हैं, इस साझा बयान पर जिनके हस्ताक्षर हैं। जनवादी लेखक संघ से मुरली मनोहर प्रसाद सिंह हैं, प्रगतिशील लेखक संघ से राजेंद्र राजन हैं, जन संस्कृति मंच से मनोज कुमार सिंह और दलित लेखक संघ से हीरा लाल राजस्थानी हैं। इनसे पूछा जाना चाहिए कि मुरली मनोहर प्रसाद सिंह की हिंदी जगत में एक लेखक के रूप में कितनी स्वीकार्यता या प्रतिष्ठा है। दिल्ली विश्वविद्यालय में शिक्षक रहे मुरली बाबू शिक्षक राजनीति करते रहे और कभी कभार कोई किताब छप जाती थी। उनका हिंदी साहित्य को क्या और कितना योगदान है ये पाठकों के सामने आना शेष है। औसत तो दूर की बात इनको लेखक के रूप में कौन जानता है? दूसरा हस्ताक्षर है प्रगतिशील लेखक संघ के राजेंद्र राजन का। उनके लेखकीय योगदान के बारे में किसी को कुछ नहीं पता। जन संस्कृति मंच के मनोज कुमार सिंह हैं, उनका लेखकीय कर्म और संस्कृति के लिए किया जानेवाला कार्य भी अभी पाठकों या दर्शकों के समक्ष नहीं है। चौथे हैं हीरालाल राजस्थानी जो दलित लेखक संघ के नुमाइंदे के हैं। हीरालाल राजस्थानी दिल्ली में चित्रकारी सिखाते हैं, क्या लिखते हैं या साहित्य में किस विधा में सिद्धहस्त हैं इसके बारे में अभी जानकारी सार्वजनिक होना शेष है। ये चारों मिलकर नरेंद्र कोहली को औसत लेखक करार दे रहे हैं। है न आश्चर्य की बात। किसी को भी किसी का अपमान करने का हक नहीं है, इस वजह से इन चार लोगों के बारे में किसी प्रकार का विशेषण इस्तेमाल नहीं करूंगा, लेकिन इनको सोचना चाहिए कि जिस नरेंद्र कोहली को ये औसत कह रहे हैं उनके पासंग बराबर भी इनका लेखकीय योगदान होता तो इनकी बातों को गंभीरता से लिया जा सकता था।

इस साझा बयान की भाषा ऐसी है जो इन लेखक संगठन से जुड़े लोगों के पढ़े-लिखे होने पर भी संदेह पैदा करती है। इस भाषा को देखिए जो साझा बयान का हिस्सा है, 'जब 49 नामचीन कलाकारों-बुद्धिजीवियों ने, जिन पर यह देश गर्व और भरोसा करता है, प्रधानमंत्री मोदी के नाम खुला पत्र लिखा है तो जवाब में प्रधानमंत्री ने नहीं, उनके 62 निर्लज्ज समर्थकों ने पत्रोत्तर लिख भेजा है, यह पत्रोत्तर अडूर गोपालकृष्णन, मणि रत्नम, अनुराग कश्यप, आशीष नंदी, अपर्णा सेन, सुमित सरकार, श्याम बेनेगल, शुभा मुद्गल जैसे लोगों द्वारा उठाए गए एक भी सवाल का जवाब नहीं देता, बस पलट कर कुछ और सवाल उठाते हुए यह साबित करने की बेहद लचर कोशिश करता है कि मूल पत्र में आई शिकायतें राजनीतिक पक्षधरता से निकली हैं।' मोदी के समर्थक हुए तो आप निर्लज्ज हो गए और अगर आपने उनका विरोध किया तो महान हो गए। ये लोग खुद तय करें कि निर्लज्जता क्या है।

अब बात प्रगतिशील लेखक संघ की। इसके संस्थापकों में से एक सज्जाद जहीर की पुत्री और वरिष्ठ लेखिका नूर जहीर ने इसके अंदर की बजबजाहट को उघाड़ कर रख दिया है। मामला ये है कि प्रगतिशील लेखक संघ का एक सम्मेलन पूर्व पुलिस अधिकारी और लेखक विभूति नारायण के सौजन्य से आयोजित हो रहा है। विभूति नारायण राय ने लेखिकाओं को लेकर एक टिप्पणी की थी जिस पर काफी बवाल मचा था। बाद में विभूति नारायण राय पर सवाल उठानेवाले ज्यादातर लेखक उनके शरणागत हो गए थे, कुछ को तो उन्होंने उपकृत भी किया, लेकिन नूर जहीर ने उस प्रश्न को उठाकर प्रगतिशील लेखक संघ को कठघरे में खड़ा कर दिया है। नूर जहीर कहती हैं, 'प्रगतिशील लेखक संघ में बीस साल से बढ़ते हुए पुरुषवाद को देख रही हूं, यह भी जानती हूं कि पुरुषवाद अकेले नहीं पनपता, जातिवाद और सांप्रदायिकता उसके हाथ में हाथ डाले चलती हैं। ऐसे में अगर कुछ लेखक या लेखिकाएं बिगाड़ नहीं करना चाहतीं और चुप्पी बनाए रखती हैं तो यह उनका निजी मामला है। मैंने खुद कभी फायदा-नुकसान को देख 'स्टैंड' नहीं लिया है। एक सवाल और एक अपने तजुर्बे की बात कह रही हूं। पहला यह कि ऐसा क्या मिल रहा है एक पैतृक्तावादी पुरुष को जोड़े रखने से? नाम, पैसा, यश, सहूलियतें? और दूसरे पुरुषवाद एक बीमारी है जिसे यदि फैलने से नहीं रोका गया तो वह चुप्पीधारियों को भी नहीं छोड़ेगी।'

अब ये तो नूर जहीर ही जानें या फिर प्रगतिशील लेखक संघ के लोग कि वहां पिछले बीस साल से किस प्रकार का पुरुषवाद बढ़ रहा है? अगर किसी संगठन के संस्थापक की बेटी और सम्मानित लेखिका को उस संगठन के बारे में इतनी तल्ख टिप्पणी करनी पड़ रही हो तो यह तय करना आसान है कि 'निर्लज्जता' कहां है। कुछ समय पहले इन लेखक संगठनों से जुड़े एक कवि ने हिंदी कवयित्री अनामिका को लेकर बेहद आपत्तिजनक टिप्पणी की थी। इन्हीं लेखक संगठनों से जुड़े एक लेखक ने वाराणसी में अपनी पत्नी के साथ सरेआम अभद्रता की थी, लेकिन इन संगठनों के कर्ता-धर्ताओं ने मुंह पर पट्टी बांध ली थी। नैतिकता की बात करते हुए ये खोखले लगते हैं। ये संगठन राजनीति की ऐसी दुकान बन गए हैं जिनके मालिक का दीवाला निकल चुका है और वहां काम करनेवाले कर्मचारीनुमा लेखक अच्छे दिन की आस में अपने मालिक की सेवा किए जा रहे हैं।

आम तौर पर मैं कविताएं कम पढ़ता हूं। फिर भी एक कविता की चंद पंक्तियां याद आ गईं- वे सब के सब तिजोरियों के दुभाषिये हैं, वे वकील हैं, वैज्ञानिक हैं, अध्यापक हैं, नेता हैं, दार्शनिक हैं, लेखक हैं, कवि हैं, कलाकार हैं, यानी कानून की भाषा बोलता हुआ अपराधियों का एक संयुक्त परिवार है।

फिर से

आसान था पहले का जीवन!

पहले के पढ़े-लिखे लोगों का जीवन आसान था। इस बात में अब कोई दो राय नहीं है। उनके जीवन का सबसे बड़ा, ज्यादातर के लिए तो एकमात्र उद्देश्य होता था एक ठीक-ठाक नौकरी पा लेना। यदि वह नौकरी सरकारी हो तो फिर क्या कहना। उसके बाद तो नौकरी ही जीवन। शादी भी अपरिहार्य। वैसे आजकल शादी लोगों के लिए अपरिहार्य नहीं रही। हसरत के नाम पर बच्चे और उनकी शिक्षा, नौकरी और उनकी शादी कराना और उनकी गृहस्थी को बसाना। बस इतना सा ही ख्वाब होता था। और इन्हीं ख्वाबों को पूरा करने में आम आदमी की जिंदगी निकल जाती थी। हालांकि आज के हिसाब से यह कहना थोड़ा मुश्किल है कि वह कामयाब जिंदगी थी या नहीं।

पढ़ाई-लिखाई, समाज की चौकीदारी, नेताओं का विश्लेषण, एक्टिविज्म, लेखन, कविताई वगैरह के लिए एक अलग जुझारू समुदाय होता था। आज समय बदल गया है। अब टीवी और एफएम के अतिरिक्त हमें प्राकृतिक रूप से कुछ भी याद रखने से महरूम रखने वाला स्मार्टफोन है जो तथ्यों को याद रखने की हमारी आदत को खत्म कर रहा है, खरीदा हुआ फ्री डेटा, फेसबुक और ट्विटर, टिकटॉक, हेलो जैसे अगणित सोशल मीडिया के प्लेटफॉर्म हैं। इनसे दूर रहना आजकल गुनाह है। और, साथ रहना एक बड़ी चुनौती भी।

टीवी चैनलों के एंकर की तरह हर किसी को सर्वज्ञ रहना है, नहीं तो दूसरा जीत जाएगा। समानता के अधिकार के प्रति जागरूकता में हमसे आगे कोई निकल जाए तो समाजवाद हार जाएगा। गौतम बुद्ध, महात्मा गांधी और कार्ल मार्क्स पैदल हो जाएंगे। हम उनके रक्षक हैं।

क्रिकेट, टेनिस, फुटबॉल, एथलेटिक्स, स्पेस साइंस, सोशियोलॉजी, साइकोलॉजी, क्लाइमेट चेंज, ग्लोबल वार्मिंग, बाढ़, सूखा, अकाल, किसान, पेप्सी, टाटा, संविधान, कोर्ट यानी आपके आसपास के माहौल से जुड़े हुए तमाम विषयों पर आपकी पकड़ होनी चाहिए, ताकि कहीं से भी आप इन विषयों पर होने वाली बहस को चीर-फाड़ सकें या कम से कम ऐसा करने की कूवत तो रखते ही हों।

आज हमें लेखक, कवि, विचारक और विशारद, सब एक साथ इकट्ठे बनने की चुनौती का अकेले सामना करना है। हम पर लेखक बनने का उतना ही दबाव है जितना कवि बनने का या जितना बजट समझने, समझाने का या एक्टिविस्ट बनने का।

बेटा, बेटी, भाई, बहन, पिता वगैरह बनने की ज्यादातर जिम्मेदारी आउटसोर्स की जा रही हैं। मजबूरी है। एक ही जीवन है। इसी में दुनिया भी देखनी है। पुराने साथी, नए सहयोगी, कल का छोकरा सबके सब तुर्की, लंदन, न्यूजीलैंड, फिनलैंड घूमकर आ गए। अमेरिका, बैंकॉक, मलेशिया आदि जाने लगे हैं। गोवा, शिमला, नैनीताल, सिक्किम तो नवदलित चेतना वालों के लिए है। और घूमने इसलिए नहीं जाना है कि हमारा मन है, बल्कि इसलिए

कि सोशल मीडिया पर लोग धुआंधार पोस्ट ठेल रहे हैं। समाजवाद हार जाएगा अगर हम न जा सके। फिर सरकार को कोसना है। सिस्टम को गरियाना है। और इन सबके लिए अब ज्यादा मेहनत करने की जरूरत भी नहीं है। बस गूगल पर आपको यह खोजना आना चाहिए। वहां से तथ्यों को निकालिए और धड़ाधड़ चस्पा करते जाइए।

तनाव है, चार से छह इंच के एक छोटे से कंप्यूटर में/ पर/ द्वारा/ से। पहले के पढ़े लिखे लोगों का जीवन आसान था। कम पढ़े-लिखे लोगों से भी लोग सलाह करते थे, क्योंकि उन्हें जीवन का फलसफा ज्यादा सलीके से पता था। उन्हें समाजवाद का ज्ञान नहीं था। उन पर पूंजीवाद का कब्जा था, लेकिन इस बात का अंदाजा नहीं था।

काम उंगलियों से ज्यादा पैरों की ताकत और हाथ से होता था। नींद ज्यादा आती थी। इसलिए सुकून ज्यादा था। माने, पहले के पढ़े लिखे लोगों का जीवन आसान था।

(प्रभाष के दत्ता की फेसबुक वॉल का संपादित अंश)

ट्वीट-ट्वीट

नब्बे के दशक में हमने कश्मीर घाटी में ऐसी ही हायतौबा देखी थी जब पंडितों को डराकर उन्हें वहां से बेदखल किया गया। उनकी अभी तक वापसी नहीं हो पाई है। यह सरकार का दायित्व है कि वह आम जनजीवन को प्रभावित किए बिना सभी कश्मीरियों, पर्यटकों और श्रद्धालुओं को सुरक्षा उपलब्ध कराए।
मीनाक्षी गांगुली@mg2411

कश्मीरी पंडितों को जबरन भगाया गया था। यह काम उन इस्लामिक चरमपंथियों ने अंजाम दिया जिनमें से तमाम पड़ोसी, दोस्त और सहकर्मी थे। एक और बात कि सुरक्षा और आम जनजीवन में गतिरोध न आना हमेशा एक साथ सुनिश्चित नहीं हो सकते।
राहुल पंडिता@rahulpandita

जिन लोगों पर इसका दारोमदार है उन्हें छोड़कर मुझे नहीं लगता कि किसी को भी कुछ भनक है कि कश्मीर में क्या होने वाला है? दिलचस्प है कि तमाम व्याख्या करने वाले मीडिया को भी कोई खबर नहीं। सरकारें इसी तरह चलनी चाहिए। जवाबदेही भी अकेले उसी की है।
कंचन गुप्ता@KanchanGupta

अगर कश्मीर को तीन हिस्सों में विभाजित करने की अटकलें सही हैं तो समझिए कि भारत कश्मीर पाकिस्तान को तश्तरी में परोसकर देने जा रहा है। इसके विध्वंसकारी परिणाम होंगे जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती। उम्मीद है कि नरेंद्र मोदी और अमित शाह ऐसा कोई कदम नहीं उठाएंगे।
सुशांत सरीन@sushantsareen

रचनाकर्म

यादों के आईने में अधूरी तस्वीर

डॉ. भूपेन्द्र बिष्ट

इस संस्मरणात्मक पुस्तक में मनोहर श्याम जोशी के कथा साहित्य के पत्रकारिता में व्यापक योगदान पर दृष्टि डाली गई है, लेकिन इस प्रसिद्ध व्यक्तित्व की मुकम्मल तस्वीर नहीं बन पाई है...

पुस्तक : पालतू बोहेमियन
लेखक : प्रभात रंजन
प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
मूल्य : 125 रुपये

मनोहर श्याम जोशी को याद करते हुए प्रभात रंजन ने 'पालतू बोहेमियन' में अनुस्मरणात्मक विधा को एक नई पठनीय सज्जा जरूर दी है, लेकिन उतने मकबूल किस्सागो और जबर्दस्त कलमकार पर मुकम्मल संस्मरण प्रस्तुत कर सकने में लेखक से बहुत कुछ छूट भी गया है।

एक शोधार्थी के नाते प्रभात रंजन ने मनोहर श्याम जोशी से मुलाकात की शुरुआत से लेकर उनके अवसान तक की स्मृतियों को एक कथा-सूत्र में पिरोने का काम किया है। 'किस्सागो से पहली मुलाकात का किस्सा' के जरिये प्रभात ने मनोहर श्याम जोशी की दृष्टि, खिलंदड़ापन और सिनिसिज्म की झलक पाठकों को दिखाई है तो 'सोप ओपेरा लेखक के करीब' में जोशी जी के व्यक्तित्व के ऐसे पहलू को भी उद्घाटित किया है कि उनमें अपने सहायकों की मदद करने का दुर्लभ किस्म का मानवीय गुण भी मौजूद था।

इसी तरह 'जनता छाप इंटेलेक्चुअलता... या... अमेरिकन सेंटर लाइब्रेरी' और 'इन किताबों ने बड़ा जुल्म किया है मुझ पर' परिच्छेद में बताया है कि जोशी जी किस कोटि के अध्यवसायी थे और हिंदी सिनेमाई जगत में उनकी कितनी पैठ या कैसा रुतबा था, पर क्या किसी नामचीन शख्स से हुई सुबहो-शाम की बातचीत को दोहराने भर से या किसी मौके पर उस सेलिब्रिटी की आख्याति का उद्धरण देने मात्र से मेमॉयर्स की आत्मा 'माई स्टोरी, ऐज आइ टोल्ड इट' हमारे आगे अपने सकल रूप में खुल सकती है।

लेखक का अपना एक रचना संसार होता है, जो उसके असली संसार से इतर और सर्वथा भिन्न होता है। रचना संसार का मतलब उस संसार से है, जिसे रचनाकार असली संसार के बीच उसी के समानांतर भाषा में रचता है, अपनी उद्भावना शक्ति, कल्पना शक्ति, अपनी दृष्टि और अपने कौशल द्वारा। किस्सा कोताह यह कि मनोहर श्याम जोशी, जो 'हम लोग', 'बुनियाद' और 'मुंगेरीलाल के हसीन सपने' सरीखी टीवी सीरियल्स से दर्शकों के महबूब बन गए थे तथा खास कुमाऊंनी बोली का टच लिए 'कसप' व 'हरिया हरक्युलिस की हैरानी', अवधी फ्लेवर के साथ परोसी गई 'नेताजी कहिन', उर्दू मुहावरेदारी की रंगत लिए 'हमजाद', बंबइया हिंदी में रची 'कुरु कुरु स्वाहा' और 'क्याप' उपन्यासों को लेकर हिंदी जगत में बेहद मकबूल हो गए थे, उनके रचना संसार की रोशनी या रचना प्रक्रिया की खुशबू हमें 'पालतू बोहेमियन' के जरिए जितनी दिखनी चाहिए थी, उतनी नहीं दिखी।

उन्होंने हिंदी की अकादमिक दुनिया की आपाधापी और सिनेमाई संस्कृति की फूहड़ता को जोशी जी के प्रसंगों के बहाने किताब में अपने ढंग से पेश किया है।

यूं तो मनोहर श्याम जोशी ने 'लखनऊ मेरा लखनऊ' संस्मरण में लिखा है कि जो लड़की अपनी डायरी में घटिया शायरों के अशआर, फिल्मी गीतों की पंक्तियां और कवि सम्मेलनी कविताएं नोट करती है, वह मेरे जैसे इंटेलेक्चुअल की प्रेमिका कैसे हो सकती है। परंतु अपने लेख में उन्होंने यह लिखा कि 'कसप' उपन्यास मैंने घोर निराशा, गहन उदासी और मोहभंग की मनःस्थिति में लिखा।

प्रभात रंजन ने जब जोशी जी से अज्ञेय पर संस्मरण लिखने का आग्रह किया, तो जोशी जी का कहना था- 'हिंदी में ऐसे लेखक हैं ही बहुत कम, जिनकी जीवनी लिखी जा सके। सामान्य मध्यवर्गीय जीवन के अलावा उसका अपना जीवन कुछ नहीं होता। निराला की तरह बोहेमियन जीवन चुनने वाले या भुवनेश्वर की तरह का पागलपन, राहुल सांकृत्यायन की तरह घुमंतू और नागार्जुन की तरह उड़तू, कितने लेखक हैं।' इसके बावजूद प्रभात रंजन ने 'मनोहर श्याम जोशी : एक याद' करके जैसा भी और जो भी आत्मीय वृत्तांत लिपिबद्ध किया है, वह जानकारीप्रद होने के साथ दिलचस्प भी बन पड़ा है।

पुष्पेश पंत ने प्रस्तावना में ठीक ही लिखा है कि 'पालतू बोहेमियन' जोशी जी के कथा साहित्य व पत्रकारिता में उनके योगदान में रुचि रखने वाले पाठकों के लिए न सिर्फ अनिवार्य पाठ्य सामग्री के रूप में ग्राह्य होगी, बल्कि बारंबार पठनीय भी होगी।

भ्रष्टाचार की व्यापक पड़ताल

ऐश्वर्य प्रकाश

पुस्तक : ए क्रूसेड अगेन्स्ट करप्शन ऑन द न्यूट्रल पाथ
लेखक : मनोहर मनोज
प्रकाशक : इकोनॉमी इंडिया पब्लिकेशन, नई दिल्ली
मूल्य : 990 रुपये प्रति खंड

'ए क्रूसेड अगेन्स्ट करप्शन ऑन द न्यूट्रल पाथ' का अर्थ है 'तटस्थ मार्ग पर भ्रष्टाचार के खिलाफ एक धर्मयुद्ध'। पत्रकार मनोहर मनोज द्वारा लिखित यह पुस्तक भ्रष्टाचार से जुड़े हर पक्ष की व्यापक पड़ताल करती है। लेखक ने अपनी पड़ताल में इसकी राजनीतिक, प्रशासनिक, सामाजिक, संस्थागत इन सभी की दुनिया को समेटा है। यह पुस्तक दो खंडों में लिखी गई है। पहले अध्याय में लेखक ने भ्रष्टाचार के सैकड़ों अर्थ व परिभाषाएं दी हैं। दूसरे अध्याय में भ्रष्टाचार के राजनीतिक, प्रशासनिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक व पारिवारिक पक्ष को उभारा गया है। तीसरे अध्याय में भ्रष्टाचार के विश्व इतिहास से लेकर भारतीय इतिहास तथा दुनिया में मौजूद सभी तरह की राजनीतिक शासन प्रणालियों व व्यवस्थाओं में भ्रष्टाचार की अवस्था व व्यवस्था का वर्णन है, वहीं चौथे अध्याय में भारत में आजादी के बाद भ्रष्टाचार के प्रसार का घोटाले दर घोटाले सिलसिलेवार व वर्षवार ब्योरा दिया गया है। पिछले सत्तर सालों में देश में हुए घोटालों, जिन पर न्यायालयों में मुकदमे चले व फैसले सुनाए गए, का पूरा ब्योरा पुस्तक में पेश किया गया है। पांचवें अध्याय में देश, समाज व तंत्र में रचे-बसे भ्रष्टाचार की स्थापित अवधारणा का जिक्र है। पुस्तक के छठे अध्याय में इसकी रोकथाम के मौजूदा ढांचे का विवरण है। इसमे लोकतंत्र के चारों अंगों के तहत भ्रष्टाचार पर रोक लगाने के लिए गठित मैकेनिज्म के अलावा देश में मौजूद सभी भ्रष्टाचार विरोधी कानूनों, नीतियों व संस्थाओं का सिलसिलेवार ब्योरा दिया गया है। सातवें अध्याय में भ्रष्टाचार के अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य का जिक्र है, जिसमें संयुक्त राष्ट्र के भ्रष्टाचार पर आहूत सम्मेलनों व उनके सभी प्रस्तावों के साथ-साथ भ्रष्टाचार पर कार्यरत विभिन्न रेटिंग एजेंसियों का भी जिक्र है। पुस्तक के आठवें अध्याय में भारत में भ्रष्टाचार को लेकर विभिन्न जनांदोलनों और उनके रहनुमाओं का जिक्र है। पुस्तक के अंतिम व नौवें अध्याय में भ्रष्टाचार पर सर्वेक्षण परिणाम दर्शाए गए हैं।

कुल मिलाकर, यह पुस्तक भ्रष्टाचार जैसी बुराई को लेकर एक जागरूक दृष्टि प्रदान करती है और इस समस्या की तह में जाकर उसका बुनियादी समाधान भी प्रस्तुत करती है।

जागरण जनमत — कल का परिणाम

क्या राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग बिल में संशोधन की डॉक्टरों की मांग सही है?

सभी आंकड़े प्रतिशत में।

आज का सवाल
अयोध्या मामले पर रोजाना सुनवाई से इसके सुलझने की उम्मीद बढ़ी है?

अपनी राय और अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए अपने मोबाइल के मैसेज बॉक्स में जाकर **POLL** लिखें, स्पेस देकर **Y, N** या **C** लिखकर 57272 पर भेजें
Y –हां, **N**–नहीं, **C**–कह नहीं सकते

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

'कुछ तो गड़बड़ है दया' दिखते लोग अधीर,
अनहोनी की बाट कुछ जोह रहा कश्मीर।
जोह रहा कश्मीर हुए वापस सैलानी,
रहे अकेले दीख पुन: बाबा बर्फानी।
महबूबा-फारूख मिल रहे हड़बड़-हड़बड़,
करते आए आज तलक जो कुछ तो गड़बड़!
– ओमप्रकाश तिवारी

आशीष व्यास
संपादक, नई दुनिया, मध्य प्रदेश

मध्य प्रदेश डायरी

फिर 'टाइगर स्टेट' हुआ मोगली का जंगल!

मोगली का जंगल अब आबाद है। बाघ बड़ी संख्या में लौट आए हैं। यह वापसी भी ऐसी हुई है कि टाइगर स्टेट का खोया दर्जा हासिल हो गया है। लेकिन इसी के साथ बाघों की सुरक्षा के सवाल भी खड़े होने लगे हैं। बाघों की गणना के नए आंकड़े जब घोषित किए जा रहे थे, तब तक बांधवगढ़ में दो बाघों की मौत हो चुकी थी और इस घोषणा के 24 घंटे बाद ही एक और बाघ का शव मिल गया। यानी मध्य प्रदेश दो बाघों से आगे था और टाइगर स्टेट की घोषणा के सिर्फ 72 घंटों में मध्य प्रदेश ने अपने तीन बाघ खो दिए। दरअसल मध्य प्रदेश वर्ष 2010 की बाघों की गणना में काफी पिछड़ गया था। अपनी ही पुरानी गलतियों से सीख लेते हुए कुछ प्रयास ऐसे किए गए कि वर्ष 2014 में बेहतर वापसी के साथ गणना तालिका में तीसरे स्थान पर आ गया। अब राष्ट्रीय बाघ आकलन रिपोर्ट-2018 में योजनाबद्ध प्रयासों से मध्य प्रदेश न केवल सबसे आगे है, बल्कि बाघ संरक्षण में उसके द्वारा अपनाई गई परंपरागत पद्धतियों के साथ वैज्ञानिक प्रयोगों को भी अब मिसाल के रूप में देखा जा रहा है। प्रदेश में जंगल और पर्यावरण के साथ पर्यटन विकास के लिए भी बाघों का संरक्षण अब बहुत जरूरी हो गया है। धार्मिक और ऐतिहासिक पर्यटन के लिए पहचान बनाने वाले मध्य प्रदेश का वन्य जीव पर्यटन क्षेत्र भी काफी संभावनाओं से भरा हुआ है। लेकिन हर बार परेशानी केवल इस पहचान को व्यापक स्तर पर प्रसिद्धि दिलाने पर आकर टिक जाती है। जीव वैज्ञानिकों का मानना है कि विश्व में बाघों के लिए जो सबसे बेहतर 11 वासस्थल हैं, उनमें से छह मध्य भारत में हैं। इसका बड़ा हिस्सा मध्य प्रदेश में आता है। इस लिहाज से मध्य प्रदेश के पास बेहतर अवसर भी हैं और जिम्मेदारी भी। यदि मध्य प्रदेश ईमानदार प्रयास करना चाहता है तो अगले चरण में सबसे ज्यादा फोकस सागर, दमोह, नरसिंहपुर जिले में फैले नौरादेही अभयारण्य के विकास पर देना चाहिए। एक हजार वर्ग किमी क्षेत्रफल में फैले इस अभयारण्य में अभी 30 गांव ऐसे हैं, जिन्हें विस्थापित किया जा रहा है। पूरा इलाका खाली होने के बाद यह कम से कम 50 नए बाघों का वासस्थल बन सकता है। इसके अलावा ओंकारेश्वर में करीब 600 वर्ग किमी का इलाका है। यहां कोई गांव भी नहीं है। यदि केंद्र सरकार इस इलाके को नेशनल पार्क के लिए अधिसूचित कर देती है तो यह भी बाघों के लिए नया वासस्थल बन सकता है। बाघ संरक्षण में बाधा के तौर पर कुछ चुनौतियां लंबे समय से बनी हुई हैं। जैसे बाघों के लिए वन क्षेत्र घटता जा रहा है। वर्ष 1997 से 2002 के बीच देश के 28 टाइगर रिजर्व में से 21 में करीब 250 वर्ग किमी इलाका कम हो गया था। इससे बाघों की जन्मदर में काफी कमी आई। प्रदेश के पन्ना और राजस्थान के सरिस्का से बाघ गायब हो गए थे। बाघों की संख्या के साथ इलाका भी बढ़ाना होगा। सुरक्षित माने जाने वाले टाइगर रिजर्व रिहायशी बस्तियों के पास आते जा रहे हैं। इससे बाघों के रिहायशी इलाकों में घुसने और फिर मारे जाने के मामले लगातार बढ़ रहे हैं। 2010 से 2018 के बीच 22 बाघों की मौत करंट से हुई। इसमें से मध्य प्रदेश के पांच बाघ शामिल थे।

कब दोस्ती की मिसाल बनेंगे पड़ोसी प्रदेश : सरदार सरोवर बांध के पानी को लेकर मध्य प्रदेश और गुजरात में असहमति के स्वर सुनाई देने लगे हैं। वैसे भी अपने पड़ोसी राज्यों से संबंध को लेकर मध्य प्रदेश की समस्या-सूची बार-बार पानी, पर्यटन और पलायन पर आकर ठहर जाती है। प्रदेश के पास नर्मदा है, तो गुजरात के एक इलाके में सूखा। मध्य प्रदेश पलायन से जूझ रहा है तो राजस्थान के पास रोजगार है। महाराष्ट्र पर्यटन को बढ़ावा दे रहा है और देश का हृदय प्रदेश अभी भी अपनी खूबियों से बेखबर है। आज 'फ्रेंडशिप-डे' के अवसर क्या यह उम्मीद की जा सकती है कि पड़ोसी राज्य यदि दोस्ती का हाथ बढ़ाएं तो एक-दूसरे को समस्याओं से बाहर निकाल सकते हैं। इतिहासविद् शशिकांत भट्ट कहते हैं, 'महाराष्ट्र, गुजरात और राजस्थान से भी मध्य प्रदेश का रोटी-बेटी का संबंध रहा है। किसी दौर में मध्य प्रदेश की रियासतें आपस में भले ही एक दूसरे से उलझती रही हों, लेकिन पड़ोसी राज्यों से सभी ने दोस्ताना संबंध ही निभाए। जहां तक सरदार सरोवर बांध की बात है तो गुजरात ने अपने सूखे इलाकों तक पानी पहुंचाने के प्रण को ईमानदारी से पूरा किया। लेकिन मध्य प्रदेश की सरकारों की ओर से मुआवजे और बसाहट के मामलों में गड़बड़ी सामने आती रही। नर्मदा की धार के बावजूद राजगढ़ जिले में 600 की आबादी वाले गांव को पीने का पानी नहीं मिलने पर राजस्थान पलायन करना पड़ता है।'

मध्य प्रदेश सरकार ने पहली बार नर्मदा का पानी गुजरात को देने पर नाराजगी जताई है। इसका कारण सिर्फ दोनों राज्यों में अलग-अलग राजनीतिक दलों की सत्ता होना नहीं, बल्कि घटते जलस्तर और कम होती-सूखती नदियों की चिंता भी है। मध्य प्रदेश पानी देगा तो गुजरात बिजली बना पाएगा। सरदार सरोवर बांध के पास खड़े तीन ग्रिड से मध्य प्रदेश, गुजरात और महाराष्ट्र को बिजली भेजी जाती है। मध्य प्रदेश पानी रोकेगा तो न नहर भरेंगी और न बिजली बनेगी। यानी जरूरत तीनों राज्यों की ही है। क्या यह संभव नहीं है कि एक-दूसरे की समस्याओं को समझते हुए तीनों राज्य मिलकर ही नीति बनाएं? मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश मिलकर राम वन गमन पथ को विकसित कर सकते हैं। मध्य प्रदेश और गुजरात मिलकर स्टैच्यू ऑफ यूनिटी (सरदार वल्लभ भाई पटेल की विशालकाय मूर्ति) की ब्रांडिंग कर सकते हैं। छत्तीसगढ़ से लगे अमरकंटक, टाइगर रिजर्व जैसे पर्यटन स्थल दोनों राज्यों के पर्यटकों को लुभा सकते हैं।

पाकिस्तान में जासूस के बहाने चर्चा में आए टमाटर : पाकिस्तान में पकड़े गए कथित जासूस को अपुष्ट मीडिया रिपोर्ट्स में खंडवा के निमाड़खेड़ी का राजू लक्ष्मण बताने के बाद से खंडवा जिले के टमाटर भी चर्चा में आ गए हैं। दरअसल सोशल मीडिया पर सामने आई चर्चा के बाद पुलिस और खुफिया तंत्र सक्रिय हो गया और लगातार राजू की खोजबीन होती रही। गांव के किसानों का कहना है हमारे टमाटर दिल्ली, मुंबई, नेपाल और पाकिस्तान जाते हैं। लेकिन लगता नहीं कि गांव का कोई आदमी जासूस बनकर पाकिस्तान चला जाए। पुलिस की शुरुआती जांच में दो राजू लक्ष्मण के नाम सामने भी आए, लेकिन एक तो इस दुनिया में ही नहीं है और दूसरा आज भी इसी गांव में सब्जी बेच रहा है।

राष्ट्रीय संस्करण
रविवार 4 अगस्त 2019
दैनिक जागरण
बिजनेस
www.jagran.com

जेट के लिए 10 तक भेज सकते हैं ईओआइ

मुंबई, प्रेट्र : जेट एयरवेज के कर्जदाताओं ने कंपनी के लिए अभिरुचि (ईओआइ) दाखिल करने की अंतिम तिथि एक हफ्ते के लिए बढ़ा दी है। कंपनी के लिए ईओआइ दाखिल करने की तिथि शनिवार को खत्म हो गई थी। अब जेट एयरवेज के लिए इच्छुक निवेशक 10 अगस्त तक ईओआइ दाखिल कर सकते हैं। अब तक कंपनी के लिए चार निवेशकों ने प्रारंभिक रुचि दिखाई है। कर्जदाताओं ने कहा कि विश्वसनीय रूप से इच्छुक आवेदकों द्वारा कुछ और वक्त मांगने के बाद ईओआइ दाखिल करने की तिथि बढ़ाई गई है।

बंधन बैंक में गृह फाइनेंस के विलय को एनसीएलटी की मंजूरी की दरकार है। उसके बाद बैंक में प्रमोटर की हिस्सेदारी 61 फीसद के स्तर तक रह जाएगी।

— चंद्र शेखर घोष
एमडी व सीईओ, बंधन बैंक

राहत ▶ 22 फीसद बढ़ोतरी के साथ 103 .28 करोड़ रुपये पर पहुंचा बैंक का शुद्ध मुनाफा, कर्ज गुणवत्ता भी सुधरी

कॉरपोरेशन बैंक के प्रदर्शन में बड़ा सुधार

11 .46 फीसद से घटकर 5 .96 फीसद रह गया बैंक का शुद्ध एनपीए

नई दिल्ली, प्रेट्र : सरकारी क्षेत्र के कर्जदाता कॉरपोरेशन बैंक का शुद्ध लाभ 100 करोड़ रुपये को पार कर गया है। चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही (अप्रैल-जून, 2019) में बैंक ने 22 फीसद उछाल के साथ 103.28 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ कमाया। पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि में बैंक को 84.96 करोड़ रुपये का शुद्ध मुनाफा हुआ था। वहीं, बीते समीक्षाधीन अवधि से ठीक पिछली तिमाही (जनवरी-मार्च, 2019) में बैंक को 6,581.49 करोड़ रुपये का घाटा उठाना पड़ा था। बीते वित्त वर्ष में बैंक का कुल घाटा 6,332.98 करोड़ रुपये रहा था।

चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में कॉरपोरेशन बैंक की कुल आय घटकर 4,417.88 करोड़ रुपये रही, जो पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि में 4,977.92 करोड़ रुपये थी। हालांकि संपत्ति की गुणवत्ता के मोर्चे पर कई अन्य बैंकों की तरह कॉरपोरेशन बैंक में भी सुधार दिख रहा है। समीक्षाधीन अवधि में बैंक का सकल फंसा कर्ज (एनपीए) घटकर 15.44 फीसद रह गया। पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि में यह 17.44 फीसद था। बैंक का नेट एनपीए भी पहली तिमाही में 11.46 फीसद से घटकर 5.69 फीसद रह गया। समीक्षाधीन अवधि में एनपीए और आकस्मिक मदों को मिलाकर बैंक ने 715.98 करोड़ रुपये का प्रावधान किया। पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि में इस मद में बैंक को 1,508.43 करोड़ रुपये का प्रावधान करना पड़ा था।

गौरतलब है कि एनपीए के जंजाल में फंस जाने की वजह से ही आरबीआइ ने कॉरपोरेशन बैंक को प्रांप्ट करेक्टिव एक्शन (पीसीए) के दायरे में रखा हुआ था। वित्तीय स्थिति सुधरने के बाद इस वर्ष फरवरी में बैंक को इस बंधन से मुक्त कर दिया गया। पीसीए के दायरे में आए बैंकों पर कई तरह की पाबंदियां लग जाती हैं।

इस वर्ष फरवरी मध्य तक पीसीए के दायरे में रहे बैंक को बीते वित्त वर्ष में बड़ा घाटा हुआ था। फाइल

जेएंडके बैंक का लाभ गिरा

नई दिल्ली, प्रेट्र : सरकारी क्षेत्र के कर्जदाता जम्मू एंड कश्मीर बैंक के शुद्ध लाभ में 58 फीसद की गिरावट आई है। चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही (अप्रैल-जून, 2019) में बैंक का शुद्ध मुनाफा इस गिरावट के साथ 21.87 करोड़ रुपये रह गया। पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि में बैंक का मुनाफा 52 .59 करोड़ रुपये रहा था। बैंक के मुताबिक फंसे कर्ज (एनपीए) के मद में बढ़े प्रावधानों के चलते उसके लाभ में कमी आई। वित्त वर्ष की पहली तिमाही में बैंक की कुल आय बढ़कर 2,256 .25 करोड़ रुपये रही।

सरकारी बैंकों पर दो करोड़ रुपये तक जुर्माना

नई दिल्ली, एएनआइ : भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआइ) ने दिए गए कर्ज की मॉनिटरिंग में ढुलमुल रवैया अपनाने वाले सरकारी बैंकों पर 50 लाख रुपये से लेकर दो करोड़ रुपये तक का जुर्माना लगाया है। संबंधित बैंकों द्वारा शेयर बाजारों को दी गई जानकारियों के मुताबिक इलाहाबाद बैंक और बैंक और महाराष्ट्र पर दो करोड़ रुपये प्रत्येक, बैंक ऑफ बड़ौदा (बीओबी) बैंक ऑफ इंडिया (बीओआइ), इंडियन ओवरसीज बैंक (आइओबी) तथा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया पर डेढ़ करोड़ रुपये प्रत्येक तथा ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स (ओबीसी) पर एक करोड़ रुपये जुर्माना लगाया गया है। देश के सबसे बड़े सार्वजनिक कर्जदाता भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआइ) पर 50 लाख रुपये का जुर्माना लगाया है। आरबीआइ ने पाया है कि धोखाधड़ी से संबंधित जानकारियां उस तक पहुंचाने में बैंक ने देरी की। शेयर बाजारों को दी जानकारी में एसबीआइ ने कहा कि बैंकिंग नियामक ने बैंकिंग रेगुलेशंस एक्ट की धाराओं का उपयोग करते हुए उस पर यह जुर्माना लगाया है। सार्वजनिक क्षेत्र के कर्जदाता पंजाब नेशनल बैंक (पीएनबी) पर भी आरबीआइ ने 50 लाख रुपये का जुर्माना लगाया है। शेयर बाजारों को दी जानकारी में बैंक ने कहा कि किंगफिशर एयरलाइंस को दिए कर्ज के मामले में धोखाधड़ी से संबंधित जानकारियां आरबीआइ को देने में उसने देरी की।

एफपीआइ ने निकाले 20,500 करोड़ रुपये

▶ सुपर-रिच वर्ग पर सरचार्ज लागू होने की अवस्था में एफपीआइ पर पड़ेगा और बोझ

नई दिल्ली, आइएएनएस : देश के शेयर बाजारों से विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक (एफपीआइ) पिछले महीने की शुरुआत से अब तक 20,500 करोड़ रुपये से ज्यादा की रकम निकाल चुके हैं। इसके बावजूद सरकार अति-संपन्न वर्ग (सुपर-रिच) पर इस वर्ष बजट में लगाया गया सरचार्ज वापस लेने के मूड में दिखाई नहीं दे रही है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण पिछले दिनों कह चुकी हैं कि यह सरचार्ज वापस नहीं लिया जाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि एफपीआइ मुख्य रूप से सेकेंडरी मार्केट में पूंजी लगाते हैं। ऐसे में उनकी थोड़ी-बहुत निकासी से अर्थव्यवस्था को कोई नुकसान नहीं होने वाला है।

चालू वित्त वर्ष के लिए पिछले महीने पेश आम बजट में सीतारमण ने दो करोड़ रुपये से अधिक और पांच करोड़ रुपये तक की सालाना कमाई वाले व्यक्तियों और ट्रस्ट पर अतिरिक्त सरचार्ज लगा दिया था। उसके बाद से ही घरेलू शेयर बाजारों में गिरावट का जो सिलसिला शुरू हुआ, वह बीच-बीच में हावी होता रहा है। शेयर बाजारों में बीएसई सेंसेक्स के लिए इस वर्ष का जुलाई पिछले 17 वर्षों का सबसे बुरा महीना साबित हुआ था। बजट पेश होने के बाद से घरेलू शेयर बाजारों में खुदरा निवेशकों के 12 लाख करोड़ रुपये से अधिक डूब चुके हैं।

विशेषज्ञों का मानना है कि जो भी एफपीआइ इस वक्त गैर-कॉरपोरेट वर्ग में पंजीकृत हैं, सरचार्ज लागू होने के बाद उन पर बुरा असर पड़ेगा। आमतौर पर एफपीआइ अपने-अपने देशों में ट्रस्ट और लिमिटेड पार्टनरशिप के तौर पर पंजीकृत होते हैं। केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी) के चेयरमैन पीके मोदी ने हाल ही में कहा कि एफपीआइ चाहें तो कंपनी के रूप में पंजीकृत करा सकते हैं, जिससे उन पर टैक्स की दूसरी व्यवस्था लागू होगी।

पिछले महीने से ही निकासी जारी। प्रतीकात्मक

व्यापार असंतुलन के कारणों का शीघ्र निवारण करें क्षेत्रीय सहयोगी : भारत

▶ ऐसा आरसीईपी समझौता महत्वपूर्ण, जो मौजूदा व्यापार असंतुलन के कारणों को खत्म करने में कारगार हो

नई दिल्ली, प्रेट्र : भारत ने चीन से कहा है कि प्रस्तावित मुक्त व्यापार समझौते के लिए क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक गठजोड़ (आरसीईपी) के सदस्य देशों को व्यापार असंतुलन समस्या का समाधान करना चाहिए। यह जानकारी वाणिज्य मंत्रालय ने शनिवार को दी। बीजिंग में शुक्रवार को आरसीईपी की अंतर-मंत्रालयी बैठक में भारत के वाणिज्य सचिव अनूप वधावन ने चीन के उप वाणिज्य मंत्री वैंग शोउवेन से मुलाकात के दौरान यह बात कही। अपने बयान में वाणिज्य मंत्रालय ने कहा कि वाणिज्य सचिव ने मुलाकात के दौरान ऐसे आरसीईपी समझौते को महत्वपूर्ण बताया, जो मौजूदा व्यापार असंतुलन के कारणों को खत्म करने में कारगार हो।

दो दिवसीय बैठक के बाद संयुक्त बयान में कहा गया है कि सहयोगी देशों के आपसी बाजारों में पहुंच से संबंधित लगभग दो-तिहाई वार्ताओं को लेकर संतोषजनक आपसी सहमति बन गई है। जिन मुद्दों पर सहमति नहीं बन पाई है, उन पर संबंधित पक्षों में रचनात्मक सहयोग के माध्यम से सहमति बनाने की गंभीर कोशिशें की जा रही हैं। बैठक में शामिल मंत्रियों का कहना था कि पिछले वर्ष वैश्विक निवेश का आकर्षित करने में सदस्य देशों की 32.5 फीसद हिस्सेदारी रही है। पिछले वर्ष दुनियाभर की जनसंख्या में सदस्य देशों की हिस्सेदारी 47.4 फीसद, वैश्विक अर्थव्यवस्था में 32.2 फीसद, वैश्विक कारोबार में 29.1 फीसद और विदेशी निवेश आकर्षित करने में 32.5 फीसद रही है।

वधावन ने बैठक के दौरान चीन के उप प्रधानमंत्री से भी मुलाकात की। पिछले वित्त वर्ष के दौरान चीन के साथ भारत का व्यापार घाटा साढ़े तीन लाख करोड़ रुपये से ज्यादा रहा है। एएनआइ

11 सदस्यों से भारत का व्यापार असंतुलन

आरसीईपी में आसियान देशों यानी ब्रुनेई, कंबोडिया, इंडोनेशिया, मलेशिया, म्यांमार, सिंगापुर, थाईलैंड, फिलीपींस, लाओस व वियतनाम के अलावा उनके कारोबारी सहयोगी भारत, चीन, जापान, दक्षिण कोरिया, ऑस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड शामिल हैं। इनमें से बीते वित्त वर्ष के दौरान 11 देशों के साथ भारत का व्यापार असंतुलन रहा है। पिछले वित्त वर्ष के दौरान चीन से भारत का व्यापार घाटा 50 .2 अरब डॉलर (साढ़े तीन लाख करोड़ रुपये से ज्यादा) का रहा है।

मंदी के खिलाफ हथियार बनेगा सस्ता कर्ज

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

▶ बुधवार को आरबीआइ रेपो रेट में कर सकता है एक और कटौती

▶ सोमवार को बैंक प्रमुखों के साथ वित्त मंत्री सीतारमण की बैठक में कर्ज दर घटाने का मुद्दा उठेगा

दुनियाभर के देश सुस्ती से लड़ने के लिए सस्ते कर्ज का हथियार आजमाते हैं। भारत भी इस हथियार को आजमाने में ज्यादा चुस्ती दिखाने जा रहा है। अगले हफ्ते सोमवार को वित्त मंत्री निर्मला सीमारमण की बैंक प्रमुखों के साथ होने वाली बैठक और उसके बाद बुधवार को भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआइ) की तरफ से मौद्रिक नीति समीक्षा की बैठक में ब्याज दर को घटाना एक अहम मुद्दा रहेगा। अधिकांश जानकार मान रहे हैं कि आरबीआइ इस बार भी ब्याज दरों की राह आसान करने के लिए रेपो रेट को कटौती करेगा। आरबीआइ गवर्नर शक्तिकांत दास अपने कार्यकाल की तीनों समीक्षा बैठकों में रेपो रेट घटा चुके हैं।

हालांकि इसका पूरा फायदा ग्राहकों को नहीं मिला है। वित्त मंत्री की बैंक प्रमुखों के साथ होने वाली बैठक में अहम मुद्दा यही रहेगा। रेपो रेट (इस रेट के आधार पर ही बैंकों की तरफ से होम लोन, ऑटो लोन लोन जैसे कर्ज की दरें तय होती हैं) में जनवरी, 2019 के बाद से अभी तक तीन बार कटौती हो चुकी है। यह कटौती कुल 75 आधार अंकों (0.75 फीसद) की हुई है। हालांकि अभी तक होम लोन या अन्य कर्ज की दरों में मुश्किल से बैंकों ने 0.20 फीसद की कटौती ही की है। माना जा रहा है कि वित्त मंत्री की तरफ से सरकारी बैंकों को ना सिर्फ ज्यादा कर्ज बांटने, बल्कि कर्ज की मौजूदा दर को और घटाने के लिए भी कहा जाएगा। वित्त मंत्रालय के अधिकारी मानते हैं कि बैंकों की कर्ज दरों में 0.25 आधार अंकों की कटौती की साफ सूरत बनती है। वित्त मंत्री सीतारमण ने हाल ही में एक साक्षात्कार में कहा भी था, 'साफ तौर पर कहूं तो मेरी इच्छा है कि ब्याज दरों में कटौती हो। यह देश की अर्थव्यवस्था के लिए बहुत अच्छा साबित होगा।'

बैंकिंग क्षेत्र के सूत्रों के मुताबिक सरकारी क्षेत्र के बैंक ब्याज दरों में एक और कटौती की तैयारी में हैं। उन्हें बुधवार का इंतजार है, जब मौद्रिक नीति की समीक्षा का एलान होगा। जानकार मान रहे हैं कि रेपो रेट में एक और कटौती के बाद बैंकों के लिए ग्राहकों को कर्ज की दरों में और राहत देना आसान हो जाएगा। पिछले पखवाड़े पंजाब नेशनल बैंक और भारतीय स्टेट बैंक ने सावधि जमा योजनाओं पर देय ब्याज दरों को घटाकर इस बात के संकेत दिए थे कि वह आने वाले दिनों में कर्ज की दरों में कटौती की तैयारी में हैं।

देश के तमाम अर्थविद व आर्थिक एजेंसियां भी मान रही हैं कि अर्थव्यवस्था के मौजूदा हालात से उबरने के लिए ब्याज दरों में कटौती काफी अहम साबित होगा। उद्योग चैंबर एसोचैम की तरफ से आयोजित एक कार्यक्रम में हिस्सा लेते हुए प्रमुख अर्थशास्त्री सुरजीत भल्ला ने तो 50 से 100 आधार अंकों (0.50 से एक फीसद) तक की कटौती की जरूरत बताई। उनका कहना है कि तभी भारतीय कंपनियों को प्रतिस्पर्द्धी ब नाया जा सकेगा। बैंक ऑफ अमेरिका मेरिल लिंच के अर्थशास्त्री इंद्रनील सेनगुप्ता के मुताबिक सरकार अभी वित्तीय राहत देने की स्थिति में नहीं है, ऐसे में ब्याज दर को सस्ता करना ही एक ऐसा रास्ता है जिससे अर्थव्यवस्था को तेजी मिलेगी।

आरबीआइ द्वारा पिछली तीन कटौतियों का अभी तक ग्राहकों को नही मिल पाया है पूरा फायदा। प्रतीकात्मक

बाजार का नहीं, आपका अपना बेंचमार्क ही भविष्य में आपके काम आएगा

मान लीजिए कि कोई क्रिकेटर मैदान में बल्लेबाजी के लिए आया है। जैसे ही वह 28 रनों पर पहुंचता है, हैलमेट उतारकर दर्शकों का ऐसे अभिवादन करता है जैसे कि उसने शतक जड़ दिया हो। आखिर उसने ऐसा क्यों किया? उसने ऐसा इसलिए किया, क्योंकि उससे पहले तक उसका बल्लेबाजी औसत 27.6 रन प्रति मैच का ही था। उसने उस औसत को पार कर लेने को ही अपना नया बेंचमार्क माना हुआ था। जैसे ही उसने उस औसत को पार किया, उसको लगा कि वह सफल हो चुका है।

सिर्फ क्रिकेट की बात नहीं : यह महज एक मजाक है। लेकिन यह क्रिकेट का नहीं, बल्कि सही मायनों में निवेश के क्षेत्र का मजाक है। दुनिया का कोई भी बल्लेबाज अपने औसत से ऊपर पहुंचने मात्र से खुशी जाहिर करने नहीं लग जाता। लेकिन ऐसे बहुत से निवेश प्रबंधक या इन्वेस्टमेंट मैनेजर हैं, जो ऐसा ही व्यवहार करते हैं। उन्हें लगता है कि अगर उन्होंने औसत प्रदर्शन के एकाध मानक को पार कर लिया, तो वे अपने ग्राहकों की जरूरतें पूरी करने में सफल हो गए।

यह सोच ग्राहकों में भी गहरे तक पैठ गई सी लगती है। आखिर एक बचतकर्ता और निवेशक के तौर पर कोई व्यक्ति कौन सा मुकाम हासिल करना चाहता है? क्या केवल किसी औसत या किसी बेंचमार्क को पीछे छोड़ देना मात्र उसका मकसद है? बहुत से निवेशकों को यही लगता है कि जब तक वे ऐसे लक्ष्य हासिल करते रहे हैं, तब तक वे सफल हैं। अगर वे निश्चित आय वाले उपकरणों में निवेश करते हैं, तो वे सावधि जमा या एफडी की दर को बेंचमार्क मान लेते हैं। या अगर वे इक्विटी में निवेश करते हैं तो निफ्टी या सेंसेक्स से अधिक के रिटर्न को बेंचमार्क बना लेते हैं।

असल में मीडिया और अधिकांश विश्लेषक भी इसी सोच को मजबूती देते नजर आते हैं। हर वर्ष के अंतिम दिनों में अखबार, पत्रिकाएं या वेबसाइट इन खबरों, तालिकाओं या टेबल, ग्राफ और विश्लेषणों से अटे पड़े दिखते हैं कि बीते वर्ष के दौरान किसने कैसा प्रदर्शन किया। इस तरह के आंकड़े सिर्फ उनके काम आते हैं जो पहली जनवरी को निवेश करते हैं और 31 दिसंबर को उसे भुना लेना चाहते हैं। दूसरे शब्दों में कहें, तो यह सब किसी काम का नहीं है।

कोई भी व्यक्ति, जो इन पैमानों पर निवेश करता है या करना चाहता है, बहुत संभव है कि वह बेहद सामान्य निवेश में उलझकर रह जाए। क्योंकि यह संभव है कि आमतौर पर प्रचलित कई औसत बेंचमार्क से बेहतर प्रदर्शन करने के बावजूद कोई निवेशक बिल्कुल खाली हाथ वापस लौटे। बिल्कुल उसी क्रिकेटर की तरह, जिसका जिक्र हमने इस आलेख की शुरुआत में किया था।

किस दौड़ में हैं आप : ऐसे में वह असली बेंचमार्क कौन सा है जिसका किसी निवेशक को अनुसरण करना चाहिए? उसका आधार क्या होना चाहिए? इसका सबसे करीबी जवाब यह है कि उसे आपकी जरूरतें पूरी करने वाला होना चाहिए। यहां जरूरत से आशय उन तरीकों से है, जिनसे आप निवेश करना चाहते हैं। इसका आशय इस बात से भी है कि आप अपने निवेश से किस तरह की उम्मीद रखते हैं। हममें से ज्यादातर लोगों के पास हर महीने कुछ न कुछ ऐसी रकम होनी चाहिए या होती है, जिसका हम निवेश कर सकते हैं। बेहतर रिटर्न और सुरक्षा के लिहाज से भी नियमित मासिक निवेश सबसे बेहतर तरीका है। मैंने वैल्यू रिसर्च ऑनलाइन पर मासिक एसआइपी इक्विटी फंड्स के निवेश प्रदर्शन का आकलन किया और पाया कि लगभग सभी फंड सामान्य बेंचमार्क से बेहतर प्रदर्शन करते रहे हैं।

मेरे ऐसा कहने का मतलब सिर्फ इतना है कि बेहतर बेंचमार्क सिर्फ वह है जो आपके लिए आपके हिसाब से विशिष्ट हो, जो आपकी जरूरतों पर आधारित हो। सामान्य बेंचमार्क हमेशा बड़ी संख्या में निवेश के औसत पर आधारित होता है। लेकिन आपके व्यक्तिगत बेंचमार्क के भी उसी पर आधारित होने का कोई तुक नहीं है। इसके विपरीत उसे पूरी तरह आपकी जरूरतों पर आधारित होना चाहिए। क्या आपका निवेश आपकी जरूरतें पूरी करने के रास्ते पर चल रहा है? क्या आपने अतीत के लक्ष्यों को हासिल करने में सफलता पाई है? ये सवाल, या कहें तो इन सवालों के जवाब ही सबसे महत्वपूर्ण हैं। अगर इनमें से ज्यादातर सवालों के जवाब 'ना' में हैं, तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपके निवेश ने सेंसेक्स या निफ्टी के बेंचमार्क को पीछे छोड़ दिया। इसका सीधा मतलब है कि आपको उस दौड़ में होना ही नहीं था।

कई दूसरे मामलों में हम पाते हैं कि जब तक आप चलते रहते हैं और थोड़ी भी गति बरकरार रहती है, आप मंजिल के करीब पहुंचते जाते हैं। लेकिन निवेश और बचत के मामलों में ऐसा नहीं है। भविष्य में आपको कितनी रकम की जरूरत होगी, उसके लिए आप उचित निवेश करेंगे और निवेश के दौरान ही यह जानकारी लेंगे कि आप लक्ष्यों तक पहुंच रहे हैं कि नहीं - यह सब आसान काम नहीं है। दुर्भाग्य से यह जानने का कोई दूसरा आसान रास्ता भी नहीं है।

धीरेन्द्र कुमार, सीईओ
वैल्यू रिसर्च

बोनस

आम बचतकर्ता और निवेशक आंख मूंदकर कुछ बेंचमार्क का अनुसरण करते पाए जाते हैं। वे इस बात से ही खुश हो जाते हैं कि उनका निवेश बाजार के कुछ प्रचलित बेंचमार्क से बेहतर रहा है। यह बिल्कुल वैसा ही है जैसे कि कोई बल्लेबाज शतक जमाने से पहले ही किसी अंक पर यह सोचकर खुशियां मनाने लगे, कि उसने पहले का बेंचमार्क पार कर लिया है। ज्यादातर निवेशकों और बचतकर्ताओं के साथ यही हो रहा है। वे अपनी जरूरतों के हिसाब से बेंचमार्क का निर्धारण करने के बजाय बाजार और अन्य पक्षों द्वारा पेश कुछ प्रचलित बेंचमार्क को अपना लेते हैं। इसी वजह से अक्सर ही उनका निवेश भविष्य की जरूरतें पूरी करने में विफल साबित होता है।

डीएमओ ने दिया मदरसों में राष्ट्रगान का फरमान, डीएम ने नकारा

जागरण संवाददाता, पीलीभीत

उत्तर प्रदेश के पीलीभीत के डीएम को भनक तक नहीं, उनके नाम का हवाला देते हुए जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी (डीएमओ) ने फरमान जारी कर दिया कि सभी मदरसों में दुआ के बाद राष्ट्रगान कराया जाए। मामला जब डीएम के संज्ञान में पहुंचा तो उनका पारा चढ़ा। जिसके बाद अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी गलतफहमी का हवाला देते हुए पलट गए।

एक अगस्त को जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी मुहम्मद खालिद की ओर से सभी मदरसा प्रबंधकों के लिए एक पत्र जारी हुआ। जिसमें लिखा था डीएम के मौखिक आदेश के बाद मदरसा संचालकों के लिए कुछ निर्देश जारी किए जा रहे हैं। पत्र के अनुसार, मदरसों में मजहबी तालीम (धार्मिक शिक्षा) के साथ अब दुनियावी (आधुनिक) शिक्षा पर भी ध्यान दिया जाए। सुबह की दुआ (प्रार्थना) के बाद बच्चे अनिवार्य रूप से राष्ट्रगान गाएंगे। इतना ही नहीं, मदरसों में जो बोर्ड होगा, उस पर उर्दू के साथ हिंदी और अंग्रेजी भाषा में भी सूचनाएं लिखी जाएंगी। सभी मदरसा आधुनिक शिक्षा के लिए अपने यहां संसाधन बढ़ाएं। कंप्यूटर रखें।

रामपुर में तैनाती, पीलीभीत का

रामपुर में डीएम की ओर से इस तरह का मौखिक आदेश जारी हुआ था। जिसके बाद मेरी ओर से मदरसों के लिए पत्र जारी किया गया। यहां चार्ज पर आए तो उसी गलतफहमी में पत्र जारी कर दिया। इसे निरस्त कराया जा रहा है।

–मुहम्मद खालिद, जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी, पीलीभीत

मदरसों में राष्ट्रगान गाने का कोई निर्देश मेरी ओर से नहीं गया है। जिला अल्पसंख्यक कल्याणी अधिकारी से इस बाबत जवाब तलब किया गया है।

–वैभव श्रीवास्तव, डीएम, पीलीभीत

अतिरिक्त प्रभार : जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी मुहम्मद खालिद रामपुर में तैनात हैं। उनके पास पीलीभीत का अतिरिक्त प्रभार है। इसलिए वह सप्ताह में दो दिन यहां भी बैठते हैं। शनिवार शाम को जागरण ने डीएम वैभव श्रीवास्तव से इस निर्देश के बारे में जानकारी चाही कि क्या मदरसों में राष्ट्रगान गाने का निर्देश दिया गया है। उन्होंने इससे इन्कार किया। बाद में जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी को फोन कर नाराजगी जताई। जिसके बाद जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी ने पत्र को खारिज कर दिया।

नर्सों से बोला डॉक्टर– जब तक मूंगफली खाता रहूं, सामने बैठी रहो

नईदुनिया, रायपुर

▶ छत्तीसगढ़ में राज्य मुख्यालय के सरकारी आयुर्वेदिक अस्पताल का मामला

▶ स्वास्थ्य मंत्री ने कहा– संबंधित के खिलाफ विभागीय कार्रवाई की जाएगी

छत्तीसगढ़ में राज्य मुख्यालय के सरकारी आयुर्वेदिक अस्पताल में डॉक्टर ने अजीबोगरीब तरीके से रात को नर्सों को प्रताड़ित किया। गुरुवार रात करीब 12 बजे ड्यूटी पर तैनात डॉक्टर स्टाफ के ड्यूटी रूम में एक किलो मूंगफली लेकर पहुंचा। सभी वार्डों की स्टाफ नर्सों को बुलाया। सामने बैठ कर बोला- 'जब तक ये फल्ली (मूंगफली) खाऊंगा , तब तक कोई भी यहां से जाएगा नहीं। सब मेरे सामने बैठे रहेंगे।' अब बेचारी नर्स भी क्या करतीं, सीनियर डॉक्टर का आदेश जो था, वे बैठ गईं।

डॉक्टर का यह ड्रामा बहुत देर तक चला। गंभीर बात यह है कि सभी नर्स बैठ गईं थीं, इस कारण उस वक्त वार्डों में मरीजों की देखरेख के लिए कोई नहीं था। मूंगफली खत्म होने के बाद ही डॉक्टर ने सभी को जाने दिया। डॉक्टर का यह रवैया किसी को पसंद नहीं आया, मगर मजबूर नर्स चुप रहीं। इनमें से एक सीनियर नर्स चुप नहीं बैठी, उन्होंने प्राचार्य डॉ. जीएस बघेल को शुक्रवार की सुबह ही शिकायत कर दी। इसके बाद भी प्रबंधन का गैरजिम्मेदाराना रवैया देखिए कि शिकायत पर कोई कार्रवाई करना तो दूर, डॉक्टर से जवाब-तलब तक नहीं हुआ। चर्चा है कि नर्सों को अधीक्षक से शिकायत करने की सलाह दे दी गई है।

वायरल वीडियो में है डॉक्टर का नाम : एक वीडियो वायरल हो रहा है। इसमें एक महिला स्टाफ बोल रही है कि डॉ. सोमेश सर फल्ली खा रहे हैं। कह रहे हैं कि मेरे सामने बैठे रहे रात भर। यहां किसी को मरीजों की परवाह नहीं है। किसी को भी कोई परवाह नहीं है। वार्ड में सारे मरीज सो रहे हैं, लाइट बंद है। अब बताइए, ऐसे मेंटल टार्चर में कोई कैसे ड्यूटी करेगा। इन लोगों का कहना है कि कोई अधिकार नहीं है कि हम उपस्थित हैं या नहीं, ये लिखे। हम ऐसे में कैसे ड्यूटी करें। संभवतः यह वीडियो एक सीनियर नर्सिंग स्टाफ ने बनाया है।

परिचारिका संघ ने किया विरोध : सोशल मीडिया पर भी एक पोस्ट चल रहा है। इसमें छत्तीसगढ़ परिचारिका संघ ने घटना का कड़ा विरोध किया है। इन्होंने शासन-प्रशासन से पूछा है कि नर्सें जो दिन-रात सेवा देती हैं, क्या उन्हें ऐसा प्रतिफल मिलना चाहिए। इनके आरोप हैं कि महिला होने का फायदा उठाया जाता है, कमजोर समझा जाता है। इन्होंने स्वास्थ्य मंत्री से अपील की है वे इस घटना को संज्ञान में लें और त्वरित कार्रवाई करें।

सरकार ने लिया संज्ञान

वीडियो वायरल होने और परिचारिका संघ के विरोध की जानकारी मिलते ही स्वास्थ्य मंत्री टीएस सिंहदेव ने मामले की जांच के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि यदि यह अशोभनीय हरकत हुई है तो संबंधित के खिलाफ विभागीय कार्रवाई की जाएगी।

आजीविका अंगना बदलेगी तस्वीर 20 हजार को मिलेगा रोजगार

रायपुर, राज्य ब्यूरो

▶ छग में पंचायत विभाग ने हर जिले से मंगाया प्रस्ताव, बस्तर से लेकर सरगुजा तक खुलेगा मल्टी एक्टिविटी सेंटर

▶ ये सेंटर दो से तीन एकड़ में होंगे विकसित, इस पर करीब तीन करोड़ रुपये खर्च होने का अनुमान है

छत्तीसगढ़ सरकार आजीविका अंगना (मल्टी एक्टिविटी सेंटर) को हर जिले में लांच करने जा रही है। इसके लिए पंचायत विभाग ने हर जिले से प्रस्ताव आमंत्रित किया है। एसीएस आरपी मंडल ने बताया कि बस्तर से लेकर सरगुजा तक आजीविका अंगना का विस्तार किया जा रहा है। इससे जिलों में करीब एक हजार युवाओं और महिलाओं को रोजगार मिलेगा। जबकि प्रदेश में करीब 20 हजार युवाओं और महिलाओं को सीधा रोजगार मिलने की संभावना है। पंचायत विभाग के आला अधिकारियों ने बताया कि बस्तर के कुछ जिलों में मल्टी एक्टिविटी सेंटर की तरह का प्रयोग किया गया है। अब उसे आजीविका अंगना की तर्ज पर विकसित किया जाएगा। जिलों में दो से तीन एकड़ में विकसित करने का प्रस्ताव मंगाया गया है। इस पर करीब तीन करोड़ रुपये खर्च होने का अनुमान है।

पंचायत विभाग के अधिकारियों ने बताया कि आजीविका अंगना में गणवेश और जूट बैग की सिलाई, अगरबत्ती, एलईडी बल्ब, कांच की चूड़ी तथा सेनेटरी पैड बनाने का काम किया जाएगा। इसके साथ ही पेवर ब्लॉक, फ्लाई एश ब्रिक्स, सीमेंट पोल एवं चैन लिंक फेंसिंग बनाने का काम शुरू किया जाएगा। स्थानीय स्तर पर मिलने वाले कच्चे माल के आधार पर भी रोजगार शुरू किया जाएगा। यह पूरी योजना स्वसहायता समूहों की महिलाएं को आर्थिक मोर्चे पर आत्मनिर्भर बनाने के लिए शुरू की जा रही है। बताया जा रहा है कि राज्य सरकार की योजनाओं से इस प्रोजेक्ट को जोड़ा जाएगा। इसमें महिला बाल विकास विभाग और समाज कल्याण विभाग की योजनाओं को प्रमुखता से लागू किया जाएगा।

कौशल विकास का भी किया जाएगा काम : पंचायत विभाग के अधिकारियों ने बताया कि सेंटर में कौशल विकास का काम भी किया जाएगा। महिलाओं को अलग-अलग क्षेत्र में प्रशिक्षण दिया जाएगा। सिलाई से लेकर सेनेटरी नैपकिन बनाने का प्रशिक्षण दिया जाएगा। साथ ही सरकारी विभाग की ओर से मिलने वाली सहायता भी दी जाएगी।

8 दिन में तीन बार मिसाइल परीक्षण कर चुका है उत्तर कोरिया। दक्षिण कोरिया और अमेरिका के संभावित युद्धाभ्यास को देखते हुए उत्तर कोरिया खासा नाराज है।

पाक ने अब तक नहीं दी जाधव को दूतावास से संपर्क की अनुमति

इस्लामाबाद, प्रेट्र : पाकिस्तान ने अभी तक जेल में बंद कुलभूषण जाधव को भारतीय दूतावास से संपर्क की अनुमति नहीं दी। भारत और पाकिस्तान के बीच शर्तों को लेकर जारी मतभेदों के चलते भारतीय उच्चायोग अधिकारियों और जाधव के बीच मुलाकात नहीं हो सकी।

बता दें कि पाकिस्तान की एक सैन्य अदालत ने भारतीय नौसेना के सेवानिवृत्त अधिकारी जाधव (49) को 'जासूसी और आतंकवाद' के आरोप में अप्रैल, 2017 में मौत की सजा सुनाई थी। इस सजा के खिलाफ भारत ने नीदरलैंड में हेग स्थित अंतरराष्ट्रीय न्यायालय (आइसीजे) में अपील कर मौत की सजा पर रोक लगाने की मांग की।

भारत के पक्ष में फैसला देते हुए अंतरराष्ट्रीय न्यायालय ने पाकिस्तान को जाधव की दोषसिद्धि और सजा की 'प्रभावी समीक्षा एवं पुनर्विचार' करने का 17 जुलाई को आदेश दिया। न्यायालय ने बिना देर किए जाधव का भारतीय दूतावास से संपर्क कराने का भी निर्देश दिया। मुलाकात का कार्यक्रम शुक्रवार दोपहर तीन बजे निर्धारित हुआ। भारत ने गुरुवार को पाकिस्तान से दो टूक कहा था कि जाधव का दूतावास से संपर्क बेरोक-टोक और न्यायालय के फैसले के अनुरूप हो।

आइसीजे ने कुलभूषण को भारतीय दूतावास से संपर्क की अनुमति देने का दिया है आदेश

गौरतलब है कि पाकिस्तान ने शर्त लगा दी थी कि जब जाधव की भारतीय अधिकारियों से मुलाकात होगी तो पाकिस्तान का एक अधिकारी भी मौजूद रहेगा। भारत ने इस शर्त का विरोध किया। गुरुवार को पाक विदेश विभाग ने कहा कि जाधव को शुक्रवार को दूतावास से संपर्क की इजाजत दी जाएगी, लेकिन इसके बावजूद जाधव की भारतीय अधिकारियों से मुलाकात नहीं हो पाई। पाकिस्तान ने भी नहीं बताया कि यह मुलाकात क्यों नहीं हो पाई। जाधव मामले पर आइसीजे ने पाकिस्तान को कड़ी फटकार लगाई थी। उसने कहा कि पाकिस्तान ने राजनयिक संबंधों पर वियना कन्वेंशन का उल्लंघन किया है। पाकिस्तान ने दलील दी कि उसके सुरक्षा बलों ने जाधव को अशांत बलूचिस्तान प्रांत से तीन मार्च 2016 को गिरफ्तार किया, जहां उसने ईरान से कथित तौर पर वहां प्रवेश किया था। भारत ने इसका जोरदार प्रतिवाद किया और दलील दी कि जाधव को ईरान से अगवा किया गया, जहां वह नौसेना से सेवानिवृत्त होने के बाद कारोबार के सिलसिले में गए थे।

पाक के उच्चायुक्त की बिसारिया से मुलाकात

कुलभूषण जाधव मामले को लेकर भारत के सख्त रुख के बीच शनिवार को इस्लामाबाद में पाकिस्तान के भारत में नवनियुक्त उच्चायुक्त मोईन-अल-हक ने भारत के पाक में नियुक्त हाई कमिश्नर अजय बिसारिया से भेंट की। हक संभवत इस माह के आखिरी सप्ताह में अपना कार्यभार संभालेंगे। जाधव मामले पर भारत ने अपना रुख स्पष्ट करते हुए पाकिस्तान से बिना किसी रुकावट के अंतरराष्ट्रीय कोर्ट के आदेश के अनुरुप राजनयिक पहुंच उपलब्ध कराने को कहा था। एएनआइ

उत्तर कोरिया में जेल से भागने वाले को मार दी जाती है गोली : संयुक्त राष्ट्र

संयुक्त राष्ट्र, एपी : संयुक्त राष्ट्र की एक नई रिपोर्ट में उत्तर कोरिया में मानवाधिकार उल्लंघन की भयावह तस्वीर सामने आई है। इस देश में जेल से भागने का प्रयास करने वाले कैदियों को सरेआम गोली मार दी जाती है। साथ ही हिरासत में लिए गए लोगों को यातनाएं दी जाती हैं। उनके साथ यौन हिंसा होती है। उन्हें डंडे और लोहे की राड से बुरी तरह मारा-पीटा भी जाता है।

संयुक्त राष्ट्र महासभा में रखी गई रिपोर्ट के अनुसार, जेल के सुरक्षाकर्मी बंदियों के कपड़े उतरवा लेते हैं। पैसे या छिपाए गए सामान का पता लगाने के लिए कैदियों की बार-बार तलाशी ली जाती है। कई बार उनसे महीने भर या ज्यादा समय तक पूछताछ भी होती है। कैदियों को जेल की उन कोठरियों में रखा जाता है, जिनमें क्षमता से ज्यादा बंदी होते हैं। ऐसी कोठरियों में बंदी ठीक से लेट भी नहीं पाते हैं। संयुक्त राष्ट्र (यूएन) महासचिव एंटेनियो गुतेरस ने बताया कि उत्तर कोरिया के पूर्व बंदियों ने अधिकारियों पर जिंदगी, आजादी और सुरक्षा संबंधी मानवाधिकारों का घोर उल्लंघन करने का आरोप लगाया।

संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट से सामने आई मानवाधिकार उल्लंघन की भयावह तस्वीर

रिपोर्ट का दावा, हिरासत में लोगों को दी जाती हैं यातनाएं

इस तरह तैयार की गई रिपोर्ट: गुतेरस के अनुसार, संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार कार्यालय ने यह रिपोर्ट उन उत्तर कोरियाई नागरिकों की आपबीती के आधार पर तैयार किया है, जिन्हें हिरासत में रखा गया था। इनमें ज्यादातर महिलाएं थीं, जो भागकर चीन चली गईं। मानवाधिकार कार्यालय ने गत वर्ष सितंबर से इस साल मई के बीच 330 से ज्यादा पूर्व बंदियों का साक्षात्कार लिया था। ये लोग उत्तर कोरिया छोड़ चुके हैं।

उत्तर कोरिया ने नकारे आरोप: उत्तर कोरिया कई बार कह चुका है कि वह मानवाधिकारों का उल्लंघन नहीं करता है। जिनेवा में उसके दूत हान ताई सांग ने गत मई में कहा था कि सरकार लोगों के हित के लिए हर संभव प्रयास कर रही है।

यूएन अधिकारियों को नहीं दिया वीजा: मानवाधिकार हनन के आरोपों से इन्कार करने वाला उत्तर कोरिया इन मामलों की जांच करने वाले यूएन अधिकारियों को वीजा देने से मना करता रहा है।

बंदियों की स्थिति बदहाल

यूएन प्रमुख गुतेरस ने पूर्व बंदियों के हवाले से बताया कि कैदियों को बहुत बदहाल स्थितियों में रखा जाता है। बेहद कम भोजन दिया जाता है। इस कारण कई बंदी तो कुपोषण और बीमारी का शिकार हो गए। कई की मौत तक हो गई। मानवाधिकार कार्यालय को यह भी पता चला कि अधिकारियों के हाथों कई महिला बंदी यौन हिंसा का शिकार भी हुईं।

नहीं मिलते हैं वकील

गुतेरस ने बताया कि उत्तर कोरिया में बंदियों को ट्रायल के पूर्व वकील तक मुहैया नहीं कराए जाते हैं। उन्हें उन अपराधों में सिर्फ सजा की जानकारी दे जाती है, जिनमें छह माह तक की सजा का प्रावधान है।

चीन से मुकाबले को मिसाइल तैनात करेगा अमेरिका

बड़ा कदम ▶ रक्षा मंत्री मार्क एस्पर ने किया एलान, यह कदम आइएनएफ संधि से अलग होने के बाद उठाया जा रहा है

मिसाइलें एशिया में कहां तैनात की जाएंगी इस बारे में नहीं बताया गया

सिडनी, एएफपी : अमेरिका एशिया में अपनी इंटरमीडिएट-रेंज की नई मिसाइलों को जल्द से जल्द तैनात करना चाहता है। अमेरिका की तरफ से यह कदम क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव का मुकाबला करने के लिए उठाया जा रहा है। शनिवार को इसका एलान अमेरिका के रक्षा मंत्री मार्क एस्पर ने किया।

एस्पर ने कहा, हां हम एशिया में अपनी मिसाइलें तैनात करना चाहते हैं, यह जवाब उन्होंने तब दिया जब उनसे पूछा गया कि क्या अमेरिका एशिया में मध्यम-दूरी की अपनी नई मिसाइलों को तैनात करने की योजना बना रहा है। रक्षा मंत्री ने कहा, अमेरिका अब इंटरमीडिएट-रेंज न्यूक्लियर फोर्सेज (आइएनएफ) संधि से बंधा हुआ नहीं है। हम देर-सबेर मिसाइलें तैनात करना चाहेंगे। इसमें कई माह लगेंगे, क्योंकि ये चीजें अधिक समय लेती हैं। उन्होंने यह नहीं बताया कि अमेरिका ये मिसाइलें कहां तैनात करेगा।

संधि टूटने के बाद बदली रणनीति : बता दें कि अमेरिका शुक्रवार को आइएनएफ संधि से अलग हो गया। उसने रूस पर इस संधि के उल्लंघन का आरोप लगाया। दोनों देशों के बीच 1987 में यह संधि हुई थी। इसपर

ऑस्ट्रेलिया पहुंचे मार्क एस्पर। प्रेट्र

तत्कालीन राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन और सोवियत नेता मिखाइल गोर्बाचेव ने हस्ताक्षर किए थे। संधि के तहत दोनों देश इस बात पर राजी हुए थे कि वे पारंपरिक और परमाणु लैस मीडियम-रेंज मिसाइलों को सीमित करेंगे।

चीन से मुकाबला करने को स्वतंत्र : अमेरिकी रक्षा मंत्री ने कहा, संधि से अलग होने के बाद अमेरिका अब चीन से मुकाबला करने को स्वतंत्र है। चीन के पास ज्यादातर मिसाइलें ऐसी हैं जो संधि के तहत प्रतिबंधित थीं। चीन ने उस संधि पर हस्ताक्षर भी नहीं किए। उन्होंने कहा कि चीन को हैरानी नहीं होनी चाहिए, क्योंकि अमेरिका कुछ समय से इसपर विचार कर रहा है। एस्पर ने कहा, मैं यह बताना चाहता हूं कि उनके 80 फीसद मिसाइल अन्वेषण आइएनएफ रेंज सिस्टम के हैं, इसलिए उन्हें हैरान नहीं होना चाहिए, क्योंकि हम भी ऐसी क्षमता चाहते हैं।

ट्रंप ने दोहराया, मिटा सकते हैं अफगानिस्तान को

कहा, आतंकी संगठन तालिबान से वार्ता प्रगति पर

कई दौर की बातचीत के बाद भी दोनों पक्ष किसी समझौते पर नहीं पहुंचे हैं

वाशिंगटन, एएफपी : आतंकी संगठन तालिबान से हो रही वार्ता में प्रगति की बात करते हुए अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एक बार फिर अफगानिस्तान को मिटा सकने की बात दोहराई। उन्होंने कहा कि वह चाहें तो कुछ दिनों में ही अफगानिस्तान का नामो-निशान मिट सकता है। ह्वाइट हाउस में पत्रकारों से बातचीत करते हुए ट्रंप ने कहा, 'हमारी सेना दो दशक से वहां संघर्ष कर रही है। वह चाहे तो दो से चार दिन में अफगानिस्तान को जीत सकती है, लेकिन मैं इस लड़ाई में एक करोड़ लोगों की मौत नहीं चाहता।' जुलाई में भी ट्रंप ने इसी तरह की बात की थी। तब माना जा रहा था कि वह अफगानिस्तान पर परमाणु हमले की धमकी दे रहे हैं।

तालिबान से हो रही वार्ता पर ट्रंप ने कहा, 'हम बात कर रहे हैं। हमने काफी प्रगति भी की है।' उन्होंने हालांकि, अफगानिस्तान में अमेरिकी सैनिकों की संख्या घटाए जाने के सवाल पर कोई स्पष्ट उत्तर नहीं दिया। एक रिपोर्ट के अनुसार अमेरिका व तालिबान के बीच एक समझौते को लेकर बातचीत हो रही है। इसके तहत अमेरिका अफगानिस्तान में

डोनाल्ड ट्रंप फाइल

तैनात अपने सैनिकों की संख्या 14,000 से घटाकर आठ हजार कर सकता है। इसके बदले में तालिबान युद्धविराम के साथ-साथ अफगानिस्तान सरकार से भी बातचीत करेगा। कई दौर की बातचीत के बाद भी दोनों पक्ष अब तक किसी समझौते पर नहीं पहुंचे हैं। जहां तालिबान अमेरिकी सेना की वापसी की मांग पर अड़ा है, वहीं अमेरिका अफगान सरकार को भी वार्ता में शामिल करना चाहता है।

अमेरिका-तालिबान के बीच शनिवार से आठवें दौर की बातचीत शुरू

18 साल से युद्धग्रस्त अफगानिस्तान में शांति के लिए अमेरिका व तालिबान के प्रतिनिधियों के बीच दोहा में शनिवार से आठवें दौर की बातचीत शुरू हुई। वार्ता के लिए अमेरिका के प्रतिनिधि जालमे खलीलजाद शुक्रवार को दोहा पहुंचे। इस बार दोनों पक्ष में समझौता होने की उम्मीद जताई गई है जिसके तहत अफगानिस्तान से विदेशी सेना हटा ली जाएगी। खलीलजाद ने कहा, 'हम सिर्फ सेना वापसी की नहीं, बल्कि शांति के लिए समझौता करेंगे। परिस्थितिवश ही वहां सैनिक तैनात किए गए थे और उनकी वापसी भी किसी ठोस आधार पर होगी।'

गिलगित-बाल्टिस्तान में सीपीईसी से हो जाएंगे दस हजार बेरोजगार

एम्सटर्डम, एएनआइ : नीदरलैंड के एक स्वतंत्र थिंक टैंक ने बहुप्रचारित चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (सीपीईसी) को लेकर आगाह किया है। उसका कहना है कि इस परियोजना के कारण पाकिस्तान न सिर्फ चीन के कर्ज के जाल में फंस जाएगा, बल्कि उसके कब्जे वाले गिलगित-बाल्टिस्तान में दस हजार से ज्यादा लोग बेरोजगार भी हो जाएंगे।

थिंक टैंक यूरोपीय फाउंडेशन फॉर साउथ एशियन स्टडीज (ईएफएसएएस) की विश्लेषक योना बारेकोवा ने कहा, 'सीपीईसी से पाकिस्तान, चीनी कर्ज के जाल में फंस जाएगा। बड़ी तादाद में चीनी कर्मचारियों के बढ़ने से गिलगित-बाल्टिस्तान में दस हजार से ज्यादा लोगों की नौकरी छिन जाएगी।' उन्होंने कहा, 'पाकिस्तान ने ढांचागत विकास के नाम पर गिलगित-बाल्टिस्तान इलाका चीन को बेच दिया है। इस क्षेत्र को परियोजना के फायदे से पूरी तरह अलग रखा गया है। सीपीईसी का यहां के पर्यावरण और पारिस्थितिक पर कई तरह का नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।' नीदरलैंड की राजधानी एम्सटर्डम स्थित ईएफएसएएस की विश्लेषक ने यह भी कहा, 'पाकिस्तान का चीन सदाबहार दोस्त है, लेकिन सच्चाई यह भी है कि उनकी दोस्ती हमेशा असंतुलित रही है। पाकिस्तान पर चीन का कर्ज है और यह बढ़ता जाएगा।'

बुनियादी अधिकारों से वंचित : गिलगित-बाल्टिस्तान के लोगों और अंतरराष्ट्रीय पर्यवेक्षकों के अनुसार, इस क्षेत्र को सभी बुनियादी मानवीय और नागरिक अधिकारों से वंचित रखा गया है। इस क्षेत्र का पाकिस्तान की नेशनल असेंबली में कोई प्रतिनिधित्व तक नहीं है।

भारत ने जताई है आपत्ति : भारत ने 50 अरब डॉलर (करीब 3.48 लाख करोड़ रुपये) की लागत वाली सीपीईसी परियोजना पर आपत्ति जताई है, क्योंकि यह गलियारा गुलाम कश्मीर और गिलगित-बाल्टिस्तान से होकर गुजरेगा। करीब तीन हजार किमी लंबे सीपीईसी से पश्चिमी चीन के काशगर को पाकिस्तान में अरब सागर के तट पर स्थित ग्वादर बंदरगाह से जोड़ा जाना है।

नीदरलैंड के थिंक टैंक ने चेताया, चीनी कर्ज के जाल में फंस सकता है पाकिस्तान

सीपीईसी के खिलाफ सियोल में प्रदर्शन

सियोल : दक्षिण कोरिया की राजधानी सियोल में बलूच नेशनल मूवमेंट के कार्यकर्ताओं ने शुक्रवार को सीपीईसी और बलूचिस्तान में जारी पाकिस्तान के अत्याचार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने पाकिस्तानी और चीनी दूतावासों तक रैली निकाल कर अपने गुस्से का इजहार किया। इसके बाद एमनेस्टी इंटरनेशनल के ऑफिस जाकर एक ज्ञापन भी सौंपा। इसमें यह आरोप लगाया है कि पाकिस्तान ने हजारों बलूच लोगों को लापता कर दिया है।

पाक का दावा, करतारपुर गलियारे का 90 फीसद कार्य पूरा किया

इस्लामाबाद, प्रेट्र : पाकिस्तान ने दावा किया है कि उसने करतारपुर गलियारे पर 'जीरो लाइन' से गुरद्वारा साहिब तक का 90 फीसद निर्माण कार्य पूरा कर लिया है। इस वर्ष नवंबर में गुरु नानक की 550वीं जयंती के मौके पर उद्घाटन किए जाने की उम्मीद है। पाकिस्तान की एक मीडिया रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई है।

बता दें कि गलियारा पाकिस्तान के करतारपुर स्थित दरबार साहिब को गुरदासपुर जिले में डेरा बाबा नानक गुरुद्वारे से जोड़ेगा। इससे भारतीय सिख श्रद्धालुओं को पाकिस्तान जाने के लिए वीजा मुक्त आवागमन की सुविधा मिलेगी। इन श्रद्धालुओं को करतारपुर साहिब जाने के लिए केवल एक 'परमिट' लेना होगा। बता दें कि 1522 में गुरु नानक ने इस गुरुद्वारे की स्थापना की थी। पाकिस्तानी अखबार 'एक्सप्रेस ट्रिब्यून' की रिपोर्ट के मुताबिक भारत से तीर्थयात्रियों का पहला जत्था नौ नवंबर को पाकिस्तान पहुंचेगा। हालांकि अभी यह नहीं बताया गया है कि इन श्रद्धालुओं की संख्या कितनी होगी।

नवंबर में इमरान खान करेंगे गलियारे का उद्घाटन : रिपोर्ट में कहा गया है कि पाकिस्तान सरकार ने अपनी तरफ करतारपुर गलियारे का 90 फीसद निर्माण का काम पूरा कर लिया गया है। इसमें 'जीरो लाइन' से गुरुद्वारा साहिब तक मुख्य सड़क, पुल और इमारतों का निर्माण आदि शामिल है। रिपोर्ट में बताया गया है कि पाकिस्तान की ओर गलियारे का उद्घाटन नवंबर में बाबा गुरु नानक की जयंती पर देश के प्रधानमंत्री इमरान खान और सेनाध्यक्ष जनरल कमर जावेद बाजवा करेंगे।

भारत से सिख तीर्थयात्रियों का पहला जत्था नौ नवंबर को पहुंचेगा पाकिस्तान

पिछले वर्ष गलियारा निर्माण पर दोनों देश हुए थे राजी : रिपोर्ट में कहा गया है कि नवंबर 2018 में भारत और पाकिस्तान करतारपुर गलियारे के लिए समझौते को अंतिम रूप देने की दिशा में काम करने के लिए सहमत हुए। रिपोर्ट के मुताबिक गलियारे के लिए निर्बाध संपर्क सुनिश्चित करने को तकनीकी दल फिर बैठक करेंगे ताकि तीर्थयात्रा गुरु नानक की 550वीं जयंती पर शुरू हो सके।

पहली बार पाकिस्तान की ओर से वीजा मुक्त सुविधा

ऐसा पहली बार है जब 1947 में आजादी मिलने के बाद पाकिस्तान भारतीय सिख तीर्थयात्रियों को करतारपुर साहिब में गुरुद्वारे तक वीजा मुक्त आवागमन की सुविधा देगा। करतारपुर साहिब पाकिस्तान-भारत सीमा से चार किलोमीटर दूर नरोवाल में एक छोटा सा नगर है। यहां गुरु नानक ने अपने जीवन के अंतिम 18 वर्ष बिताए थे।

दोनों देशों को पूरा करना है अपनी तरफ का निर्माण कार्य

दोनों देशों के बीच परस्पर समझौते के मुताबिक पाकिस्तान भारतीय सीमा से करतारपुर में गुरुद्वारा दरबार साहिब तक गलियारे का निर्माण करेगा जबकि भारत गुरदासपुर में डेरा बाबा नानक से सीमा तक गलियारे के दूसरे भाग का निर्माण करेगा।

जापान के खिलाफ प्रदर्शन

जापान द्वारा नए व्यापार प्रतिबंध लगाए जाने के विरोध में शनिवार को दक्षिण कोरिया की राजधानी सियोल में हजारों लोगों ने हाथों में प्लेकार्ड लेकर लेकर मार्च निकाला और प्रदर्शन किया। इन पर जापानी प्रधानमंत्री शिंजो एबी की निंदा की गई है। हाल ही में प्रतिबंधों को लेकर जापानी राजदूत को तलब कर उन्हें अवगत कराया गया है कि कोरिया अब जापान को मित्र देश की श्रेणी में नही रखता है। इस मामलों को लेकर दोनों के संबंधों में काफी तल्खी आई है। एपी

रूसी दखल मामले में मुलर की जांच पर खर्च हुए 223 करोड़ रुपये

वाशिंगटन, आइएएनएस : 2016 में हुए अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में रूस के दखल मामले की जांच विशेष वकील रॉबर्ट मुलर ने की थी। उनकी जांच पर 3.2 करोड़ डॉलर (करीब 223 करोड़ रुपये) खर्च हुए थे। उन्होंने गत मार्च में 448 पेज की जांच रिपोर्ट अटार्नी जनरल को सौंपी थी। मुलर ने अपनी जांच में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की चुनाव प्रचार टीम और रूस के बीच मिलीभगत का कोई सुबूत तो नहीं पाया था, लेकिन उन्हें दोषमुक्त भी नहीं करार दिया था।

शिन्हुआ न्यूज एजेंसी ने शुक्रवार को अमेरिकी न्याय विभाग के हवाले से बताया कि लगभग दो साल चली जांच के दौरान मुलर ने सीधे 1.6 करोड़ डॉलर (करीब 111 करोड़ रुपये) खर्च किए थे। बाकी उनके दफ्तर के स्टाफ पर खर्च हुआ था।

गत मार्च में अटार्नी जनरल विलियम बार ने संक्षिप्त जांच रिपोर्ट जारी की थी। इसमें बताया गया था कि मुलर की टीम में 19 वकील शामिल थे। इनकी मदद के लिए 40 एफबीआइ एजेंट, खुफिया विश्लेषक और अन्य स्टाफ को भी लगाया गया था। न्याय विभाग ने मई 2017 में रूसी दखल मामले की जांच एफबीआइ से लेकर मुलर को सौंपा था।

बड़ा मामला

चीन की चेतावनी को नजरअंदाज कर दो महीने से लोकतंत्र समर्थकों का आंदोलन जारी, चीनी सेना कार्रवाई को तैयार

हांगकांग में हार्बर बिल्डिंग से उतार फेंका चीन का झंडा

हांगकांग, एएफपी/एपी : चीन की चेतावनी को धता बताते हुए हांगकांग में लोकतंत्र समर्थक आंदोलनकारियों ने शनिवार को भी अपना प्रदर्शन जारी रखा। इस दौरान बड़ा कदम उठाते हुए आंदोलनकारियों ने प्रख्यात विक्टोरिया हार्बर पर लगा चीन का झंडा उतारकर फेंक दिया। उन्होंने एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल की ओर जाने वाले रास्ते को रोक दिया और शाम के समय टनल के जरिये होने वाला यातायात भी रोक दिया। पुलिस ने देर शाम आंदोलनकारियों पर आंसू गैस के गोले दागकर और बल प्रयोग कर रास्तों को चालू कराया। चीन की सेना ने कहा है कि जरूरत पड़ने पर वह हांगकांग में कार्रवाई के लिए तैयार है।

हांगकांग में आंदोलन की शुरुआत करीब दो महीने पहले चीन के साथ प्रत्यर्पण संधि की शुरू हुई प्रक्रिया के विरोध में हुई थी। इसके तहत हांगकांग में दर्ज हुए मुकदमे की सुनवाई चीन की अदालत में होने का प्रावधान था। हांगकांग के युवाओं ने इसे समय-समय पर होने वाले अपने आंदोलनों को कुचलने की चीनी साजिश माना। हांगकांग में चीन की प्रतिनिधि सरकार ने प्रत्यर्पण संधि की प्रक्रिया को रोक देने की घोषणा की लेकिन युवाओं का आंदोलन नहीं रुका। वह बढ़ता चला गया और अब वह चीनी अंदाज की एकदलीय सत्ता से अलग बहुदलीय लोकतंत्र की मांग कर रहा है। चीन और हांगकांग की सरकारों ने हफ्ते भर पहले आंदोलनकारियों से कड़ाई के संकेत दे दिए थे। इसी का नतीजा है कि हाल के दिनों में दर्जनों आंदोलनकारी गिरफ्तार किए गए हैं और उन पर दंगा करने जैसे संगीन अपराधों की धाराएं लगाई गई हैं। अब चीन की सेना ने कहा है कि आदेश मिलने पर वह कार्रवाई के लिए तैयार है। लेकिन आंदोलनकारी सरकार और सेना की चेतावनी से बेपरवाह है। बंदरगाह इलाके में प्रमुख मार्गों को रोकने के बाद 19 वर्षीय आंदोलनकारी युवक ने कहा, हम अब गुरिल्ला लड़ाई लड़ने को तैयार हैं। जबकि पुलिस ने बयान जारी कर कहा है कि आंदोलनकारी अब अपने गैरकानूनी कृत्य बंद करें।

हांगकांग में प्रदर्शन के दौरान पुलिस ने आंसू गैस के गोलों का इस्तेमाल किया। प्रेट्र

हांगकांग में आंदोलनकारियों के समर्थन में कर्मचारी

हांगकांग, रायटर : हांगकांग में हजारों सरकारी कर्मचारियों ने सड़क पर उतरकर लोकतंत्र समर्थक आंदोलनकारियों के प्रति समर्थन का इजहार किया। उन्होंने अधिकारियों से अनुरोध किया कि वे आंदोलनकारियों से वार्ता करके आपसी विश्वास को पुन: कायम करें जिससे हांगकांग के हालात सुधर सकें। गत दिवस पहली बार सरकारी कर्मचारियों ने सड़क पर उतरकर अपनी भावनाएं व्यक्त कीं। शहर के मध्य स्थित व्यापारिक इलाके में ये लोग एकत्रित हुए और शांतिपूर्वक जुलूस निकाला। इनमें से तमाम लोगों ने पहचान छिपाने के लिए काले कपड़े से अपने चेहरे ढंक रखे थे। सरकारी कर्मचारियों के समर्थन मिलने से उत्साहित आंदोलनकारियों ने आसपास की सड़कों पर आकर चीनी भाषा में नारे लगाए- सरकारी कर्मचारी...हमें ताकत दो। कर्मचारियों के जुलूस में शामिल 26 वर्षीय कर्मचारी कैथी ईप ने कहा, सरकार को आंदोलनकारियों की मांग पर उनसे वार्ता करनी चाहिए।

मॉस्को में सरकार विरोधी प्रदर्शन करते 300 विपक्षी गिरफ्तार

मॉस्को, एएफपी : रूस की राजधानी मॉस्को में शनिवार को आंदोलन की अनुमति के बगैर एकत्रित हुए 300 विपक्षी नेताओं और कार्यकर्ताओं को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। ये लोग सरकार की आलोचना करने वाले विपक्ष के नेता एलेक्सेई नावाल्नी के खिलाफ भ्रष्टाचार निरोधी संगठन की जांच पर विरोध जताने के लिए एकत्रित हुए थे। राजधानी के मध्य जूलूस निकाल रहे लोगों में विपक्षी दलों के कुछ वे नेता भी शामिल थे जो सितंबर में होने वाले चुनाव में शहर की संसदीय सीटों पर उम्मीदवार बन सकते हैं। सरकार विरोधी इस प्रदर्शन से निपटने के लिए प्रशासन ने बड़ी संख्या में मॉस्को के मध्य भाग में दंगा निरोधी पुलिस की तैनाती की थी। मेटल बैरियर लगाए गए थे और कई घंटे तक इंटरनेट सेवा को बंद रखा था। इलाके के कई दर्जन दुकानें और कॉफी शॉप भी बंद करा दी गई थीं। नावाल्नी समेत कई विपक्षी नेताओं और कार्यकर्ताओं को सरकार विरोधी प्रदर्शन करते हुए पुलिस ने बीते रविवार को गिरफ्तार किया था।

उत्तर कोरिया में किम की निगरानी में रॉकेट प्रक्षेपण प्रणाली का परीक्षण

सियोल, एपी : उत्तर कोरिया ने कहा है कि उनके नेता किम जोंग उन की निगरानी में एक नए 'मल्टीपल रॉकेट लांचर सिस्टम' का परीक्षण किया गया है जो दक्षिण कोरिया और अमेरिका के सैन्य ठिकानों पर हमले की क्षमता को बढ़ा सकता है। उत्तर कोरिया की आधिकारिक 'कोरियन सेंट्रल न्यूज एजेंसी' ने शनिवार को इसकी जानकारी दी।

गौरतलब है कि एक दिन पहले दक्षिण कोरिया की सेना ने कहा था कि उत्तर कोरिया ने अपने पूर्वी तट से समुद्र में बृहस्पतिवार देर रात दो बार अज्ञात प्रोजेक्टाइल (एक तरह की मिसाइल) प्रक्षेपित किए। महज एक हफ्ते में उत्तर कोरिया का यह तीसरा हथियार प्रक्षेपण है। उत्तर कोरिया ने कहा है कि किम की निगरानी में बुधवार को इसी रॉकेट प्रणाली का पहला परीक्षण किया था।विशेषज्ञों का कहना है कि अमेरिका-दक्षिण कोरिया के बीच होने वाले सैन्य अभ्यास और अमेरिका के साथ ठप पड़ी परमाणु वार्ता को लेकर उत्तर कोरिया अपनी हताशा का प्रदर्शन कर रहा है।

टी-20 ▶ पदार्पण मैच में भारतीय तेज गेंदबाज नवदीप ने झटके तीन विकेट

96 रनों के लिए भारत के पसीने छूटे

आज होगा टी-20 सीरीज का दूसरा मुकाबला

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली

भारतीय टीम को वेस्टइंडीज के खिलाफ पहले टी-20 मुकाबले को जीतने के लिए 120 गेंदों में 96 रनों का लक्ष्य मिला लेकिन उसको हासिल करने में भी विराट एंड कंपनी के पसीने छूट गए। युवाओं को लेकर अमेरिका के लॉडरहिल में उतरे कप्तान विराट कोहली की टीम अदने से लक्ष्य को 17.2 ओवर में छह विकेट के नुकसान पर हासिल कर सकी। तीन मैचों की सीरीज का दूसरा मुकाबला रविवार को इसी मैदान में होगा।

26 साल के युवा तेज गेंदबाज नवदीप सैनी ने अपने पहले ही अंतरराष्ट्रीय मैच में शानदार गेंदबाजी करते हुए तीन विकेट झटके जिसके कारण वेस्टइंडीज की टीम 20 ओवर में नौ विकेट पर 95 रन ही बना सकी। वेस्टइंडीज के ऑलराउंडर कीरोन पोलार्ड ने 49 गेंदों में 49 रन बनाए जिसमें उन्होंने दो चौके और चार छक्के जड़े।

खराब तैयारी : कोहली ने कहा था कि इस सीरीज से टीम ने विश्व कप टी-20 की तैयारी शुरू कर दी है लेकिन अगर इसे तैयारी कहते हैं तो फिर कप्तान साहब को इस पर सोचना होगा। वनडे विश्व कप को चोट के कारण बीच में छोड़ने वाले सलामी बल्लेबाज शिखर धवन भी इस मैच के जरिये वापसी कर रहे थे लेकिन वह एक रन बनाकर शेल्डोन कॉटरेल की गेंद पर एलबीडब्ल्यू हो गए। इसके बाद उप कप्तान रोहित शर्मा ने कुछ हाथ खोलने की कोशिश की लेकिन सुनील नरेन (2/14) ने उन्हें 24 रन के निजी स्कोर पर पोलार्ड के हाथों कैच आउट कर दिया। रोहित ने अपनी पारी में 25 गेंदों में दो चौके और दो छक्के जड़े। उनके रन भारत की सर्वश्रेष्ठ पारी रही।

विकेट लेने के बाद जश्न मनाते अपना पहला मैच खेल रहे नवदीप सैनी। एएफपी

पंत की पुरानी आदत : विश्व कप में जल्दबाजी में आउट होने के कारण आलोचना झेलने वाले रिषभ पंत (00) की आदत अभी भी नहीं सुधरी है और वह इस मैच में भी लगभग उसी तरह आउट हुए जैसे न्यूजीलैंड के खिलाफ सेमीफाइनल में हुए थे। नरेन ने उन्हें कॉटरेल के हाथों लपकवा दिया। कीमो पॉल (2/23) ने मनीष पांडे (19) की गिल्लियां बिखेर दी तो वहीं, कॉटरेल ने कप्तान कोहली (19) को आउट करके भारतीय खेमे में भी हलचल मचा दी। फिर पॉल ने क्रुणाल पांड्या (12) को बोल्ड कर दिया। हालांकि रवींद्र जडेजा (नाबाद 10) और वाशिंगटन सुंदर (नाबाद 08) ने और कोई विकेट नहीं गिरने दिया। सुंदर ने पॉल की गेंद पर छक्का छड़कर टीम को जीत दिलाई।

सैनी का शानदार स्पैल : अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण करते ही सैनी ने अपने कोटे के चार ओवर में 17 रन देकर तीन विकेट चटकाए जबकि भुवनेश्वर कुमार (2/19), वाशिंगटन सुंदर (1/18), रवींद्र जडेजा (1/13), क्रुणाल पांड्या (1/20) और खलील अहमद (1/8) ने उनका अच्छा साथ निभाया। हरियाणा के करनाल के सैनी ने अपने पहले स्पैल में दो ओवर में सात रन देकर दो विकेट चटकाए जबकि अपने दूसरे स्पैल में सिर्फ 10 रन दिए। उन्होंने अपने तीसरे ओवर में 10 रन खर्च किए जबकि आखिरी ओवर में बिना रन दिए विकेट लिया। घरेलू मैचों में दिल्ली के लिए खेलने वाले सैनी ने भारत-ए की वेस्टइंडीज-ए के खिलाफ पांच मैचों की अनाधिकृत वनडे सीरीज में भी अच्छा प्रदर्शन किया था और चार मैच खेलकर कुल आठ विकेट चटकाए थे। उन्होंने इस दौरे पर दूसरे मैच में ही 46 रन देकर पांच विकेट चटकाए थे। वह आइपीएल की टीम रॉयल चैलेंजर्स बेंगलूर के लिए भी खेलते हैं।

33 रन पर गंवाए पांच विकेट : भारतीय कप्तान विराट कोहली ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया और उनके इस फैसले को गेंदबाजों ने सही साबित किया। पावरप्ले के शुरुआती छह ओवर में भारतीय गेंदबाज हावी रहे और 33 रनों पर ही विंडीज की आधी टीम को पवेलियन भेज दिया। स्पिन गेंदबाज सुंदर ने पारी के पहले ओवर की दूसरी गेंद पर ही जॉन कैंपबेल (00) को क्रुणाल पांड्या के हाथों में डीप मिडविकेट पर कैच आउट करा दिया। इसके बाद विस्फोटक बल्लेबाज इविन लुइस (00) तेज गेंदबाज भुवनेश्वर की गेंद को उड़ाने के चक्कर में बोल्ड हो गए। 22 रन पर दो विकेट गंवाने वाली वेस्टइंडीज की टीम परेशानी यहीं खत्म नहीं हुई और पारी के पांचवें ओवर में नवदीप ने दो गेंदों में लगातार दो विकेट चटकाकर विंडीज टीम को बैकफुट पर धकेल दिया। निकोलस पूरन (20) सैनी की गेंद को सीमा रेखा के बाहर भेजना चाहते थे लेकिन गेंद उनके बल्ले का किनारा लेकर विकेटकीपर रिषभ पंत के दस्तानों में चली गई। इसके बाद शिमरोन हेटमायर (00) बोल्ड हो गए और सैनी अपने पदार्पण मैच में हैट्रिक पर आ गए।

200 रुपये की कमाई से नीली जर्सी तक का सफर

निखिल शर्मा, नई दिल्ली

लाजवाब

- 2013 तक टेनिस बॉल से क्रिकेट खेला करते थे सैनी
- सैनी के टीम इंडिया तक पहुंचने में पूर्व क्रिकेटर गंभीर का बड़ा योगदान

छह साल पहले तक हरियाणा के करनाल में जिस गेंद गेंदबाज को टेनिस बॉल से क्रिकेट खेलने पर 200 रुपये प्रति मैच मिलते थे, उसने जिंदगी में भी नहीं सोचा होगा कि यह छह साल उसके लिए करिश्माई साबित होंगे। शनिवार को नवदीप सैनी को वेस्टइंडीज के खिलाफ अमेरिका के लॉडरहिल में खेले गए टी-20 मुकाबले से नीली जर्सी पहनने का मौका मिला।

नवदीप ने पहले ही मैच में करिश्माई पदार्पण करके सालों की मेहनत और सुनहरे भविष्य की लकीर को एक धागे में पिरो दिया। नवदीप ने चार ओवर में 17 रन देकर तीन विकेट लिए। खास बात यह रही कि नवदीप ने निकोलस पूरन, शिमरोन हेटमायर और कीरोन पोलार्ड के विकेट लिए। पूरन और हेटमायर को तो उन्होंने लगातार गेंद पर पवेलियन भेजा।

आसान नहीं रहा सफर : करनाल का खिलाड़ी दिल्ली की रणजी ट्रॉफी में कैसे खेल सकता है। यह बात पूर्व भारतीय दिग्गजों बिशन सिंह बेदी और चेतन चौहान को जरा भी नहीं भाई थी। सैनी को दिल्ली की रणजी टीम तक पहुंचाने में मदद की इसी टीम के पूर्व तेज गेंदबाज सुमित नरवाल ने। करनाल प्रीमियर लीग के दौरान सैनी को उन्होंने देखा तो वह उनकी गति से काफी आकर्षित हुए। यह वो वक्त था जब सैनी को करनाल में लोकल टूर्नामेंट में खेलने के 200 रुपये प्रति मैच मिलते थे। 2013 तक सैनी लेदर की गेंद से खेले तक नहीं थे। वह सिर्फ टेनिस बॉल क्रिकेट खेलते थे।

अभ्यास सत्र में कायल हुए गंभीर : सैनी का अगला पड़ाव दिल्ली टीम का अभ्यास सत्र रहा। यहां उन्होंने पूर्व अंतरराष्ट्रीय क्रिकेटर और दिल्ली के उस वक्त के कप्तान गौतम गंभीर को गेंदबाजी से अपना कायल बना दिया। गंभीर ने उन्हें दो जोड़ी जूते दिए और नेट पर लगातार आने को कहा। यहीं से सैनी की पहचान शुरू हुई। गंभीर ने चयनकर्ताओं को सैनी को रणजी टीम में लेने का सुझाव दिया। 2013-14 सीजन में सैनी टीम में चुन भी लिए गए। यहां से उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। 2017-18 सत्र में दिल्ली को रणजी फाइनल तक पहुंचने में सैनी का अहम रोल रहा। वह आठ मैचों में 34 विकेट लेकर टीम के सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज भी रहे।

गंभीर ने आलोचकों को लिया आड़े हाथों : सैनी जब शनिवार को वेस्टइंडीज के खिलाफ दो विकेट ले चुके थे तो गंभीर ने ट्वीट किया कि शानदार, नवदीप सैनी ने पदार्पण मैच में ही दो विकेट निकाल लिए और अभी तक पूरे चार ओवर भी नहीं किए। बिशन सिंह बेदी और चेतन चौहान, यह वह खिलाड़ी है जिसकी किस्मत कुछ लोगों ने उसके मैदान पर उतरने से पहले ही लिख दी थी। इससे पहले सैनी को 2018 में अफगानिस्तान के खिलाफ हुए एकमात्र टेस्ट के लिए टीम में पहली बार चुना गया था, लेकिन उन्हें खेलने का मौका नहीं मिला था।

इंग्लैंड ने ऑस्ट्रेलिया पर कसा शिकंजा

जागरण न्यूज नेटवर्क नई दिल्ली : मेजबान इंग्लैंड टीम एजबेस्टन में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ एशेज सीरीज के पहले टेस्ट मैच के तीसरे दिन शनिवार को पहली पारी में 374 रनों पर ऑल आउट हो गई। इसी के साथ मेजबानों ने पहली पारी में 90 रनों की अहम बढ़त बना ली है। ऑस्ट्रेलिया ने अपनी पहली पारी में 284 रन बनाए थे। चायकाल तक ऑस्ट्रेलिया की टीम अपनी दूसरी पारी खेलने के लिए मैदान में नहीं उतरी थी।

इंग्लैंड की टीम ने तीसरे दिन की शुरुआत चार विकेट के नुकसान पर 267 रनों के साथ की थी और उसने लंच तक आठ विकेट के नुकसान पर 328 रन बना लिए थे। लंच के बाद टीम 46 रन बनाकर ऑलआउट हो गई। इंग्लैंड के ऑल आउट होते ही चायकाल की घोषणा कर दी गई। ऑस्ट्रेलिया के गेंदबाजों को इंग्लैंड के पुछल्ले बल्लेबाजों को आउट करना मुश्किल हो गया। स्टुअर्ट ब्रॉड और क्रिस वोक्स ने नौवें विकेट के लिए 65 रनों की साझेदारी करके इंग्लैंड की टीम को अहम बढ़त दिलाई। इंग्लैंड का नौवां विकेट ब्रॉड के रूप में 365 रनों के स्कोर पर गिरा। ब्रॉड ने 67 गेंद का सामना करते हुए 29 रन बनाए। जेम्स एंडरसन (3) के रूप में इंग्लैंड का आखिरी विकेट गिरा। वोक्स 95 गेंदों पर नाबाद 37 रनों की पारी में एक चौके और एक चौका लगाया। इससे पहले इंग्लैंड ने दिन की शुरुआत चार विकेट के नुकसान पर 267 रनों के साथ की थी। रोरी बर्न्स दूसरे दिन 125 और बेन स्टोक्स 38 रन बनाकर नाबाद लौटे थे। इंग्लैंड के लिए सलामी बल्लेबाज बर्न्स ने 312 गेंदों पर 17 चौकों की मदद से 133 रन की पारी खेली। यह बर्न्स के करियर का पहला शतक था। स्टोक्स और बर्न्स ने पांचवें विकेट के लिए 88 रनों की अहम साझेदारी की और ऑस्ट्रेलिया पर दबाव बनाना शुरू किया, लेकिन पैट कमिंस ने स्टोक्स को अर्धशतक पूरा करते ही पवेलियन भेज दिया। इसके बाद बर्न्स को लियोन ने पवेलियन भेज दिया।

बल्लेबाजी कोच बनना चाहते हैं विक्रम राठौर

क्रिकेट डायरी

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली

अंडर-19 टीम के बल्लेबाजी कोच पद के लिए ठुकराए जाने के बाद अब पूर्व राष्ट्रीय चयनकर्ता विक्रम राठौर की निगाहें सीनियर टीम के बल्लेबाजी कोच पद पर लगी हुई हैं। राठौर की अंडर-19 टीम के बल्लेबाजी कोच और राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी में बल्लेबाजी सलाहकार पद के आवेदन इसीलिए ठुकरा दिए गए थे क्योंकि यह हितों के टकराव के अंतर्गत आ रहे थे। ऐसा इसीलिए क्योंकि वह जूनियर चयन समिति पैनल के सदस्य आशीष कपूर के रिश्तेदार हैं।

बीसीसीआइ के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि राठौर को एक बोर्ड के एक वरिष्ठ सदस्य ने सलाह दी थी कि आशीष कपूर के जूनियर चयनकर्ता होने की वजह से उनकी नियुक्ति हितों के टकराव के अंतर्गत आएंगी। हालांकि उनकी सीनियर टीम के बल्लेबाजी कोच पद का आवेदन हितों के टकराव के अंतर्गत नहीं आएगा। ऐसी उम्मीद जताई जा रही है कि राठौर, संजय बांगर की जगह ले सकते हैं। उनके साथ इस पद की दौड़ में प्रवीण आमरे भी बने हुए हैं। बांगर को विश्व कप सेमीफाइनल मुकाबले में एमएस धौनी को नंबर सात पर भेजे जाने के लिए आलोचनाओं से गुजरना पड़ा था। इसके बाद उन्होंने कहा था कि वह यह फैसला लेने वाले अकेले इंसान नहीं थे। वह अभी भी भारतीय टीम के साथ बने हुए हैं क्योंकि टीम के कोच और सहायक स्टाफ का कार्यकाल वेस्टइंडीज दौरे तक बढ़ा दिया गया था। क्रिकेट सलाहकार समिति (सीएसी) में शामिल पूर्व कप्तान कपिल देव, पूर्व बल्लेबाज और कोच अंशुमन गायकवाड़ और पूर्व महिला क्रिकेट टीम की कप्तान शांता रंगास्वामी नए सहायक स्टाफ के लिए साक्षात्कार लेंगे। पूर्व ऑस्ट्रेलिया ऑलराउंडर टॉम मूडी, शास्त्री को मुख्य कोच पद के लिए कड़ी टक्कर दे सकते हैं। पूर्व भारतीय बल्लेबाज और फील्डिंग कोच रॉबिन सिंह, साथ ही पूर्व भारतीय टीम मैनेजर और मौजूदा जिंबाब्वे कोच लालचंद राजपूत भी इस दौड़ में बने हुए हैं। दक्षिण अफ्रीका के जोंटी रोड्स ने फील्डिंग कोच के लिए दावेदारी ठोंकी है।

श्रीलंका का सुरक्षा दस्ता पाकिस्तान जाएगा कराची

आइसीसी टेस्ट चैंपियनशिप के तहत अक्टूबर में श्रीलंका के पाकिस्तान दौरे की सुरक्षा जांच के लिए श्रीलंका क्रिकेट (एससीएल) का दो सदस्यीय दल बुधवार को कराची पहुंचेगा। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड के अध्यक्ष अहसान मनी ने कहा कि श्रीलंकाई दल कराची, लाहौर और इस्लामाबाद स्थित मैदानों और टीम के ठहरने के होटल का दौरा करेगा। इसके साथ ही यह दल बोर्ड, पुलिस एवं सुरक्षा अधिकारियों से मुलाकात करेगा। उन्होंने कहा कि श्रीलंकाई बोर्ड ने बताया है कि वे सुरक्षा दल की रिपोर्ट के आधार पर दो टेस्ट की सीरीज के लिए टीम को पाकिस्तान भेजने पर फैसला करेंगे। उन्होंने कहा कि श्रीलंकाई सुरक्षा दल छह अगस्त को कराची पहुंचेगा और फिर लाहौर और इस्लामाबाद जाएगा। श्रीलंकाई टीम पर मार्च 2009 में हुए आतंकवादी हमले के बाद शीर्ष टीमों ने पाकिस्तान का दौरा करना छोड़ दिया है। टेस्ट मैच के बीच में होटल से गद्दाफी स्टेडियम जाते समय श्रीलंकाई टीम की बस पर आतंकवादी हमला हुआ था। इस घटना के बाद पाकिस्तान में एक भी टेस्ट मैच नहीं खेला गया है। जिंबाब्वे, केन्या, आइसीसी विश्व एकादश, श्रीलंका और वेस्टइंडीज की टीम लाहौर और कराची में छोटे दौरे पर खेलने पहुंची हैं। मनी ने उम्मीद जताई कि श्रीलंकाई बोर्ड पाकिस्तान में अपनी टीम को टेस्ट सीरीज खेलने भेजेगा।

पीसीबी के समक्ष पेश हुए इंजमाम, सरफराज और आर्थर

लाहौर : पाकिस्तान क्रिकेट टीम के कप्तान सरफराज अहमद, मुख्य चयनकर्ता इंजमाम उल हक और कोच मिकी आर्थर टीम के पिछले चार साल के प्रदर्शन का लेखा जोखा लेकर पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) की क्रिकेट समिति के समक्ष पेश हुए। पाकिस्तानी अखबार डॉन की रिपोर्ट के मुताबिक, इंजमाम, सरफराज और आर्थर शुक्रवार को समिति की बैठक के समक्ष पेश हुए, जहां विश्व कप में टीम के प्रदर्शन पर संतुष्टि जताई।

पीसीबी के प्रबंध निदेशक वसीम खान की अध्यक्षता में गद्दाफी स्टेडियम में हुई यह बैठक करीब चार घंटे तक चली। यह पहला मौका है जब इंजमाम, सरफराज और आर्थर को समिति के समक्ष पेश होना पड़ा है। बैठक में तीनों से कई सवाल भी पूछे गए। इसके अलावा विश्व कप-2019 में टीम के प्रदर्शन को लेकर भी कई सवाल पूछे गए। समिति के सदस्यों ने नए कप्तान को लेकर भी अपने विचार व्यक्त कर दिए हैं। सूत्रों का कहना है कि सरफराज को अब तीनों प्रारूपों की कप्तानी से हटाया जा सकता है। बैठक में कोच आर्थर ने पाकिस्तान का कोच बने रहने की इच्छा जताई, लेकिन समिति के कुछ सदस्यों ने उन्हें टी-20 विश्व कप तक कोच बनाए रखने की इच्छा जताई है। पीसीबी की क्रिकेट समिति में मिसबाह उल हक, वसीम अकरम, जाकिर खान और मुद्दसर नजर शामिल थे। घरेलू क्रिकेट के निदेशक हारुन रशीद इसमें भाग नहीं ले सके। समिति अब इंजमाम, सरफराज और आर्थर के जवाबों के आधार पर पीसीबी के चेयरमैन अहसान मनी को अपनी सिफारिशें भेजेंगी।

श्रीलंका के दौरे पर पहुंची न्यूजीलैंड की क्रिकेट टीम

नई दिल्ली : न्यूजीलैंड क्रिकेट टीम श्रीलंका के खिलाफ दो टेस्ट मैचों की सीरीज खेलने शनिवार को श्रीलंका पहुंच गई। दोनों देशों के बीच 14 अगस्त से टेस्ट सीरीज शुरू होगी। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आइसीसी) ने ट्विटर पर श्रीलंका में न्यूजीलैंड टीम के स्वागत की तस्वीरें साझा कीं। 14 से 26 अगस्त तक चलने वाली सीरीज आइसीसी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप का हिस्सा होगी। इस सीरीज में दोनों ही देशों के खिलाड़ी जर्सी पर नाम और नंबर के साथ खेलेंगे। न्यूजीलैंड क्रिकेट बोर्ड ने सीरीज के लिए 29 जुलाई को ही टीम की घोषणा की थी, जिसमें बायें हाथ के स्पिनर एजाज पटेल और ऑफ स्पिनर विल समरविले को जगह मिली है। न्यूजीलैंड की टीम हाल ही में समाप्त हुए विश्व कप में उप विजेता रही थी।

सेमीफाइनल में पहुंचे स्टेफानोस सितसिपास

स्टेफानोस ने एटीपी वाशिंगटन ओपन के क्वार्टर फाइनल में बेनो पेयरे को दी शिकस्त

टेनिस डायरी

वाशिंगटन, रायटर : शीर्ष वरीयता प्राप्त टेनिस खिलाड़ी स्टेफानोस सितसिपास ने एटीपी वाशिंगटन ओपन के क्वार्टर फाइनल में फ्रांस के बेनो पेयरे को शिकस्त देकर सेमीफाइनल में प्रवेश किया। सितसिपास ने फ्रांस के 10वें वरीय बेनो को सीधे सेटों में 7-5, 6-0 से पराजित किया। अब वह सेमीफाइनल में ऑस्ट्रेलिया के निक किर्गियोस से भिड़ेंगे जिन्होंने स्लोवाकिया के नारबर्ट गांबोस को सीधे सेटों में 6-3, 6-3 से मात दी।

वहीं, रूस के तीसरे वरीय डेनिल मेदवेदेव ने भी क्रोएशिया के छठे वरीय और 2014 अमेरिकी ओपन चैंपियन मारिन सिलिक को 6-4, 7-6 से हराकर सेमीफाइनल में प्रवेश किया। अपने पांचवें एटीपी खिताब की कोशिश में जुटे मेदवेदेव का सामना जर्मनी के पीटर गोजोवजिक से होगा जिन्होंने ब्रिटेन के 13वें वरीय कायल एडमंड को 6-3, 4-6, 6-3 से शिकस्त दी। महिलाओं के मुकाबलों में अमेरिकी खिलाड़ी 17 वर्षीय कैटी मैकनेली ने क्वार्टर फाइनल में सीह सू-वेई को 6-4, 6-3 से हराकर सेमीफाइनल में जगह बनाई। उन्होंने पहली बार किसी डब्ल्यूटीए टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में जगह बनाई है। उनका अगले दौर में सामना कैमिला जिओजी से होगा जो जारिना दियास को 6-3, 6-2 से हराकर अंतिम-चार के मुकाबले में पहुंची हैं। अन्य क्वार्टर फाइनल मुकाबलों में अन्ना कलिंस्काया तीन सेट तक चले मुकाबले में क्रिस्टिना मलादेनोविक को 6-4, 4-6, 6-2 से हराकर अंतिम-चार में पहुंचने में सफल रहीं। अब उनकी भिड़ंत जेसिका पेगूला से होगी। जेसिका सीधे सेटों में लॉरेन डेविस को 6-2, 7-6 से मात देकर अंतिम-चार में पहुंची।

स्टेफानोस सितसिपास। एपी

शरण-एलरिक की जोड़ी बाहर

लास काबोस (मेक्सिको), प्रेट्र : भारत के दिविज शरण और उनके जोड़ीदार जोनाथन एलरिक की जोड़ी लास काबोस टूर्नामेंट के पुरुष डबल्स के सेमीफाइनल में हारकर बाहर हो गई। शरण और एलरिक की जोड़ी डोमिनिक इग्लोट और ऑस्टिन क्राजिचेक से एक घंटा 20 मिनट में 2-6, 6-3, 3-10 से हार गई। दोनों ने चुनौती देने की पूरी कोशिश की लेकिन मैच जीतने में नाकामयाब रहे।

चोट के बाद सिंगल्स में जल्द वापसी कर सकते हैं एंडी मरे

वाशिंगटन, एएफपी : तीन बार के ग्रैंडस्लैम चैंपियन एंडी मरे कूल्हे की चोट के कारण ऑस्ट्रेलियाई ओपन के बाद सिंगल्स मुकाबले में नहीं खेले हैं, लेकिन वह डबल्स में अपने भाई के साथ खेल रहे हैं। 2016 रियो ओलंपिक के बाद मरे और उनके भाई जेमी पहली बार डबल्स टूर्नामेंट में खेले थे जहां क्वार्टर फाइनल में न्यूजीलैंड के माइकल वीनस और दक्षिण अफ्रीका के रावेन क्लासेन ने 6-7, 7-6, 10-7 से शिकस्त दी थी। मरे ने इस सप्ताह सिंगल्स में अभ्यास किया था और उनके जल्द ही सिंगल्स में खेलने की संभावना भी है। उन्होंने कहा कि मुझे अच्छा लग रहा है। अभ्यास अच्छा रहा। शारीरिक रूप से मुझे कोई दिक्कत नहीं है। मैं अच्छी तरह से आगे बढ़ रहा हूं। अगले 10 दिन तक और अभ्यास करूंगा और फिर देखेंगे क्या होता है।

हैमिल्टन अंतिम अभ्यास रेस में शीर्ष पर रहे

बुडापेस्ट, रायटर : फॉर्मूला वन विश्व चैंपियन लुइस हैमिल्टन ने शनिवार को हंगरियन ग्रां प्रि में अंतिम अभ्यास रेस में सबसे तेज समय निकालकर शीर्ष पर रहे। वहीं, रेड बुल के मैक्स वर्स्टापेन उनसे मामूली अंतर से दूसरे स्थान पर रहे। हैमिल्टन और वर्स्टापेन के बीच +0.013 सेकेंड के समय का अंतर रहा। हैमिल्टन का समय 1:16.084 था जबकि वर्स्टापेन 1:16.097 का समय निकाल पाए। शीर्ष तीन स्थानों पर अलग-अलग टीमों के ड्राइवर रहे। तीसरे स्थान पर फरारी के सबेस्टियन वीटल रहे जिन्होंने 1:16.166 का समय निकाला। वह वर्स्टापेन से +0.082 सेकेंड से पीछे रह गए।

लाहिड़ी ने विनधाम चैंपियनशिप में कट हासिल किया

ग्रींसबोरो, प्रेट्र : भारतीय गोल्फर अनिर्बान लाहिड़ी ने विनधाम चैंपियनशिप के दूसरे दौर में बोगी रहित तीन अंडर 67 का कार्ड खेलकर संयुक्त 38वें स्थान के साथ कट हासिल किया। लाहिड़ी ने पहले दौर में बोगी रहित तीन अंडर 67 का कार्ड खेला था जिससे उनका कुल स्कोर छह 134 का है।

अभी हमारे लिए सब खत्म नहीं हुआ : सनिल

आरपीएसजी मैवरिक्स कोलकाता के लिए अब तक अल्टीमेट टेबल टेनिस लीग में वैसा सत्र नहीं गया जैसा वह चाहते थे, लेकिन उनके स्टार पैडलर सनिल शेट्टी को लगता है कि वह अभी भी वापसी कर सकते हैं। **निखिल शर्मा ने सनिल शेट्टी** से टीम की आगे की तैयारियों पर विस्तार से बातचीत की। पेश हैं प्रमुख अंश–

● यू मुंबा के खिलाफ आप एक मुश्किल मैच हारे। आपको क्या लगता है कहां गलती हुई?

- हमने उनके खिलाफ अच्छी शुरुआत की थी। हम 4-2 की बढ़त बनाने में कामयाब रहे थे, लेकिन बाद में हम पिछड़ते चले गए। मिक्स्ड डबल्स में हम पहले सेट में बढ़त पर थे, लेकिन मानव ने अच्छा खेल दिखाया और हम 4-8 से पीछे हो गए। ऐसा ही यह प्रारूप है। कु ही पलों में सब बदल सकता है।

● यू मुंबा की जीत में मानव के रोल पर क्या कहेंगे?

- मुझे लगता है कि उसने बेहद ही खूबसूरती से दबाव को झेला। वह टीम को पांच अंक दिलाने में कामयाब रहा, जो अंत में महत्वपूर्ण साबित हुए। हमारे सिंगल्स मैच में मैंने बढ़त बनाई लेकिन बाद में पिछड़ गया। उसने अपने आक्रामक अंदाज को लगातार बदला।

● अब तक आप अपनी टीम के प्रदर्शन को किस तरह आंकते हैं?

- कुल मिलाकर देखा जाए तो सभी अच्छा खेल रहे हैं। मुझे नहीं लगता कि कोई खिलाड़ी खराब खेला। हमारे लिए परिस्थिति बस कुछ पल में बदलती चली गई। अब हम आने वाले मैचों में सकारात्मक रहने की कोशिश कर रहे हैं। हम अपने अगले दो मैचों में वापसी करने की पूरी कोशिश करेंगे।

● आप दूसरों के मुकाबले ज्यादा गोल्डन अंक बनाने में कामयाब रहे। इसे आप किस तरह देखते हैं?

- अभी तक, मैंने चार गोल्डन अंक का सामना किया है और सभी चार को मैंने जीता है। जब मैं उनका सामना करता हूं तो बचाव के लिए नहीं जाता है। मुझे लगता है कि विरोधी मेरी कोशिश से दबाव महसूस करते हैं। मानव के खिलाफ मुकाबले में भी गोल्डन अंक आया। उसके चेहरे पर मुस्कुराहट थी। वह यह बात जानता था कि मैं अभी तक एक भी गोल्डन अंक नहीं हारा हूं।

● आपका अगला मुकाबला दिल्ली से है। आप अपने अगले विरोधी को किस तरह से देखते हैं?

-वे बहुत मजबूत टीम है और बेहद संतुलित टीम है। हमें अपने डबल्स संयोजन पर काम करने की जरूरत है। चुनौती साथियान और बर्ने के खिलाफ मैच हैं। हम इसके लिए आक्रामक रूख अपनाना चाहते हैं। इस मैच में अच्छे परिणाम लाने के लिए सकारात्मक रहना बेहद जरूरी है।

फुटबॉल डायरी

लियोन मेसी पर लगा तीन महीने का प्रतिबंध

दक्षिण अमेरिकी फुटबॉल संस्था ने लगाया प्रतिबंध, अर्जेंटीनी स्टार ने कोपा अमेरिका में भ्रष्टाचार के लगाए थे आरोप

असुनसियोन, एएफपी : अर्जेंटीना के दिग्गज लियोन मेसी पर दक्षिण अमेरिकी फुटबॉल संस्था कोनमेबोल ने तीन महीने का प्रतिबंध लगा दिया। मेसी ने हाल ही में ब्राजील में खत्म हुए कोपा अमेरिका के आयोजकों पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाए थे जिसकी वजह से उन पर यह प्रतिबंध लगाया गया। साथ ही उन पर 50000 डॉलर (करीब 35 लाख रुपये) का जुर्माना भी लगाया गया।

कोपा अमेरिका कप में तीसरे स्थान के मुकाबले के दौरान अर्जेंटीनी स्ट्राइकर मेसी को रेड कार्ड दिखाकर बाहर किया गया था जिसके बाद मेसी का गुस्सा फूट पड़ा था। पिछले महीने तीसरे स्थान के मुकाबले में अर्जेंटीना 2-1 से विजयी रहा था। 32 वर्षीय मेसी कोपा अमेरिका में दो मौके पर रेफरी के फैसले से नाराज थे। मेजबान ब्राजील के खिलाफ सेमीफाइनल में दो बार अर्जेंटीना द्वारा पेनाल्टी किक की मांग को नकार दिया गया था जहां मेसी की टीम को 0-2 से शिकस्त मिली थी। तब मेसी ने कहा था कि इन दिनों कोनमेबोल में बहुत रहनुमाई की जा रही है। इसके बाद मेसी को चिली के खिलाफ अगले मुकाबले में रेड कार्ड दिखाया गया तो वह अपने गुस्से पर काबू नहीं पा सके। तब मेसी ने कहा था कि भ्रष्टाचार और रेफरी मिलकर लोगों को फुटबॉल का मजा नहीं लेने दे रहे हैं और वे इसे बर्बाद कर रहे हैं। तीसरे स्थान के मुकाबले के पहले हाफ में चिली के कप्तान गैरी मेडल से मेसी की भिड़ंत हो गई थी जिसके बाद उन्हें रेड कार्ड दिखाया गया था लेकिन टीवी रिप्ले में मेसी की ज्यादा गलती नहीं दिखी थी। हालांकि बाद में बार्सिलोना के स्ट्राइकर मेसी ने अपने बयान के लिए माफी भी मांगी थी।

अपनी वेबसाइट पर जारी किए बयान में कोनमेबोल ने यह स्पष्ट नहीं किया है कि उसने मेसी को क्यों सजा दी है लेकिन उसमें अनुशासनात्मक अधिनियम 7.1 और 7.2 का जिक्र है। ऐसी धारा आक्रामक, अपमानजनक व्यवहार या फिर किसी प्रकार के अपमानजनक विरोध करने पर लगाई जाती है। उन पर लगी एक अन्य धारा के मुताबिक न्यायिक निकायों के निर्णयों, निर्देशों या निर्देशों का उल्लंघन से जुड़ी हुई है। मेसी और अर्जेंटीना इस फैसले के खिलाफ अपील कर सकते हैं। हालांकि मेसी और अर्जेंटीना फुटबॉल संघ दोनों की ओर से इस पर कोई टिप्पणी नहीं की गई है। इस निलंबन के चलते मेसी इस साल चार दोस्ताना मुकाबले नहीं खेल पाएंगे। चिली के खिलाफ मिले रेड कार्ड के चलते मेसी मार्च में दक्षिण अमेरिकी विश्व कप क्वालीफायर के पहले मुकाबले में नहीं खेल पाएंगे।

नेमार क्लब में बने रहें : एमबापे

बीजिंग, आइएएनएस : फ्रेंच क्लब पेरिस सेंट जर्मेन (पीएसजी) के स्ट्राइकर कायलियन एमबापे ने कहा है कि वह चाहते हैं कि नेमार क्लब में बने रहें जिनके फ्रेंच चैंपियन से रुखसत होने की चर्चा चल रही है। एमबापे ने कहा कि मैं चाहता हूं कि नेमार हमारे साथ बने रहें। मैं उनकी इज्जत और सम्मान करता हूं और यही वजह है कि वह जानते हैं कि मैं परिस्थितियों के बारे में कितना जानता हूं। साथ ही एमबापे ने पीएसजी के साथी खिलाड़ी एडिंसन कवानी के क्लब छोड़ने के सवाल पर कहा कि वह कवानी जैसे महान खिलाड़ी के साथ खेलते रहना चाहते हैं। ब्राजील के पूर्व खिलाड़ी एडमिल्सन ने कहा है कि नेमार मेसी की जगह ले सकते हैं।

गॉर्डियोला ने सिटी से लिवरपूल पर शुरुआती हमला बोलने को कहा

लंदन, एएफपी : इंग्लिश प्रीमियर लीग (ईपीएल) के शुरू होने से पहले रविवार को मैनचेस्टर सिटी की टीम कम्यूनिटी शील्ड के मुकाबले में अपने चिर प्रतिद्वंद्वी लिवरपूल से भिड़ने जा रही है। सिटी के मैनेजर पेप गॉर्डियोला ने अपने खिलाड़ियों से इस मुकाबले के जरिये शुरुआती हमला बोलने को कहा है। पिछले सत्र में सिटी ने मैनेजर जुर्जेन क्लोप की लिवरपूल टीम को एक अंक से पछाड़कर ईपीएल का खिताब हासिल किया था। ऐसे में अब वेंबले में जब ये दोनों टीमें मैदान पर उतरेंगी तो उनकी नई प्रतिद्वंद्विता की शुरुआत होगी। कम्यूनिटी शील्ड का मुकाबला ईपीएल और एफए कप की विजेता टीमों के बीच खेला जाता है लेकिन ये दोनों ईपीएल सिटी ने अपने नाम किए थे। ऐसे में ईपीएल की उपविजेता लिवरपूल को सिटी से लोहा लेने का मौका मिला है।

बार्सिलोना के स्ट्राइकर लियोन मेसी। फाइल फोटो

राजीव सेतु ने पहले दिन ही बनाई बढ़त

अनिल भारद्वाज, चेन्नई : भारत के युवा स्टार बाइक राइडर राजीव सेतु ने यहां राष्ट्रीय चैंपियनशिप के पहले दिन जोरदार प्रदर्शन से आगाज किया। शनिवार को मद्रास मोटर स्पोर्ट्स क्लब रेस ट्रैक पर शुरू हुई दो दिवसीय एमआरएफ एमएमएससी इंडियन नेशनल मोटरसाइकिल रेसिंग चैंपियनशिप में होंडा रेसिंग इंडिया टीम के राइडर राजीव ने बढ़त बनाई।

राजीव ने तीन किलोमीटर लंबे ट्रैक पर छह राउंड मुकाबले को पूरा करने के लिए सबसे कम समय लिया और अपनी टीम को खिताब की दौड़ में सबसे आगे रखा। सेतु ने 12:01:973 मिनट का समय लिया। 165 प्रो स्ट्रोक रेस बाइक पर होंडा टीम के इस राइडर ने अपने प्रतिद्वंदियों को पीछे छोड़ते हुए ट्रैक पर गजब की रेस दिखाई। अब रविवार को होने वाले मुकाबलों में राजीव पर सभी की निगाहें लगी हैं। सेतु के साथ मुकाबले मे दूसरे स्थान पर टीवीएस टीम और चेन्नई के जगन कुमार बने हुए हैं जिन्होंने 12:02:073 मिनट के समय लिया। तीसरे स्थान पर होंडा टीम के सरथ कुमार 12:02:833 मिनट समय के साथ बने हैं। रविवार को तीनों के बीच जोरदार रेस होगी।

2000 विमान जल्द ही भारत के पास होंगे। नागरी विमानन मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने लोकसभा में बताया कि अभी देश में 600 विमान हैं। देश का एविएशन सेक्टर दुनिया में तीसरे नंबर पर है।

तकनीक ▶ राष्ट्रीय हिमालयी अध्ययन मिशन के तहत हिमाचल के मंडी स्थित आइआइटी के वैज्ञानिकों को मिली बड़ी सफलता

अब हवा की नमी से भी पैदा हो सकेगा पानी

रविवार विशेष

आठ घंटे में वायुमंडल से छह लीटर पानी हो सकेगा एकत्र

बृजेश तिवारी, अल्मोड़ा

जल संकट के आसन्न खतरे को टालने की दिशा में वैज्ञानिक तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। मंडी स्थित भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी) ने हवा की नमी से पानी तैयार करने की तकनीकी विकसित की है। इसके तहत सोलर हाइड्रोपैनल के माध्यम से आठ से दस घंटों में करीब छह लीटर पानी एकत्र किया जा सकता है। वैज्ञानिकों का दावा है कि यह प्रणाली घटते भूजल के कारण पैदा हो रही पेयजल समस्या को दूर करने में भी मील का पत्थर साबित हो सकती है।

राष्ट्रीय हिमालयी अध्ययन मिशन के तहत हिमाचल प्रदेश के मंडी स्थित आइआइटी के वैज्ञानिक पिछले एक साल से हवा की नमी से पानी तैयार करने की योजना पर काम कर रहे हैं। वैज्ञानिकों ने ऐसा हाइड्रोपैनल और सोलर सिस्टम ईजाद किया है, जिससे आसानी से हवा की नमी से पानी पैदा किया जा सकता है। इस हाइड्रोपैनल में एक छोटी बैटरी लगाई गई है, जो सूर्योदय के साथ ही सक्रिय हो जाती है। इसमें लगा एक विशेष प्रकार का पदार्थ वायुमंडल की हवा की नमी अवशोषित करता है, जो संघनित होकर पानी में तब्दील हो जाती है। अशुद्धियों को दूर कर इसे पीने योग्य बनाया जाएगा। वैज्ञानिकों का कहना है कि हिमालयी क्षेत्रों के लिए खनिज-लवण युक्त कम लागत वाली त्वरित जल शोधन प्रणाली और सौर ऊर्जा से स्वच्छ पानी प्राप्त करने प्रणाली को विकसित करने के लक्ष्य पर यहां काम किया जा रहा है। ताकि भविष्य में पेयजल की बढ़ रही समस्या पर अंकुश पाया जा सके।

दुनिया की एक तिहाई आबादी स्वच्छ जल से महरूम : राष्ट्रीय हिमालयी अध्ययन मिशन से प्राप्त आंकड़ों पर गौर करें तो पारिस्थितिकीय परिवर्तनों के कारण जल संसाधनों से संपन्न भारत में भी स्वच्छ व शुद्ध पेयजल बड़ी समस्या बन रहा है। देश की करीब 25 प्रतिशत आबादी दूषित पानी पीने को मजबूर है। 11 राज्यों में मानकों के अनुसार पीने का पानी उपलब्ध नहीं है।

उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर, असम, बिहार, झारखंड, राजस्थान, तेलंगाना जैसे राज्यों में जल शोधन की क्षमता क्षीण होने के कारण जल जनित रोगों की संख्या बढ़ी है। उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, असम, उड़ीसा, मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में हर वर्ष डायरिया से बड़ी संख्या में मौतें होती हैं। 2013 से 2017 के बीच अकेले उत्तर प्रदेश में 22 प्रतिशत से अधिक मौतें डायरिया के कारण कारण हुई हैं।

जागरण विशेष की अन्य खबरें पढ़ें
www.jagran.com/topics/jagran-special

अशुद्धियों को दूर कर इसे पीने योग्य बनाया जाएगा

घटते भूजल के कारण पैदा हो रही समस्या से मिलेगी राहत

आइआइटी मंडी के वैज्ञानिकों ने तैयार किया हाइड्रोपैनल। जागरण

इं. किरीट कुमार। जागरण

आइआइटी मंडी की इस परियोजना में हाइड्रोपैनल और सोलर सिस्टम के माध्यम से पानी एकत्र करना उल्लेखनीय उपलब्धि है। लघु अनुदान की यह परियोजना पेयजल संकट से निपटने के लिए वैज्ञानिक और तकनीकी अनुसंधानों की श्रेणी में एक श्रृंखला है। आने वाले समय में बाजार में इस तरह की मशीनों को मांग को बढ़ावा मिलेगा।

इं. किरीट कुमार, नोडल अधिकारी, राष्ट्रीय हिमालयी अध्ययन मिशन, अल्मोड़ा

डॉ. भरत एस राजपुरोहित। जागरण

हमारा संस्थान आम आदमी की क्षमता और पहुंच वाली इस प्रकार की तकनीकों के विकास पर जोर दे रहा है। स्वच्छ और शुद्ध पेयजल हर व्यक्ति का बुनियादी अधिकार है। जलशोधन को लेकर आज भी बाजारों में उपलब्ध महंगे फिल्टरों तक सभी की पहुंच नहीं है। नई तकनीक भविष्य के लिए मील का पत्थर साबित होगी।

डॉ. भरत एस राजपुरोहित, परियोजना वैज्ञानिक, आइआइटी मंडी (हिमाचल प्रदेश)

सुधर रही गंगा की सेहत

मुकेश चंद्र श्रीवास्तव, वाराणसी

प्रदूषण से कराह रही गंगा की सेहत अब सुधरने लगी है। बढ़ी जागरूकता व स्वच्छता अभियान के चलते गंगा में आने वाले मल से पैदा हुए जीवाणुओं की मात्रा में भी कमी आई है। यह तस्वीर प्रयागराज और काशी से लिए गए गंगाजल के नमूनों की जांच के बाद साफ हुई है।

जांच के अनुसार फरवरी में प्रयागराज में 2.67 लाख फीकल कोलीफार्म (मलजनित बैक्टीरिया) थे। जून में कोलीफार्म की मात्रा घटकर 9300 हो गई है। काशी में यह आंकड़ा फरवरी में जहां 1.64 लाख था वहीं जून में फीकल कोलीफार्म की मात्रा 14 हजार पर आ गई है। साथ ही डीओ (घुलित ऑक्सीजन) व बीओडी (जैविक ऑक्सीजन) की स्थिति भी बेहतर बताई जा रही है। केंद्रीय जल आयोग की रिपोर्ट ने थोड़ी उम्मीद की किरण दिखाई है। वैसे मानक के अनुसार 500 एमपीएन/100 एमएल ही मात्रा होनी चाहिए। ऐसे में और सुधार की जरूरत है।

हमारी लैब में जल की गुणवत्ता की जांच लगातार हो रही है। फीकल कोलीफार्म एवं टोटल कोलीफार्म की जांच की रिपोर्ट से उम्मीद की किरण जगी है। गंगाजल की गुणवत्ता में सुधार आया है। साथ ही पीएच, डीओ व बीओडी की स्थिति भी ठीक हुई है। अगर गंगा में सीवर में बहाव रोकने के साथ ही जनसंख्या पर भी नियंत्रण किया जाए तो स्थिति में और सुधार हो सकता है।

– रवींद्र सिंह, अधीक्षण अभियंता, जल विज्ञानीय प्रेक्षण परिमंडल, वाराणसी (केंद्रीय जल आयोग)

यहां से लिए गए नमूने

300 मीटर डाउन मालवीय ब्रिज, वाराणसी से

500 मीटर डाउन संगम के समीप छतनाग प्रयागराज से

तीन दिन लिए जाते नमूने

प्रत्येक माह की एक, 11 और 21 तारीख को गंगा जल के नमूने लिए जाते हैं। इनका परीक्षण केंद्रीय जल आयोग की मध्य गंगा जल गुणवत्ता प्रयोगशाला, वाराणसी में किया जाता है।

फीकल कोलीफार्म

माह	काशी	प्रयागराज
फरवरी	1.64 लाख	2.67 लाख
मार्च	66 हजार	52 हजार
अप्रैल	37 हजार	40 हजार
मई	20 हजार	19 हजार
जून	14 हजार	9300

टोटल कोलीफार्म

माह	काशी	प्रयागराज
फरवरी	3.50 लाख	4.44 लाख
मार्च	1.06 लाख	1.11 लाख
अप्रैल	59 हजार	57 हजार
मई	33 हजार	34 हजार
जून	23 हजार	17 हजार

ऐसा दानवीर कहीं भी नहीं देखा

आशीष गुप्ता/सुनील शर्मा, दाड़लाघाट (सोलन)

दानवीर कर्ण के किस्से तो सबने सुने होंगे, लेकिन इस दौर में भी ऐसे लोग हैं, जो सर्वस्व दान करने से पीछे नहीं रहना चाहते। सोलन में भी एक ऐसा दानवीर है, जिसने पहले नेत्रदान का संकल्प लिया, फिर देहदान का और अब गोशाला के लिए जमीन दान कर दी। यह व्यक्ति हैं अर्की उपमंडल की सेवड़ा चंडी पंचायत के सेरा कनेता गांव के मस्त राम। पेशे से किशती चलाते हैं, लेकिन उनकी सोच दूसरों को प्रेरणा देने वाली है। मस्त राम का परिवार है, लेकिन गोसेवा के लिए वह 12 साल से अकेले रह रहे हैं। उनकी पत्नी बच्चों के साथ रहती है। आज के दौर में जहां जमीन के टुकड़े के लिए लोग दूसरे का खून बहाने से पीछे नहीं हटते, वहीं मस्तराम उम्मीद की तरह चमके है।

गोशाला के लिए दी जमीन : मस्त राम बताते है कि शिमला जिले के केयारी के निकट सतलुज नदी बहती है, जो अर्की के सीमा क्षेत्र पर मौजूद है। इस क्षेत्र में कई वर्षों से किशती चलाते थे। यहां अकसर लोग गायों को छोड़ देते थे, जो डूबकर मर जाती थीं। डूबती गायों को देखा नहीं जाता था और अकेले कुछ कर भी नहीं पाता। मैंने कई लोगों से कहा लेकिन कुछ

अर्की के मस्तराम अपने आई डोनेट और देह दान का कार्ड दिखाते हुए। जागरण

सुधार नहीं हुआ। कसम खाई कि अब गायों पर अत्याचार बंद करवाऊंगा। मैंने गायों को एकत्र करना शुरू किया। अब मेरे पास सड़कों और नदी से निकाली 35 गायें हैं। मदद के लिए पंचायत से लेकर विभिन्न संस्थाओं के सामने हाथ फैलाए, लेकिन किसी ने साथ नहीं दिया। दाड़लाघाट की राधे कृष्ण गोशाला को जमीन का चार बिस्वे (करीब 1500 वर्ग फीट) का हिस्सा दिया है ताकि यहां गोशाला बन सके। गोशाला बनने पर गायों को सड़कों पर भटकना नहीं पड़ेगा और न ही नदी में डूबेंगी।

पढ़ाई के लिए शरीर दान : देहदान का संकल्प ले चुके मस्तराम कहते हैं कि वह नहीं चाहते कि मरने के बाद उनका शरीर जलाया जाए। इसलिए देहदान का संकल्प लिया ताकि प्रशिक्षु चिकित्सक उनके शरीर पर शोध कर सकें। इसके लिए शिमला स्थित इंदिरा गांधी मेडिकल कॉलेज व अस्पताल (आइजीएमसी) में अर्जी दी थी जिसे स्वीकार कर लिया गया है। उन्होंने नेत्रदान का संकल्प भी लिया है ताकि मरने के बाद किसी की जिंदगी रोशन कर सकें। अब तक उनकी आंखें बिलकुल ठीक हैं। वह कहते है, मैं पूरी कोशिश करूंगा कि मैं जब तक जीवित रहूं, मेरा शरीर एक दम सुरक्षित रहे।'

देश को कुछ लौटाना है... : 'मैं चाहता हूं जिस देश ने हमें इतना सुंदर जीवन दिया है, उसे भी लौटाकर कुछ दिया जा सके। मरने के बाद शरीर किसी के काम आए, यह राख होने से अच्छा है। मैं अपना जीवन गोशाला में लगा रहा हूं और मरणोपरांत भी मेरा शरीर जलाया नहीं जाएगा बल्कि उसे मानव सेवा के लिए समर्पित करने का फैसला किया है।

मुफलिसी की दीवार तोड़ बनाया समृद्धि का रास्ता

अनूप श्रीवास्तव, हरदोई

भूमिहीन और कम जोत वाली महिलाओं ने बदली परिवार की तकदीर

11 महिलाओं ने स्वयं सहायता समूह बनाकर कर दिया कायापलट

उप्र के हरदोई स्थित अहिरारी गांव के भूमिहीन और कम जोत वाले परिवार की महिलाओं ने मुफलिसी की दीवार तोड़कर समृद्धि का रास्ता बना डाला। आज ये ट्रैक्टर-ट्रॉली, रोटावेटर कल्टीवेटर, हैरो, स्प्रेयर, थ्रेशर, पंपसेट आदि की मालकिन हैं। ये महिलाएं लोगों को गरीबी उन्मूलन की राह दिखा रही हैं।

गरीबी उन्मूलन

सीमांत किसान या मजदूर पतियों के दम पर गृहस्थी की गाड़ी चलानी मुश्किल हुई तो 2011 में इन महिलाओं ने घर की चौखट लांघी। 11 महिलाओं ने मिलकर श्रीबालाजी स्वयं सहायता समूह बनाया। छोटी-छोटी बचत की आदत डाली। समूह को राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के साथ जोड़ा। समूह से कर्ज लेकर महिलाओं ने न सिर्फ अपने बल्कि पति के लिए भी रोजगार के साधन सृजित किए।

समूह के जरिए डलिया, मोढ़ा आदि का उत्पादन कर बाजार तक पहुंचाया। माली हालत सुदृढ़ होने लगी तो पति को खेती के लिए प्रोत्साहित किया। घर के पुरुषों ने समूह के सुझाव पर खेत बंटाई पर लेकर मिश्रित खेती की तरकीब अपनाई। फिर क्या था समृद्धि के रास्ते खुलते गए।

अपने ट्रैक्टर के साथ खड़ी स्वयं सहायता समूह की सदस्य महिलाएं। (फाइल फोटो)

गांव में सक्रिय आदर्श आजीविका संगठन की सचिव पूनम देवी और अध्यक्ष राजरानी भूमिहीन हैं। दोनों कभी कच्चे मकान में रहती थीं। पूनम पक्का घर बनवा चुकी हैं तो वहीं राजरानी का मकान बन रहा है। पूनम ने पति के लिए दुकान खुलवाई है तो राजरानी ने पति को टाटा मैजिक खरीदकर दिया है। दोनों बताती हैं कि अब संगठन के पास ट्रैक्टर-ट्रॉली से लेकर विभिन्न कृषि यंत्र हैं। समूह का हर सदस्य इसका मालिक है। जरूरत पर उन्हें मुफ्त में इसे इस्तेमाल के लिए दिया जाता है। दूसरों को ये यंत्र किराए पर दिए जाते हैं। 11 महिलाओं के इस प्रयास ने आज गांव के 150 परिवारों की दशा बदल दी है। गरीबी से घिरे घरों को परेशानी से उबारने के लिए शुरू हुआ इनका संघर्ष अब कामयाबी की कहानी बन चुका है।

अच्छे बदलाव की यहां तमाम कहानियां : अहिरारी गांव में पूनम और राजरानी की तरह बदलाव की तमाम कहानियां हैं। समूह का सहयोग पाकर संतोषी ने दूसरे का खेत बंटाई पर लेकर मिश्रित खेती कर खुशहाली पाई। अब वह छप्पर से निकलकर अपने पक्के मकान में रहती हैं। समूह ने रास्ता दिखाया तो भूमिहीन शोभा देवी पशुपालन कर अब पति के लिए जनरल स्टोर खुलवा चुकी हैं। अब घर पर हर सुख-सुविधा है। गांव में लगभग हर घर में कामयाबी की ऐसी कहानियां हैं।

सरोकार की अन्य खबरें पढ़ें
www.jagran.com/topics/positive-news

रेलवे स्टेशन की खाली बोतलों से बनेगी टी-शर्ट व टोपियां

मनोज द्विवेदी, मीरजापुर : वह दिन दूर नहीं जब रेलवे स्टेशन पर फेंकी जाने वाली खाली बोतलों को रीसाइकिल कर टीशर्ट व टोपियां बनाई जाएंगी। रेलवे इसका परीक्षण कर चुका है। स्वच्छ भारत मिशन को नई उंचाई देने वाले इस प्रयास को काफी सराहा जा रहा है क्योंकि पानी की खाली बोतलें भी अब काम आएंगी और रेलवे को भी फायदा पहुंचेगा। उप्र स्थित मीरजापुर रेलवे स्टेशन पर भी जल्द यह मशीन लगाई जाने वाली है।

रेलवे सूत्रों के अनुसार पूरे देश में प्रतिदिन रेलवे में 16 लाख बोतलें इस्तेमाल की जाती हैं। प्रति स्टेशन पर औसतन 300 बोतल पानी का उपयोग रेलयात्री करते हैं और बोतलों को यूं ही स्टेशन व डस्टबिन में फेंक देते हैं। यह योजना देश के 2250 स्टेशनों पर लागू की जाएगी जिससे रोजाना पचास हजार से ज्यादा टीशर्ट व टोपियां बनाई जा सकेंगी। इस योजना के तहत खाली बोतलों को क्रश कर रीसाइकिल कर टीशर्ट और टोपियां बनेंगी। रेलवे पीआरओ अमित मालवीय ने बताया कि इस योजना से कई फायदे होंगे। इसके लिए रेलवे स्टेशन पर ऐसे डस्टबिन लगाए जाएंगे जहां पर यात्री इन बोतलों को क्रश करके डाल सकते हैं। योजना के अनुसार प्रति बोतल पांच रुपये का कैशबैक भी यात्रियों को दिया जा सकता है।

किशोर कुमार को लुभाता था ननिहाल भागलपुर का जर्दालु आम

विकास पाण्डेय, भागलपुर

प्रख्यात गायक किशोर कुमार का रविवार को जन्मदिन है। ननिहाल भागलपुर आने, यहां के जर्दालु आम और पान को पसंद करने से जुड़े कई किस्से लोगों के जेहन में हैं। आदमपुर स्थित राज परिवार की राजबाटी उनके नाना की हवेली थी। दादामुनि के नाम से प्रसिद्ध प्रख्यात अभिनेता अशोक कुमार किशोर कुमार के बड़े भाई थे। उनकी शादी भी भागलपुर में ही हुई थी। अशोक कुमार के चचेरे साले सोमनाथ बनर्जी बताते हैं कि किशोर अक्सर अपने मामा शानू बनर्जी के घर आते थे तो आम खाने सुल्तानगंज स्थित बगीचा जाया करते थे। नाव लेकर गंगा पार जाना और मस्ती करना, बहुत सी यादें हैं।

भोजन के बाद पान की पत्ती : तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय की पूर्व परीक्षा नियंत्रक व स्नातकोत्तर मनोविज्ञान विभाग की पूर्व प्रोफेसर डॉ. रत्ना मुखर्जी ने किशोर कुमार की कई यादों को समेट रखा है। वे उनकी भतीजी हैं। वे बताती हैं, चाचा कोई नशा नहीं करते थे, लेकिन रोज खाना खाने के बाद पान की एक पत्ती अवश्य चबाया करते थे। वे कहते थे कि पान की पत्ती चबाना गले के लिए फायदेमंद है।

आखिरी बार 1970 में आए थे ननिहाल : वे फैंस एसोसिएशन के आग्रह पर आखिरी बार 1970 में अपनी ननिहाल भागलपुर आए थे। उस समय सैंडिस कंपाउंड में संगीत समारोह में उनकी एक झलक पाने के लिए लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी थी। प्रो. रत्ना बताती हैं कि वे अपनी मां का बहुत ख्याल रखते थे। जब 1970 में उन्हें भागलपुर आना था तो मां की देखभाल के लिए प्रो. रत्ना और उनकी मां को मुंबई बुला लिया था। उस दौरान उन्हें किशोर चाचा के बारे में बहुत सी बातें जानने का मौका मिला था। अशोक कुमार ने परिणीता फिल्म बनाई तो उसमें डॉ. रत्ना ने नायिका के बचपन का किरदार अदा किया था।

जयंती आज

- कभी आम खाने ट्रेन से जाते थे सुल्तानगंज, पान के भी रहे शौकीन, लोगों के जहन में हैं पार्श्व गायक से जुड़े कई किस्से
- आदमपुर स्थित राज परिवार की राजबाटी उनके नाना की हवेली थी

भागलपुरी सिल्क के थे शौकीन

किशोर कुमार भागलपुरी सिल्क के कुर्ते के शौकीन थे। उनके लिए यहां से मलवरी कपड़ा भेजा जाता था। डॉ. रत्ना की मां 1970 में भी कपड़े लेकर मुंबई गई थीं। अब उनकी यादें भर शेष हैं, पर गीतों में वे आज भी हम सबके बीच हैं।

जब रोक दिया था पूजा करने से

डॉ. रत्ना बताती हैं कि एक बार वे पुरी के जगन्नाथ मंदिर गए तो पुजारियों ने उन्हें मुस्लिम महिला से शादी करने के कारण अंदर जाने से मना कर दिया। इस पर किशोर चाचा ने काफी समझाया, फिर भी बात नहीं बनी तो सौ-सौ के दो नोट निकाल हंसते हुए बोले कि इस बार मोटी दक्षिणा देने की तमन्ना लेकर आए थे। लगता है कि यूं ही लौटना पड़ेगा। लौटने की बात सुनते ही उन लोगों ने आपस में सलाह की और उन्हें पूजा करने की इजाजत दे दी।

बिहार के रिमांड होम में बजेगी शहनाई, गाए जाएंगे मंगल गीत

भुवनेश्वर वात्स्यायन, पटना : सब कुछ योजना के अनुसार हुआ तो पटना सिटी के गायघाट स्थित रिमांड होम में शहनाई बजेगी। मंगल गीत गाए जाएंगे। यहां लंबे समय से रहने वाली युवतियों की शादी कराने के लिए समाज कल्याण विभाग ने विशेष तैयारी शुरू कर दी हैं। इस रिमांड होम में शादी योग्य लड़कियों की संख्या 50 से अधिक है।

समाज कल्याण विभाग के संबंधित अधिकारी का कहना है कि रिमांड होम में रह रहीं युवतियों के लिए शादी का प्रस्ताव आता रहता है। विभाग इस मामले में सतर्कता बरतता है। ऐसे ही किसी के साथ रिमांड होम में रह रही युवतियों को नहीं भेजा जा सकता। इस बात को केंद्र में रख यह तय किया गया है जिन युवतियों के हाथ पीले कराने की योजना है, उनकी तस्वीर के साथ अलग-अलग माध्यमों में विज्ञापन दिया जाएगा। संभव है कि एक युवती के लिए एक से अधिक प्रस्ताव आएं। उन्हें चुनकर प्रस्ताव को आगे बढ़ाया जाएगा। इसमें युवतियों की राय भी ली जाएगी। शादी के लिए चुने गए युवाओं की पुलिस जांच भी कराने की योजना है, ताकि वर के दावे की पुष्टि हो सके। इससे उसके घर-परिवार और अन्य रिकार्ड उपलब्ध हो जाएंगे। लड़कियों की शादी सार्वजनिक रूप से सामूहिक विवाह के स्वरूप में होगी।

स्वच्छता मुहिम को नई ऊंचाई, कचरा प्रबंधन में एमबीए

अरविंद पांडेय, नई दिल्ली

कचरा प्रबंधन में भी युवा अब अपना भविष्य संवार सकेंगे। देश के अलग- अलग राज्यों के डेढ़ दर्जन से ज्यादा उच्च शिक्षण संस्थानों ने इस दिशा में कदम बढ़ाया है। जहां छात्रों को अब कचरा प्रबंधन और सामाजिक उद्यमिता में एमबीए (मास्टर इन बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन) की डिग्री मिलेगी। फिलहाल इनमें से ज्यादातर संस्थानों ने इसी साल से ही इस कोर्स को शुरू कर दिया है। उच्च शिक्षण संस्थानों के इस कदम को स्वच्छता अभियान को एक नई ऊंचाई पर ले जाने के सरकार के प्रयासों से जोड़कर देखा जा रहा है।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय से जुड़ी संस्था अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआइसीटीई) ने देश के अलग-अलग राज्यों के 15 उच्च शिक्षण संस्थानों को अब तक एमबीए के इस खास कोर्स को शुरू करने की अनुमति दी है। इनमें से करीब आठ संस्थानों ने इस साल से इस कोर्स को शुरू कर दिया गया है, जबकि बाकी संस्थान अगले सत्र से इसे शुरू करेगी। देश में शहरों से लेकर गांव-गांव तक जिस तरह से कचरे का ढेर बढ़ रहा है, उससे निपटने के लिए इस कोर्स को शुरू किया गया है। इसके पीछे जो मकसद है वह इस क्षेत्र को रोजगार परक बनाना है। मौजूदा समय में देश में कचरा प्रबंधन के क्षेत्र में कई विदेशी एजेंसियां ही काम कर रही है। बावजूद इसके कचरा प्रबंधन जिस तरीके से प्रत्येक बड़े और छोटे शहरों के लिए एक समस्या का रूप ले रहा है, ऐसे में आने वाले दिनों में इस क्षेत्र में बड़ी संख्या में प्रशिक्षित लोगों की जरूरत होगी। रोजगार की इन्हीं संभावनाओं को देखते हुए यह कदम उठाए गए है।

यह होगी पढ़ाई : कचरा प्रबंधन को लेकर शुरू किए गए एमबीए के इस खास कोर्स में फिलहाल जो विषय शामिल किए गए है, उनमें कचरे की री-साइकिलिंग, इसे नष्ट करने से जुड़े शोध, मार्केटिंग के साथ इस पूरे काम-काज को उद्योग का स्वरूप देने जैसे विषय शामिल किए गए है। इस कोर्स को तैयार करने के विदेशी संस्थानों की भी मदद ली गई है।

सात राज्यों के इन 15 संस्थानों में शुरू होगा कोर्स

- मौलाना अबुल कलाम आजाद तकनीकी विवि, कोलकाता, पश्चिम बंगाल
- ड्रीम इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलाजी, टकनपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल
- टेक्नो इंडिया विवि, पश्चिम बंगाल
- शिव नडार विवि, ग्रेटर नोएडा, यूपी
- मनिपाल विवि, जयपुर, राजस्थान
- जीडी गोयनका यूनिवर्सिटी, सोहना, हरियाणा
- मानव रचना इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ रिसर्च एंड स्टडीज, फरीदाबाद, हरियाणा
- ओपी जिंदल विवि, सोनीपत, हरियाणा
- एमिटी विश्वविद्यालय, नोयडा, उत्तर प्रदेश
- चितकारा विश्वविद्यालय, हिमाचल प्रदेश
- दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, उत्तर प्रदेश
- दि नार्थ कैप विवि, गुरुग्राम, हरियाणा
- सत्यभामा विश्वविद्यालय, चेन्नई, तमिलनाडु
- पीएसजी कालेज आफ टेक्नोलॉजी, तमिलनाडु
- एनआईटी वारंगल, आंध्र प्रदेश

विकट स्थिति

अब भी बारिश नहीं हुई तो सूख जाएंगे वन्य प्राणी आश्रयणी के जलाशय, हजारों पशु-पक्षियों के सामने आश्रय की आ सकती है समस्या

झारखंड के दलमा में सूखे की गाज, संकट में गजराज

मनोज सिंह, जमशेदपुर

हाथियों के लिए संरक्षित दलमा वाइल्ड लाइफ सैंक्चुरी पर भी बारिश नहीं होने का असर दिखाई दे रहा है। जिन तालाबों में हाथियों के झुंड नैसर्गिक तौर पर स्नान कर दिनभर लोट-पोट करते रहते थे, वे अब सूखने की कगार पर पहुंच चुके हैं। हाथियों को स्नान करने के लिए कम से कम 10-12 फीट पानी चाहिए, लेकिन दलमा के कुछ जलाशयों को छोड़ दिया जाए तो अधिकांश में 5-7 फीट पानी ही रह गया है।

दलमा हाथियों का नैसर्गिक आवास है। यही कारण है कि गर्मी के दिनों में बाहर गया हाथियों का झुंड बरसात में दलमा लौट आता है। इसकी मुख्य वजह यहां पर्याप्त मात्रा में मनपसंद भोजन व पानी का मिलना है, लेकिन दलमा रेंज के पदाधिकारी अब चिंतित नजर आ रहे हैं। उनका मानना है कि अगस्त में जब तलाब व जलाशय नहीं भरे तब गर्मी के दिनों में तो एक बूंद भी पानी नहीं बचेगा। हालांकि दलमा में बनाए गए चेकडैम में पानी है, जहां छोटे-बड़े पशु-पक्षी अपना डेरा जमा चुके हैं। आज दलमा के जलाशयों की स्थिति ऐसी हो गई है

हाथियों को स्नान करने के लिए कम से कम 10-12 फीट पानी चाहिए। (फाइल फोटो)

कि जहां इन दिनों में लबालब पानी रहता था, वहां मात्र 5-7 फीट पानी बचा है। वह भी तालाब के बीचों बीच। दलमा के रेंजर दिनेश चंद्रा ने बताया कि स्थिति तो खराब है, लेकिन अभी भी जोरदार बारिश हो जाए तो दलमा के सभी जलाशय पानी से भर जाएंगे। पानी कम होने के कारण दलमा के हाथी अब केवल तीन जलाशय कासजोबी, घुसी झरना तथा महाजल के पास ही अपना समय बिता रहे हैं।

दलमा के जलाशयों में पानी की स्थिति

तालाब	अगस्त में	वर्तमान में
बड़का बांध	20 फीट	7 फीट
कासजोबी	15 फीट	10 फीट
महाजल	10 फीट	6 फीट
नीचला बांध	16 फीट	8 फीट
मैंझला बांध	14 फीट	5 फीट
छोटका बांध	10 फीट	5 फीट
बिजली घाटी	15 फीट	9 फीट
रंगाजल	8 फीट	5 फीट
घुसीझरना	15 फीट	12 फीट
स्नान घाटी	13 फीट	7 फीट
माकड़ जल	8 फीट	5 फीट

जुलाई में कम बारिश होने के कारण दलमा के जलाशय भरे नहीं हैं। यदि बारिश नहीं होगी तो महाजल में कराए गए डीप बोरिंग से जलाशयों में पानी भरा जाएगा।

– सीपी सिन्हा, डीएफओ, दलमा वन्य प्राणी आश्रयणी।

मौसम विशेष

पूर्वी राजस्थान में अधिकांश स्थानों पर मध्यम से भारी वर्षा होगी। पंजाब, हरियाणा और दिल्ली में बादलों के साथ मौसम गर्म रहेगा। कुछ स्थानों पर गरज के साथ वर्षा होगी। जम्मू-कश्मीर और हिमाचल प्रदेश में छाये हुए बादलों के साथ मौसम गर्म रहेगा। कुछ स्थानों पर गरज के साथ वर्षा होगी।

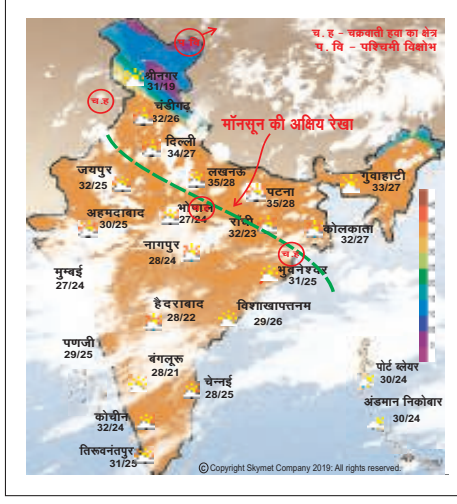

भारत के मुख्य शहरों का तापमान:

शहर		शहर	
मुम्बई	28/25/ध	अहमदाबाद	34/26/ध
कोलकाता	34/26/ध	बड़ौदा	31/25/ध
चेन्नई	36/27/ध	नागपुर	27/25/ध
हैदराबाद	30/23/ध	इन्दौर	31/24/ध
बंगलूरु	27/22/ध	रांची	31/26/ध
त्रिवेन्द्रम	29/25/ध	पटना	38/29/ध
गुवाहाटी	34/26/ध	जमशेदपुर	32/28/ध
गंगटोक	18/09/ध	पुणे	24/22/ध

राष्ट्रीय संस्करण

दैनिक जागरण

आजकल

रविवार 4 अगस्त 2019

14

www.jagran.com

पहले परमाणु अनुसंधान रिएक्टर अप्सरा की शुरुआत हुई

1956 में आज ही मुंबई के ट्रांबे स्थित देश के पहले परमाणु रिएक्टर अप्सरा की शुरुआत हुई थी। इसकी अधिकतम क्षमता दो मेगावाट है। ब्रिटेन की मदद से इसे तैयार किया गया था। यह एशिया का सबसे पुराना परमाणु रिएक्टर है।

भारत सरकार अधिनियम,1935 को स्वीकृति मिली

1935 में आज ही भारत सरकार अधिनियम, 1935 को ब्रिटेन के राजघराने की स्वीकृति मिली थी। इस अधिनियम के तहत भारत को एक संघ बनाने और भारतीयों को केंद्रीय विधायिका के दोनों सदनों में अधिक प्रतिनिधित्व प्रदान किए जाने का प्रावधान था।

हर दिल अजीज थे हरफनमौला किशोर कुमार

महान गायक और अभिनेता किशोर कुमार का जन्म 1929 में आज ही मध्य प्रदेश के खंडवा में हुआ था। उनका असली नाम आभास कुमार गांगुली था। 1946 में आई फिल्म शिकारी से बतौर अभिनेता करियर की शुरुआत की। लेकिन संगीत प्रेम के चलते वह गायिकी करने लगे। छह सौ से भी अधिक हिंदी फिल्मों के लिए गाने गाये। मेरे सपनों की रानी कब आएगी तू, मेरे नैना सावन भादो, ए मेरे दिल के चैन जैसे एक से बढ़कर एक गाने गाये। आठ बार फिल्म फेयर अवार्ड से सम्मानित हुए। 13 अक्टूबर, 1987 को देहांत हो गया।

इधर-उधर की

बगीचे में बिछाया रेलवे ट्रैक

लंदन, एजेंसी: ब्रिटेन की राजधानी लंदन के लिंकनशायर शहर में रहने वाले 70 वर्षीय स्टीव बैट्स की रेलगाड़ी के प्रति इतनी दीवानगी है कि उन्होंने 330 यार्ड में फैले अपने पूरे बगीचे में रेलवे ट्रैक बिछा दिया। इसके लिए बैट्स ने 30 हजार यूरो यानी 21 लाख रुपये खर्च किए हैं। रेलवे ट्रैक बिछाने में उन्हें तीन साल लगे। बैट्स की पत्नी बेरी भी ट्रेन की फैन हैं। उनके पास नॉरमन नामक भाप का इंजन भी है जो बीस यात्रियों को खींचने की क्षमता रखता है। इंजन के पीछे लोगों के बैठने के लिए छोटी-छोटी बोगियां भी लगी हैं। चूंकि उनका बगीचा इतने बड़े क्षेत्रफल में फैला है, लिहाजा उनको बागबानी में दिक्कत आती थी। लेकिन रेलवे ट्रैक बिछने के बाद वह इंजन पर बैठकर आसानी से बागबानी करते हैं और घर आने वाले मेहमानों को भी इसकी सैर कराते हैं।

दौड़ने से ज्यादा दर्दभरा है लगातार खड़े रहना

न्यूयॉर्क टाइम्स से

- दर्द को कम या ज्यादा कर सकता है खड़े रहने का तरीका
- घंटेभर चलकर उतनी थकान नहीं होती, जितनी उतनी ही देर खड़े रहने से होती है
- खास तरह से खड़े होने से घुटनों के नीचे अधिक जोर पड़ता है

दौड़ने से मांसपेशियों में हलचल होने से रहता है लचीलापन। प्रतीकात्मक

वाशिंगटन : अगर आपको सजा के तौर पर दौड़ने, चलने या खड़े रहने में से कुछ चुनना हो, तो निश्चित रूप से आप खड़े रहना चुनते हैं। स्कूल के दिनों में अक्सर खड़े रहने की सजा सबको मिली भी होगी। खड़े रहने की सजा इसलिए आसान लगती है, क्योंकि दौड़ लगाने में आमतौर पर पैरों को ज्यादा दर्द होता है। हम में से हर किसी का मानना यही है कि खड़े रहने की तुलना में दौड़ना ज्यादा मुश्किल काम है। हालांकि ऐसा है नहीं। आपको कई ऐसे लोग मिल जाएंगे, जिन्हें लगातार खड़े रहना ज्यादा तकलीफदेह लगता है। संभव है कि आपको भी कभी ऐसा लगा हो कि लगातार घंटेभर चलकर आपको उतनी थकान नहीं हुई, जितनी थकान उतनी ही देर तक खड़े रहने से हो गई।

आपने कभी सोचा है कि ऐसा होता क्यों है? क्यों आखिर आराम से खड़े रहना भी भारी लगने लगता है? शोधकर्ताओं ने इसका जवाब भी खोज निकाला है। उनका मानना है कि तकलीफ इस बात निर्भर करती है कि आप किस तरह से खड़े होते हैं। पैरों के डॉक्टर डायने कोशीमुन ने कहा, 'घंटों खड़े रहने से थकावट ना हो इसके लिए हमें खड़े रहने के तरीके पर ध्यान देना होगा। कुछ खास तरह से खड़े होने से घुटनों के नीचे पिछले हिस्से पर अधिक जोर पड़ता है।' यूनिवर्सिटी ऑफ वाशिंगटन की शोधकर्ता विक्टोरिया लेयॉन का कहना है कि एक ही स्थिति में खड़े रहने से मांसपेशियों में खिंचाव होने लगता है। वहीं, दौड़ते या चलते वक्त मांसपेशियों में हलचल होती रहती है, जिससे उनका लचीलापन बरकरार रहता है। यही वजह है कि एक घंटे टहलने या दौड़ने की अपेक्षा उतनी ही देर लगातार खड़े रहने से जल्दी थकावट हो जाती है।

पीठ दर्द की भी हो सकती है शिकायत

हमें कई बार किसी स्टेडियम, म्यूजिक कांसर्ट या एयरपोर्ट सेक्योरिटी चेक के लिए घंटों खड़ा रहना पड़ता था। इससे पैर, तलवे और पीठ में दर्द की शिकायत हो सकती है। यूनिवर्सिटी ऑफ अरकंसास के शोधकर्ताओं ने कहा कि यह पीठ दर्द थोड़ी देर में ही ठीक हो जाता है, इसलिए लोग इस पर ध्यान नहीं देते हैं। हालांकि, अगर अक्सर आपको इस तरह की स्थिति का सामना करना पड़ता हो, जहां लगातार खड़ा रहना जरूरी हो, तो इसकी अनदेखी नहीं करें। लंबे समय तक ऐसा होने से पीठ दर्द की समस्या आगे गंभीर रूप भी ले सकती है। अगर आप स्थिति को बदल नहीं सकते हैं, तो कोशिश करें कि लगातार एक ही तरह से खड़े ना हों। मांसपेशियों को जकड़न से बचाने के लिए जहां तक संभव हो, पैरों को हिलाते-डुलाते रहें।

अनुमान से ज्यादा उलझी हुई है हमारी आकाश गंगा

स्पेक्ट्रम

वैज्ञानिकों ने बनाया है 3डी मैप। प्रतीकात्मक

लंदन, प्रेट्र : वैज्ञानिकों ने बताया है कि हमारी आकाश गंगा के आकार के बारे में अभी तक के हमारे अनुमान गलत हैं। हमारी आकाश गंगा समतल नहीं है। यह बहुत ही उलझी हुई है। आकाश गंगा का बड़े पैमाने पर 3डी मानचित्र विकसित करने वाले शोधकर्ताओं ने यह दावा किया है।

शोधकर्ताओं ने हमारी आकाशगंगा में बिखरे और नियमित अंतराल पर चमकने वाले तारों की सूर्य से दूरी मापकर पहले से कहीं बड़े पैमाने पर आकाशगंगा का चार्ट बनाया है। साइंस जर्नल में प्रकाशित नया 3डी मानचित्र सितारों के बीच हमारी जगह को एक व्यापक दृश्य प्रदान करता है। मानचित्र में आकाश गंगा की संरचना अंग्रेजी के अक्षर एस जैसी प्रतीत होती है। पोलैंड में वारसॉ यूनिवर्सिटी के पर्जमेक म्राज ने बताया कि वर्तमान में हमारी अकाशगंगा की जिस घूर्णन आकृति को हम जानते हैं। वह दूसरी आकाशगंगाओं के आधार पर और ज्यादातर अप्रत्यक्ष मापों के आधार पर बनाई गई है। उन सीमित अवलोकनों द्वारा तैयार किया गया मानचित्र अधूरा है।

इस तरह बनाया 3डी मानचित्र: शोधकर्ताओं ने आकाशगंगा का 3डी मानचित्र बनाने के लिए आकाशगंगा में चमकते सितारों की सूर्य से दूरी मापी। वारसॉ यूनिवर्सिटी के डोरोटा स्कोब्रान ने बताया कि तारों की चमक की विविधताओं का उपयोग करते हुए इसकी दूरी को सटीक रूप से मापा जा सकता है। शोधकर्ताओं ने इस तरह से 2400 तारों की दूरी को मापा। अधिकांश तारों की पहचान ऑप्टिकल ग्रेविटेशनल लेंसिंग एक्सपेरिमेंट (ओजीएलई) से की गई। यह एक पोलिश खगोलीय परियोजना है।

शोध अनुसंधान

ईसीजी जांच के नतीजे को बेहतर बनाएगी एआइ तकनीक

आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआइ) की मदद से ईसीजी के नतीजे को और बेहतर करने में मदद मिल सकती है। हालिया शोध के मुताबिक, एआइ सिस्टम की सहायता से ईसीजी के दौरान दिल की धड़कनों में किसी भी तरह की अनियमितता का पता लगाना संभव होगा। यहां तक कि अगर जांच के दौरान धड़कन सामान्य होगी, तब भी एआइ तकनीक यह पता लगाने में सक्षम होगी कि जांच से पहले धड़कन में किसी तरह की अनियमितता थी या नहीं। ऐसा होने से इलाज की प्रक्रिया को और बेहतर करना संभव होगा। शोधकर्ता पॉल फ्रीडमैन ने कहा, 'जब भी कोई स्ट्रोक का मरीज आता है, हमारे लिए यह जानना जरूरी होता है कि उसके दिल की धड़कन में पहले कोई अनियमितता (आट्रियल फिब्रिलेशन) ना हो। इससे इलाज पर असर पड़ता है। सही दवा चुनने में भी इसकी भूमिका रहती है।' 36,280 मरीजों पर किए गए परीक्षण में इसके नतीजे 90 प्रतिशत तक सटीक पाए गए। - आइएएनएस

आइसीयू के बुजुर्ग मरीजों के लिए लाभकारी है फ्लू वैक्सीन

गंभीर रूप से बीमार उम्रदराज मरीजों के लिए फ्लू का टीका फायदेमंद हो सकता है। वैज्ञानिकों का कहना है कि यह टीका ऐसे मरीजों में जान जाने के खतरे को कम करता है। खून का थक्का बनने और दिमाग में रक्तस्राव की आशंका भी कम हो जाती है। अध्ययन में करीब 90,000 ऐसे मरीजों को शामिल किया गया, जो आइसीयू में रह चुके थे। मरीजों की उम्र 65 वर्ष से अधिक थी और उन पर 11 साल तक अध्ययन किया गया। वैज्ञानिकों ने बताया कि आइसीयू से बाहर आने के बाद भी चार में से एक मरीज की मौत सालभर के भीतर हो जाती है। कुछ को अन्य परेशानियों का सामना करना पड़ता है। वहीं, जिन बुजुर्गों ने फ्लू का टीका लगवाया था, उनमें जान जाने या अन्य परेशानियों का खतरा अपेक्षाकृत कम देखा गया। - एएनआइ

3डी प्रिंटेड हृदय बनाने के करीब इंसान

बड़ी खोज ▶ वैज्ञानिकों द्वारा विकसित नई तकनीक से दूर होंगी बायोप्रिंटिंग क्षेत्र की समस्याएं

प्रिंट किए गए 3डी अंग असली अंगों जैसे ही करेंगे काम

अंग प्रत्यारोपण के क्षेत्र में बहुत मददगार साबित होगी यह तकनीक। प्रतीकात्मक

वाशिंगटन, प्रेट्र : वैज्ञानिकों ने एक ऐसी तकनीक विकसित की है जिससे जल्द ही मानवीय हृदय का 3डी प्रिंट तैयार किया जा सकेगा। इस तरीके से कोई भी व्यक्ति कोलेजन प्रोटीन से ऊतक (टिश्यू) का 3डी बायोप्रिंट बना सकता है। यह प्रोटीन मानवीय शरीर की संरचना के लिए अहम है।

वैज्ञानिकों का कहना है कि फ्रीफॉर्म रिवर्सिबल इंबेडिंग ऑफ सस्पेंडेड हाइड्रोजेल (फ्रेश) तकनीक से बायोप्रिंटिंग के क्षेत्र में आने वाली कई चुनौतियां समाप्त हो जाएंगी। इस तकनीक से प्रिंट किए गए 3डी अंग असली अंगों जैसे ही होंगे। यह तकनीक अंग प्रत्यारोपण के क्षेत्र में बहुत मददगार साबित हो सकती है।

दरअसल, मानव शरीर का प्रत्येक अंग विशेष कोशिकाओं से बना होता है जो कोलेजन, एंजाइम और ग्लाइकोप्रोटीन के नेटवर्क से बने एक्सट्रा मैट्रिक्स (ईसीएम) से जुड़ा होता है। ईसीएम कोशिका की संरचना को मजबूती देते हैं जिससे वह अपने सामान्य कार्य कर पाते हैं। अब तक मौजूद तकनीक से ईसीएम की सघन संरचना का प्रतिरूप बनाना मुश्किल था।

अमेरिका के कानेज मेलोन यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर एडम फेइनबर्ग ने कहा, 'अंगों के 3डी प्रिंटिंग के क्षेत्र में कोलेजन सबसे वांछित जैविक पदार्थ है, क्योंकि यह व्यक्ति के शरीर में मौजूद प्रत्येक ऊतक का निर्माण कर सकता है।' हालांकि, तरल रूप में होने के कारण इससे 3डी प्रिंट बनाने में मुश्किल आती है। फ्रेश से यह समस्या खत्म हो सकती है। इसमें ऊतक बनाने के लिए प्रत्येक सतह में कोलेजन के साथ विशेष प्रकार के जेल (गाढ़ा पदार्थ) का इस्तेमाल किया जाएगा।

जेल के कारण कोलेजन अपनी जगह पर जम जाएगा। प्रिंट तैयार होने पर कमरे या शरीर के तापमान के बराबर गर्मी देकर जेल को पिघलाया जा सकता है। इससे प्रिंट को भी कोई नुकसान नहीं होगा।

शोधकर्ताओं ने इस तकनीक को बॉयोप्रिंटिंग के क्षेत्र के लिए रोमांचक बताया है। उनके अनुसार इसकी मदद से बड़े पैमाने पर मानवीय अंगों का 3डी प्रिंट बनाया जाएगा। भविष्य में कोलेजन के अलावा फाइब्रिन, एलगिनाइट और हाइलुरोनिक एसिड का भी 3डी बॉयोप्रिंटिंग में इस्तेमाल हो सकेगा।

पहले बनाया जा चुका है छोटा 3 डी प्रिंटेड हृदय

इजरायल के वैज्ञानिक 3डी प्रिंटेड हृदय बनाने में सफलता प्राप्त कर चुके हैं, लेकिन अभी उसे वास्तविकता में नहीं लाया जा सका है। उनका दावा है कि यह हृदय पूरी तरह से काम करता है। हालांकि, तेल अवीव यूनिवर्सिटी द्वारा विकसित किया 3डी प्रिंटेड हृदय आकार में बहुत ही छोटा है। इस हृदय का आकार खरगोश के दिल के आकार के जितना है।

वाट्सएप, इंस्टाग्राम के साथ अपना नाम जोड़ेगा फेसबुक

सैन फ्रांसिस्को, आइएएनएस: सोशल मीडिया यूजर्स के लिए अलग-अलग प्लेटफार्म को एकीकृत करने की दिशा में पहला कदम उठाते हुए फेसबुक इंस्टाग्राम और वाट्सएप से अपना नाम जोड़ रहा है।

इंस्टाग्राम अब जल्द ही 'इंस्टाग्राम फ्राम फेसबुक' और वाट्सएप 'वाट्सएप फ्राम फेसबुक' में तब्दील हो जाएगा। नए शीर्षक के साथ दोनों एप अब एप्पल के एप स्टोर और गूगल प्ले स्टोर में दिखाई देंगे। कंपनी के एक प्रवक्ता ने जानकारी देते हुए बताया कि दोनों एप के कर्मचारियों को इन बदलावों के बारे में हाल ही में सूचित किया गया था। हालांकि, अभी अमेरिकी संघीय व्यापार आयोग (एफटीसी) यह जांच कर रहा है कि फेसबुक ने वाट्सएप और इंस्टाग्राम का अधिग्रहण कैसे किया। द वॉल स्ट्रीट जर्नल के अनुसार, एफटीसी यह पता लगाने की कोशिश कर रही है कि क्या फेसबुक को अपने संभावित प्रतिद्वंद्वियों के बारे में पहले ही आभास हो गया था।

संदिग्ध लेनेदेन की पहचान करने में मदद करेगा गूगल पे

नई दिल्ली, आइएएनएस: किसी भी संदिग्ध लेनदेन की पहचान करने में अब गूगल-पे अपने यूजर की मदद करेगा। गूगल पे यूजर्स को किसी भी तरह के झांसे से बचाने के लिए एसएमएस भेजने के साथ ही एप नोटिफिकेशन भी भेजेगा। गूगल पे द्वारा किसी भी धोखाधड़ी से बचने के लिए यूजर्स को उनके प्रत्येक अनुरोध के समय हर बार सूचित किया जाएगा कि किस अनुरोध को स्वीकार करने से उनके बैंक खातों से पैसे कट सकते हैं। गूगल-पे के उत्पाद प्रबंधन निदेशक अंबरीश केंगे ने एक ब्लॉग पोस्ट में कहा 'हमें इस बात पर ध्यान है कि गूगल-पे पर यूजर्स हमें अपनी संपत्ति सौंप रहे हैं। हम इस जिम्मेदारी के प्रति सचेत हैं।' पिछले दो वर्षों में लाखों भारतीयों के लिए यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआइ) के माध्यम से तत्काल बैंक-टू-बैंक स्थानांतरण भुगतान का पसंदीदा तरीका बन गया है। इसी के साथ काफी यूजर पहली बार डिजिटल भुगतान को अपना रहे हैं।

क्षेत्र को ठंडा करने के लिए फेंकते हैं पानी

जापान के जिंजा शॉपिंग डिस्ट्रिक्ट में क्षेत्र के ठंडा करने के लिए सड़क पर पानी फेंकते स्थानीय निवासी। यह यहां के उत्सव का हिस्सा है। इसमें पारंपरिक वस्त्र पहनकर नागरिक शामिल होते हैं। जिं का शाब्दिक अर्थ चांदी है और जा का अर्थ गिल्ड है। 1662 में सरकार ने अपनी चांदी की टकसाल क्षेत्र में स्थानांतरित की थी। इसे टोक्यो का सबसे ग्लैमरस शॉपिंग जिला कहा जाता है। एएफपी

यूरोप में तापमान बढ़ने से तेजी से पिघल रही बर्फ

अब रिकॉर्ड तोड़ गर्मी की लहर ग्रीनलैंड के ऊपर है। इससे यहां बर्फ की चादर के पिघलने में तेजी आई है। ग्रीनलैंड, दुनिया का सबसे बड़ा द्वीप है। इसकी 82 फीसद सतह बर्फ में ढकी हुई है। डेनिश मौसम विज्ञान संस्थान के साथ जलवायु वैज्ञानिक रुथ मोत्रम ने कहा, ग्रीनलैंड की बर्फ पिघलने के संकेत दे रहा है, वह प्रतिदिन बढ़ रहा है, और बुधवार को इस साल के लिए रिकॉर्ड 56 .5 फीसद रहा। गुरुवार को ठंड बढ़ने से बर्फ गलने की गति धीमी रही। रायटर

स्क्रीन शॉट

दोस्ती के मायने : फ्रेंडशिप डे पर बोले सितारे...

अच्छा दोस्त होने का गर्व है मुझे : रितिक रोशन

'ईमानदारी से कहूं तो मैं खुद पर एक अच्छा दोस्त होने के नाते गर्व करता हूं। एक बार अगर मैं दोस्त बनाने की ठान लेता हूं तो उस रिश्ते को ताउम्र निभाता हूं, फिर चाहे कुछ भी हो जाए। अगर किसी ने मेरे लिए कुछ किया है और मेरा वर्षों से उससे संपर्क नहीं हो पाया हो फिर भी मैं उस शख्स को याद रखता हूं। मेरे हिसाब से सच्ची मित्रता का भी यही मतलब है कि दोस्त जीवन भर दोस्त ही होते हैं। अगर कुछ मनमुटाव भी हो तो उसे आपस में ही सुलझा लेना चाहिए। आजकल ऐसा होता है कि एक दो बातों से वर्षों पुराना रिश्ता टूट जाता है। मेरे हिसाब से यह अच्छा नहीं है। दोस्ती में बातचीत होती रहनी चाहिए। रिश्ते नाजुक होते हैं और हमें इन्हें बचाकर रखना चाहिए। मेरा मानना है कि दोस्ती सबसे महत्वपूर्ण रिश्ता है। हर रिश्ते की शुरुआत दोस्ती से ही होती है। दोस्ती निस्वार्थ भाव से एक-दूसरे पर विश्वास का भी रिश्ता है। हमें इस रिश्ते का ध्यान रखना चाहिए। फिल्मों की बात करें तो दोस्ती पर बनी फिल्में मुझे बहुत पसंद हैं। इस तरह की फिल्में मैं हमेशा करना चाहूंगा।'

दोस्त याद दिलाते हैं मेरा जन्मदिन : राजीव खंडेलवाल

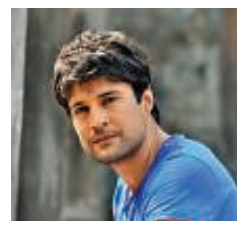

'दोस्त एक किस्म की ताकत होते हैं। जिस तरह से हम भगवान को पूजते हैं, भले ही वह नजर नहीं आते, लेकिन हमारी ताकत होते हैं। बचपन और इंडस्ट्री से मिलाकर मेरे गिने-चुने दोस्त हैं। कई बार मैं दोस्तों से मिल नहीं पाता हूं, लेकिन मुझे पता है कि वे मेरे लिए हमेशा हैं। हम चार महीने बाद भी अगर बात करते हैं, तो हम में से कोई यह नहीं कहता है कि तुम कहां थे, मुझे भूल गए या तुम बड़े आदमी बन गए हो। मेरा स्कूल का एक दोस्त है महिजीत मिश्रा। वह मुझे मैसेज करके हमेशा यही पूछता है कि तुम जिंदा हो? ठीक हो? सब खुश हैं? मैं भी उससे इतना ही पूछता हूं कि सब ठीक है ना? हम एक-दूसरे के लिए भावनात्मक तौर पर मौजूद हैं। मैं जब भी उसे फोन करता हूं, वह किसी भी मीटिंग में हो, फोन उठा लेता है। इस तरह की समझ और रिश्ता केवल दोस्तों के बीच ही हो सकता है। मैं किसी का जन्मदिन याद नहीं रख पाता हूं। मेरे दोस्त ऐसे हैं कि वह मुझे याद दिलाते हैं कि कल मेरा जन्मदिन था। ऐसी दोस्ती है हमारी।'

चिंताजनक

नरकारा वेटलैंड्स सिकुड़ने से श्रीनगर में गहराता जा रहा बाढ़ का खतरा, कश्मीर विवि के एक शोध के अनुसार नरकारा वेटलैंड्स के 37 .12 फीसद क्षेत्र में हो चुका है निर्माण

शहरीकरण की भेंट चढ़े वेटलैंड्स, बाढ़ का खतरा

राज्य ब्यूरो, जम्मू

धरती के स्वर्ग कश्मीर में वेटलैंड्स (आर्द्रभूमि या झील) के लालच का खामियाजा लोगों को भुगतना पड़ रहा है। वेटलैंड्स पर कंक्रीट के जंगल विकसित होने से उनके पानी सोखने की क्षमता कम होती जा रही है, जिससे श्रीनगर में बाढ़ का खतरा गहराता जा रहा है। वर्ष 2014 में विनाशकारी बाढ़ का भी यही कारण था।

शहरों से सटे वेटलैंड्स बारिश होने पर ऊंचाई वाले इलाकों से आने वाले पानी को सोख लेते थे। अधिकतर पानी इन कुदरती जलाशयों में समा जाता था, जिससे बाढ़ के हालात पैदा नहीं होते थे। अब श्रीनगर के बाहरी इलाके का नरकारा वेटलैंड्स पिछले पांच दशकों में सिमट कर रह गया है। कश्मीर विश्वविद्यालय के एक शोध के अनुसार नरकारा वेटलैंड्स के 37.12 फीसद क्षेत्र में निर्माण हो चुका है। वर्ष 1980 के बाद श्रीनगर के बाहरी इलाकों में शहरीकरण की गति तेज हो गई थी।

पर्यावरण व जल विज्ञान पर विपरीत प्रभाव पड़ा: नरकारा वेटलैंड्स में वर्ष 2003 से 2019 के बीच जमीन के इस्तेमाल में बहुत बदलाव हुआ। शोध करने वाले कश्मीर विश्वविद्यालय के भू-विज्ञान विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. इरफान रशीद का कहना है कि हिमालय क्षेत्र में वेटलैंड्स और इससे सटे इलाकों में निर्माण से पर्यावरण व जल विज्ञान पर विपरीत प्रभाव पड़ा है। वेटलैंड्स बाढ़ से बचाव के कुदरती साधन थे।

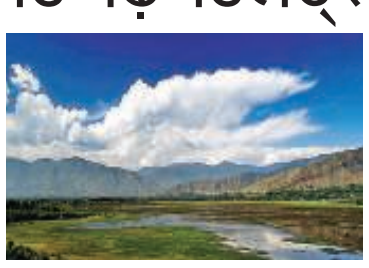

2014 में आई थी कश्मीर में भीषण बाढ़। प्रतीकात्मक

नरकारा के आसपास इलाके में कृषि भूमि 78 फीसद कम हो गई: शहरीकरण की दौड़ में वेटलैंड्स के साथ कृषि भूमि भी तेजी से कम हो रही है। नरकारा के आसपास के इलाके में कृषि भूमि पहले के मुकाबले 78 फीसद कम हो गई है। वर्ष 1965 में इस इलाके में 22.63 वर्ग किलोमीटर भूमि कृषि के अधीन थी। वर्ष 2016 में यह कम होकर पांच वर्ग किलोमीटर तक सीमित हो गई है। ऐसा तेज निर्माण के कारण हुआ है। शहरीकरण के कारण पांच दशकों में निर्माणाधीन भूमि में 28 गुना वृद्धि दर्ज हुई है।

सिकुड़ गया वेटलैंड्स बरसात के पानी को सोख नहीं पाया था: शोधकर्ताओं ने हाई रिजोल्यूशन सेटेलाइट डाटा से वेटलैंड्स में पिछले दशकों में हुए बदलाव को रिकॉर्ड किया है। इसकी पुष्टि जमीनी सर्वे से भी की गई है। इस दौरान भूमि के इस्तेमाल में बदलाव के विपरीत प्रभाव और भूमि कटाव का सर्वे किया गया।

वर्ष 1965 में नरकारा वेटलैंड्स और आसपास से 106 टन मिट्टी पानी के साथ बही थी। वर्ष 2016 में पानी के साथ बहने वाली मिट्टी कम होकर 62 टन हो गई। क्षेत्र में खाली जमीन व कृषि भूमि पर निर्माण के कारण भूमि कटाव बहुत कम हो गया। सिकुड़ गया वेटलैंड्स बरसात के पानी को सोख नहीं पाया और वर्ष 2014 की विनाशकारी बाढ़ में पानी श्रीनगर शहर में तीन महीने तक रहा।

कारगर नीति न होने से कंक्रीट का जंगल बनता जा रहा: डॉ. इरफान रशीद का कहना है कि वेटलैंड्स के संरक्षण के लिए कोई कारगर नीति न होने के कारण ही उनकी जमीन पर कंक्रीट का जंगल बनता जा रहा है। वेटलैंड्स रूस और मध्य एशिया से सर्दियों में पलायन कर आने वाली परिंदों की प्रजातियों का घर भी है।

सच्ची दोस्ती फिल्मी नहीं होती है : रिचा चड्ढा

'दोस्ती आपको अपने दोस्त के प्रति ईमानदार रहने के काबिल बनाती है। दोस्त ऐसे होने चाहिए कि वे आपको बिना किसी डर के यह कह सकें कि उन्हें आपकी फिल्म नहीं पसंद आई या तुमने अपना वजन बढ़ा लिया है। सच्चे दोस्त बिना किसी जलन के अपने दोस्त की सफलता का उत्सव मनाते हैं। जब मैं 'गैंग्स ऑफ वासेपुर' के बाद सफल हुई थी, तब मेरे दोस्तों ने मेरा साथ छोड़ दिया था। वे मेरे पैसे कमाने और मेरी प्रसिद्धि के साथ डील नहीं कर पाए। जबकि उन्होंने मेरा संघर्ष देखा है। कई लोग हैं जो दिल के करीब हैं।

यह रिश्ता बनाए रखना बहुत जरूरी : कृति सैनन

'फ्रेंडशिप डे के दिन फ्रेंडशिप बैंड और हाथ से लिखे कार्ड एक-दूसरे को देने जैसी कई यादें मेरे जेहन में ताजा हैं। आज भले ही मैं अपनी फिल्मों के चलते काफी व्यस्त हूं, लेकिन मेरा मानना है कि जीवन के व्यस्ततम दिनों में भी दोस्ती बनाए रखना बहुत महत्वपूर्ण है। मैं खुश हूं कि मेरे पास हमेशा मेरा साथ देने वाले कुछ अच्छे दोस्त हैं। स्कूल के कुछ दोस्त तो ऐसे हैं, जो अब भी मेरे काफी करीब हैं। उनसे महीनों तक बात नहीं हो पाती, पर इससे हमारे रिश्तों में कोई दरार नहीं आती। मैं कभी भी फोन उठाकर उनसे बात और चैट कर सकती हूं। कॉलेज के दिनों से ही हमारी दोस्ती नहीं बदली है। यह आगे भी कायम रहेगी।'